राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

पटना और रांची से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक : 206 पटना (बिहार) बुधवार, 28 मई 2025 पेज - 12 मूल्य: 1 R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

एक नजर

दो तिहाई विधायक अगले विधानसभा चुनाव में जीत नहीं पाएंगे :प्रशांत किशोर

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

पटनाःजन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने आज 'बिहार बदलाव यात्रा' के तहत सिवान के ज़िरादेई प्रखंड में जनसभा को संबोधित किया। जनसभा के बाद प्रशांत किशोर ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बड़ा दावा करते हुए कहा कि अगले विधानसभा चुनाव में वर्तमान विधायकों में से दो- तिहाई विधायक अपनी सीट गंवाने वाले हैं, चाहे वो किसी भी पार्टी के हों।

उन्होंने कहा कि बिहार की जनता भ्रष्टाचार से परेशान है, उन्हें पता है कि उनके विधायकों ने उनके लिए कुछ नहीं किया है। बिहार की जनता अब बदलाव के मूड में है। इसलिए अब 4 महीने बाद बिहार में बदलाव दिखेगा, बिहार में नई व्यवस्था देखने को मिलेगी। इसबार जन सुराज बिहार की जनता को राजा बनाएगी।

इसके साथ ही प्रशांत किशोर ने बिहार सरकार के मंत्री मंगल पांडे और अशोक चौधरी पर हमला बोलते हुए कहा कि वे पिछले 3 साल से बिहार के गांव-गांव घूम रहे हैं और वह भी बिना किसी पुलिसकर्मी के। इसलिए वे किसी ऋक्ष या कानूनी नोटिस से नहीं डरते। वे बिहार को लूटने वाले नेताओं के खिलाफ बोलते रहेंगे। बिहार की जनता जानती है कि कौन उगाई मंत्री है, कौन मंत्री कॉटन-बैंडेज में कमीशन ले रहा है। उन्होंने कहा कि वे किसी से नहीं डरते।

शिक्षा विभाग का एक भ्रष्ट सरकारी सेवक 50 हजार रिश्वत लेते गिरफ्तार

क्राइम संवाददाता द्वारा

पटनाः: शिक्षा विभाग के अधिकारी बच्चों की पढ़ाई से अधिक रिश्वत कमाने के लिए मिहनत कर रहे. आज विशेष निगरानी इकाई ने एक रिश्वतखोर सरकारी सेवक को रंगे हाथ गिरफ्तार किया है. जहानाबाद जिला शिक्षा पदाधिकारी के सहायक को पचास हजार रू रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया है.

विशेष निगरानी इकाई ने मंगलवार की शाम एक बड़ी कार्रवाई करते हुए सहायक, जिला शिक्षा पदाधिकारी जहानाबाद, लक्ष्मण यादव को अपनी गिरफ्त में लिया है. सहायक, जिला शिक्षा पदाधिकारी लक्ष्मण यादव शिक्षा विभाग के कर्मचारी कौशल किशोर से 50000 की रिश्वत मांग रहे थे. परिवादी कौशल किशोर ने विशेष निगरानी इकाई में यह शिकायत दर्ज कराई थी.

विशेष निगरानी इकाई की तरफ से बताया गया है कि आरोपी ने रिश्वत की राशि वेतन जीपीएफ और पेंशन स्वीकृत करने के लिए ले रहा था. विशेष निगरानी इकाई ने जाल बिछाकर घूसखोर अधिकारी को गिरफ्तार कर लिया.

देश की पहली महिला सीजेआई बनेंगी जस्टिस बी वी नागरत्ना

नई दिल्ली

]जस्टिस बी वी नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम में शामिल होने वाली पहली महिला जज बन गई हैं। 23 मई को जस्टिस अभय श्रीनिवास ओका के रिटायरमेंट के चलते 25 मई को जस्टिस नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट की 5वीं सबसे सीनियर जज बन गईं। सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम में 5 सबसे सीनियर जज ही रहते हैं, जिसमें चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया भी शामिल होते हैं।

सीजेआई की नियुक्ति वरिष्ठता के आधार पर होती है। ऐसे में बी वी नागरत्ना 11 सितंबर 2027 को भारत की 50वीं मुख्य न्यायाधीश बनेंगी। वो इस पद पर पहुंचने वाली पहली महिला होंगी।

क्या तेजप्रताप यादव ने अनुष्का से शादी कर ली है? भाई आकाश यादव ने बताई सच्चाई

बिशेष संवाददाता द्वारा

पटनाः आरजेडी विधायक तेजप्रताप यादव की तस्वीर जिस अनुष्का नाम की लड़की के साथ लगातार सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, अब उनका भाई मीडिया के सामने आया है. कभी आरजेडी से जुड़े अनुष्का के भाई आकाश यादव ने चुप्पी तोड़ते हुए पहली बार इस प्रकरण पर अपनी बात रखी है. उन्होंने कहा कि ये मुगल-ए-आजम का जमाना नहीं है कि फेसबुक पोस्ट के कारण किसी को पार्टी और परिवार से बेदखर कर दिया जाए. उन्होंने आरजेडी अध्यक्ष लालू यादव ने अपील की है कि मामले को आगे बढ़ने से रोका जाए.

अनुष्का के भाई ने तोड़ी चुप्पीः आकाश यादव ने कैमरे के सामने आकर तेजप्रताप और अनुष्का के रिश्ते पर मुहर लगाता हुए कहा कि सोशल मीडिया के माध्यम से हमें भी कुछ पता चला है. हमने भी बहुत कुछ देखा है. हम तो आदरणीय लालू यादव और आदरणीय तेजस्वी यादव से अनुरोध करेंगे कि यह पारिवारिक मामला है, आपस में मिल-बैठकर इसका हल निकालने का प्रयास करें.

तेजप्रताप के समर्थन में आए अनुष्का के भाईः आरजेडी से तेजप्रताप यादव के निष्कासन पर भी आकाश यादव ने सवाल उठाए हैं. उन्होंने कहा कि यह उचित नहीं है, क्योंकि तेज प्रताप यादव ने कोई

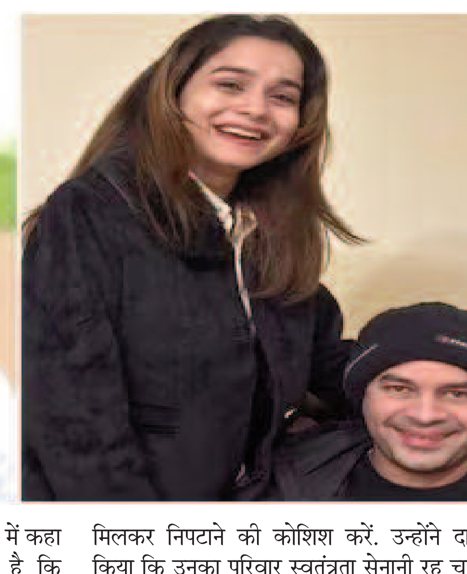

दुष्कर्म नहीं किया है. उन्होंने तंज भरे लहजे में कहा कि यह मुगल-ए-आजम का दौर नहीं है कि फेसबुक पोस्ट से किसी को पार्टी और परिवार से निकाल दिया जाए. हालांकि तेजप्रताप से अनुष्का की शादी के सवाल को उन्होंने टाल दिया.

लालू-तेजस्वी से किया निवेदनः आकाश ने कहा कि जो लोग हमारे परिवार के बारे में कुछ से कुछ बोल रहे हैं, उन्हें यह बात समझना चाहिए उन्होंने अपने बयान में लालू यादव और तेजस्वी यादव से भी गुजारिश की है कि इस मामले को मिलकर निपटाने की कोशिश करें. उन्होंने दावा किया कि उनका परिवार स्वतंत्रता सेनानी रह चुका है. उनके नाना की मूर्ति अभी भी पटना के बिदुपुर बाजार में लगी हुई है.

₹सोशल मीडिया के माध्यम से हमें बहुत कुछ पता चला है. हम सब कुछ देख रहे हैं, फिर लड़का-लड़की जो बयान देगा, जो रहेगा उसके आधार पर ही कुछ कहा जा सकता है. मैं तो आदरणीय लालू यादव जी और तेजस्वी यादव जी से आग्रह करूंगा कि मामले को आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास करेंगे और मिल-बैठकर इसका हल निकालें.₹- आकाश यादव, अनुष्का यादव के भाई

तेजप्रताप को लालू ने निकालाः अनुष्का के साथ तेजप्रताप की तस्वीर और वीडियो वायरल होने के बाद लालू यादव ने अपने बड़े बेटे को आरजेडी से 6 सालों के लिए निष्कासित कर दिया है. पार्टी के साथ-साथ उनको परिवार से भी बेदखल कर दिया है. तेजस्वी यादव, रोहिणी आचार्य और मीसा भारती ने भी लालू के फैसले को सही ठहराया है.

अनुष्का यादव कौन हैं :अनुष्का यादव को लेकर ज्यादा जानकारी पब्लिक में नहीं है। तेज प्रताप की पोस्ट से पहले उनका नाम कभी मीडिया में सामने नहीं आया था। बताया जा रहा है कि अनुष्का बिहार की रहने वाली हैं और तेज प्रताप से उनकी मुलाकात करीब 10 साल पहले हुई थी। अनुष्का की पढ़ाई-लिखाई और करियर को लेकर ज्यादा कुछ सामने नहीं आया है। तेज प्रताप ने फेसबुक पोस्ट में उन्हें अपनी जिंदगी की अहम हिस्सा बताया था।

अइढ के एक रिपोर्ट के मुताबिक, अनुष्का तेज प्रताप के करीबी दोस्त की बहन हैं। रिपोर्ट ये भी कहती है कि वो दोस्त अब फखऊ छोड़कर किसी और पार्टी में शामिल हो गया है।

तेज प्रताप यादव की शादी 2018 में ऐश्वर्या राय से हुई थी, जो बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री दरोगा राय की पोती हैं। ये शादी काफी हाई-प्रोफाइल रही थी। लेकिन शादी के कुछ महीनों बाद ही ऐश्वर्या ससुराल छोड़कर चली गईं और तेज प्रताप और उनके परिवार पर गंभीर आरोप लगाए।

तब से दोनों के बीच लीगल लड़ाई चल रही है, जिसमें आरोप-प्रत्यारोप का सिलसिला जारी है। इस समय भी उनका तलाक केस पटना फैमिली कोर्ट में लंबित है।

तेज प्रताप यादव की वायरल पोस्ट, जो अब डिलीट हो चुकी है, उसमें लिखा था,'मैं तेज प्रताप यादव हूं और मेरे साथ इस तस्वीर में जो लड़की है, उसका नाम अनुष्का यादव है। हम दोनों पिछले 12 सालों से एक-दूसरे को जानते हैं और प्यार करते हैं। मैं बहुत समय से यह बात आप सबसे शेयर करना चाहता था लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी। आज इस पोस्ट के जरिए मैं अपना दिल खोलकर आप सभी से बात कर रहा हूं। उम्मीद है आप मुझे समझेंगे।'

तेज प्रताप यादव की वायरल पोस्ट में हुए इस खुलासे ने सबको चौंका दिया, खासकर इसलिए क्योंकि तेज प्रताप पहले से शादीशुदा हैं और उनका तलाक का केस भी चल रहा है। पोस्ट के बाद हुए हंगामे में तेज प्रताप की ह्यसोशल मीडिया अकाउंट हैकिंगह्ल वाली सफाई भी विवाद को नहीं थाम सकी। इसके बाद लालू प्रसाद यादव ने ह्यअनुशासनहीनताह्ल और ह्यनैतिक मूल्यों की अनदेखी का हवाला देते हुए तेज प्रताप यादव को पार्टी से बाहर और परिवार से बेदखल कर दिया है।

फिर डरा रहा कोरोना, महाराष्ट्र में हुई सबसे ज्यादा मौतें, देश में 1045 हुए एक्टिव केस

नई दिल्ली,

देश में बढ़ते कोरोना के मामलों ने एक बार फिर डराना शुरू कर दिया है। लोगों के मन डर है कि कहीं लॉकडाउन की स्थिति न बन जाए। हालांकि फिलहाल ऐसी स्थिति नहीं है फिर भी जिस गति से कोरोना के केस आ रहे है वो डराते दिखाई दे रहे हैं। देश में कोरोना वायरस के मामलों की संख्या 1045 हो गई है। सबसे ज्यादा 430 एक्टिव केस केरल में हैं। महाराष्ट्र में 210, दिल्ली में 104 और गुजरात में 83 केस हैं। कर्नाटक के 80 केसों में से सिर्फ 73 बेंगलुरु में हैं। वहीं, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक में कुल 10 मरीजों की मौत हो चुकी है। इनमें से आठ की मौत एक हफ्ते के भीतर हुई है। कोरोना से सबसे ज्यादा पांच मौतें महाराष्ट्र में हुई हैं। ठाणे में सोमवार को एक महिला की मौत हुई।स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के मुताबिक पिछले एक हफ्ते में 787 नए मरीज दर्ज किए गए हैं। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के डायरेक्टर डॉ राजीव बहल ने बताया कि अभी तक देश में 4 वैरिएंट मिले हैं। इनमें एलएफ.7, एक्सएफजी, जेएन.1 और एनबी.1.8.1 वैरिएंट शामिल हैं।

इससे पहले 17 मई को कर्नाटक के बेंगलुरु में 84 साल के बुजुर्ग की मौत हुई थी। स्वास्थ्य विभाग ने बताया था कि बुजुर्ग की मौत मल्टी ऑर्गन फेल्योर की वजह से हुई थी। 24 मई को उनकी कोविड रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। केरल में दो लोगों की कोविड से मौत हुई है। भारत में मिले कोविड-19 के 4 नए वैरिएंट भारत के कई राज्यों में कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी के बीच देश में चार नए वैरिएंट मिले हैं। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने भी इन्हें चिंताजनक नहीं माना है। हालांकि, निगरानी में रखे गए वैरिएंट के रूप में कैटेगराइज किया है। टेस्टिंग में आधे से ज्यादा सैंपल में यह वैरिएंट मिलता है।

24 घंटे में कोरोना से 3 की मौत

24 घंटे में कोरोना से 3 मौतें जयपुर में सोमवार को कोरोना के दो मरीजों की मौत हो गई। इनमें से एक रेलवे स्टेशन पर मृत मिला था। उसकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। दूसरी मौत प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती 26 साल के युवक की हुई। उसे पहले से ही टीबी की बीमारी थी।

माथे पर बड़ा सा तिलक और कलाई पर कलावा क्यों बांधते हैं चिराग पासवान !

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

पटनाः बिहार विधानसभा चुनावों की तैयारियों के बीच केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री और हाजीपुर से सांसद चिराग पासवान ने एक निजी चैनल को दिए इंटरव्यू में अपने जीवन के आध्यात्मिक पहलुओं को साझा किया। उन्होंने बताया कि माथे पर तिलक और कलाई पर कलावा बांधने के पीछे आस्था और अनुभवों की गहरी भूमिका है। चिराग पासवान ने बताया कि वे हमेशा से एक आध्यात्मिक व्यक्ति रहे हैं, लेकिन पिछले चार-पांच वर्षों में उनका झुकाव धार्मिकता की ओर और गहराया है। उन्होंने कहा कि 'पहले मैं आध्यात्मिक व्यक्ति था, लेकिन अब पूजा-पाठ और धार्मिक कर्मकांडों में ज्यादा सक्रिय हो गया हूं।'

अपने जीवन के कठिन दौर को याद करते हुए चिराग पासवान ने कहा कि जब उनके परिवार और पार्टी में टूट की स्थिति आई, तब आस्था ने उन्हें धैर्य और संयम दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि 'अगर मैंने उस वक्त धैर्य नहीं रखा होता, तो चीजें और ज्यादा बिगड़ जातीं।'

चिराग पासवान ने यह भी बताया कि वे नियमित रूप से ध्यान लगाते हैं और मंत्रों का जाप करते हैं। इससे उन्हें न केवल अवसाद से लड़ने में मदद मिलती है, बल्कि सफलता के समय भी अहंकार से बचने की शक्ति मिलती है। उनके अनुसार, 'सब कुछ अस्थायी है- पद, प्रतिष्ठा, सत्ता, यह समझ मुझे संतुलित रखती है।'केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि धार्मिकता की ओर उनके बढ़ते झुकाव की शुरूआत उस समय हुई जब लोक जनशक्ति पार्टी और पारिवारिक मोर्चे पर संकट आया। उन्होंने कहा कि '24 घंटे उसी बारे में सोचते रहते थे, तब महसूस हुआ कि दिमाग को शांत करना जरूरी है। पूजा और मंत्रों ने मुझे वो शांति दी।'चिराग ने स्पष्ट किया कि पूजा-पाठ उनके लिए कोई दिखावा नहीं है, बल्कि अब यह उनके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है। उन्होंने बताया कि पार्टी और परिवार के विघटन के बाद उनकी आस्था और भी मजबूत हुई। उन्होंने ईश्वर का धन्यवाद करते हुए कहा, 'वहीं से इसकी शुरूआत हुई और तब से यह यात्रा लगातार आगे बढ़ रही है।'

शिक्षा विभाग ने एक डीईओ को किया सस्पेंड, भाजपा विधायक पवन जायसवाल की शिकायत पर हुई थी जांच

क्राइम संवाददाता द्वारा

मोतिहारी : शिक्षा विभाग ने पटना के जिला शिक्षा पदाधिकारी को सस्पेंड कर दिया है. इस संबंध में शिक्षा विभाग के निदेशक (प्रशासन) ने पत्र जारी कर दिया है. इन पर कई गंभीर आरोप थे. मोतिहारी के जिलाधिकारी की रिपोर्ट पर पूर्वी चंपारण के तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी को सस्पेंड किया गया है. बता दें, ढाका के भाजपा विधायक पवन जायसवाल ने बड़े फजीर्वाड़े का खुलासा किया था. जिला बीस सूत्री की बैठक में भी सत्ताधारी दल के विधायक पवन जायसवाल ने बेंच-डेस्क खरीद, स्कूल में मरम्मति व अन्य कार्यों में करोड़ों के घोटाले की शिकायत की थी. इसके बाद शिक्षा मंत्री ने जांच बिठाई थी.

मोतिहारी में जिला शिक्षा पदाधिकारी रहते संजय कुमार पर गंभीर आरोप लगे थे . उप विकास आयुक्त ने जांच की और 9 अप्रैल 2025 को अपनी जांच रिपोर्ट जिला पदाधिकारी पूर्वी चंपारण को दिया. जांच रिपोर्ट में तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार के खिलाफ कई गंभीर आरोप प्रमामित पाये गए।

जांच में बेंच-डेस्क की गुणवत्ता असंतोष पाए जाने, स्कूल मरम्मति कार्य से संबंधित प्राक्कलन नहीं पाया जाना. अभिलेख में त्रुटि पूर्ण कायार्देश पाया जाना, बिना हस्ताक्षर कोटेशन जैसी लापरवाही ,संचिका का लापरवाही पूर्ण तरीके से संधारण करना, कार्य में शिथिलता बरतने जैसे आरोप प्रमाणित पाए गए. इन आरोपों को लेकर तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी मोतिहारी वर्तमान में पटना के जिला शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार को निलंबित किया गया है. निलंबन अवधि में संजय कुमार का मुख्यालय क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक कार्यालय तिरहुत प्रमंडल निर्धारित किया गया है. शिक्षा विभाग के विशेष सचिव सह निदेशक प्रशासन सुबोध कुमार चौधरी ने यह आदेश जारी किया है.

ऑपरेशन सिंदूर कैसे बीएसएफ की महिला विंग ने तोड़ दी पाकिस्तान की रीढ़ की हडडी, घुटनों पर आया आंतकी मुल्क

नई दिल्ली,

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने पुष्टि की कि अखनूर इलाके के सामने सियालकोट जिले में पाकिस्तानी सेना द्वारा बिना उकसावे के की गई गोलीबारी के बाद एक आतंकवादी लांचपैड को ह्लपूरी तरह से नष्टह्ल किया गया था। बीएसएफ अधिकारियों के अनुसार, लूनी में लांचपैड, जिसका कथित तौर पर घुसपैठ और सीमा पार हमलों को सुविधाजनक बनाने के लिए इस्तेमाल होता था, एक सटीक हमले में नष्ट किया गया। यह जवाबी कार्रवाई तब हुई, जब पाकिस्तानी सेना ने जम्मू में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बीएसएफ चौकियों पर बिना उकसावे के गोलीबारी की। इस कामयाबी के बारे में आधिकारिक बयान जारी कर-के बताया गया है कि कैसे बीएसएफ ने ऑपरेशन सिंदूर के अंदर ही पाकिस्तान को कमजोर कर दिया क्योंकि बीएसएफ से पाकिस्तान की रीढ़ लूनी लांच पैड को तबाह कर दिया। ऑपरेशन सिंदूर पर बीएसएफ के आईजी जम्मू शशांक आनंद ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान बीएसएफ की महिला कर्मियों ने अग्रिम ड्यूटी चौकियों पर लड़ाई लड़ी। हमारी बहादुर महिला कर्मियों, सहायक कमांडेंट नेहा भंडारी ने एक अग्रिम चौकी की कमान संभाली, कांस्टेबल मंजीत कौर, कांस्टेबल मलकीत कौर, कांस्टेबल ज्योति, कांस्टेबल संपा और कांस्टेबल स्वप्ना और अन्य ने ऑपरेशन के दौरान पाकिस्तान के खिलाफ अग्रिम चौकियों पर लड़ाई लड़ी।

इस दौरान बीएसएफ के सब-इंस्पेक्टर मोहम्मद इम्तियाज, कांस्टेबल दीपक कुमार और भारतीय सेना के नायक सुनील कुमार को खो दिया। हम अपने दो पोस्ट का नाम अपने खोए हुए कर्मियों के नाम पर रखने का प्रस्ताव रखते हैं, और एक पोस्ट का नाम सिंदूर रखने का प्रस्ताव रखते हैं। बीएसएफ डीआईजी चितर पाल कहते हैं, 9 मई को पाकिस्तान ने हमारी कई चौकियों को निशाना बनाया। सबसे पहले उन्होंने फ्लैट ट्रैजेक्टरी हथियार और मोर्टार से हमारी चौकियों को निशाना बनाया। उन्होंने हमारे एक गांव अब्दुलियान को भी निशाना बनाया। हमारे बीएसएफ जवानों ने उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया। जब उन्होंने फायरिंग कम की तब उन्होंने ड्रोन की गतिविधि बढ़ा दी। जवाब में बीएसएफ ने पाकिस्तानी आतंकी ठिकानों मस्तपुर को निशाना बनाकर तबाह कर दिया। बीएसएफ डीआईजी वरिंदर दत्ता बताते हैं, 8 मई को खबर मिली थी कि सीमा पार पाकिस्तान के लूनी आतंकी ठिकानों पर 18 से 20 आतंकी मौजूद हैं और वे यहां घुसपैठ कर सकते हैं। लेकिन तभी बीएसएफ ने लूनी आंतकी ठीकने पर हमला करके उस तबाह कर दिया।

अलीनगर के बीजेपी विधायक की सदस्यता पर मंडराया खतरा, कोर्ट ने सुनाई 2 साल की सजा

क्राइम संवाददाता द्वारा

दरभंगाः अलीनगर विधानसभा सीट से बीजेपी विधायक मिश्री लाल यादव को बड़ा झटका लगा है. उनको दरभंगा की एमपी-एमएलए कोर्ट ने दोषी पाते हुए दो साल की सजा सुनाई है. इस फैसले से विधायक की विधायकी पर भी खतरा मंडराने लगा है. मिश्री लाल यादव को दो साल की सजाः एडीजे-3 सुमन कुमार दिवाकर ने वादी उमेश मिश्रा की दायर याचिका (506) पर फैसला सुनाया हुए विधायक को 2 साल की सजा सुनाई है. इससे पहले उनको तीन महीने की सजा और 500 रुपये का जुमार्ना लगाया गया था. अब इस सजा को बढ़ाकर अदालत ने दो साल की सजा और एक लाख रुपये का जुमार्ना लगाया है. भारी सुरक्षा के बीच अलीनगर विधायक मिश्री लाल यादव को जेल भेज दिया गया है.क्या बोले बीजेपी विधायक?ः वहीं, सजा मिलने के बाद अदालत से बाहर आये मिश्री लाल यादव ने कहा कि वह कोर्ट के फैसले का सम्मान करते हैं लेकिन वह इस निर्णय के खिलाफ पटना उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएंगे. उन्होंने कहा कि ऊपरी अदालत से उनको जरूर इंसाफ मिलेगा.₹मुझे न्यायालय के द्वारा 2 साल की सजा तथा एक लाख रुपया का आर्थिक दंड का सजा सुनाया गया है. मैं न्यायालय के आदेश का सम्मान करता हूं. मैं पटना उच्च न्यायालय में न्याय के लिए अपील करूंगा. मुझे उच्च न्यायालय पर पूरा भरोसा है, मुझे निश्चित रूप से न्याय मिलेगा.₹- मिश्री लाल यादव, बीजेपी विधायक, अलीनगर 'अब न्याय मिला मुझे': कोर्ट के फैसले पर वादी उमेश मिश्र ने खुशी जाहिर की है. उन्होंने कहा, 'जो कर रहें हैं, भगवान कर रहे हैं. आज हमें अदालत से न्याय मिला है. इससे पहले भी न्याय मिला था लेकिन उस सजा से हम खुश नहीं थे तो अपील में गए थे.'विधायकी पर मंडराया खतराः नियम के तहत अगर सांसदों और विधायकों को किसी भी मामले में 2 साल से अधिक की सजा होती है तो उनकी सदस्यता स्वतः ही रद्द हो जाती है. हालांकि अगर ऊपरी अदालत से फैसला उनके पक्ष में आता है तो सदस्यता बहाल हो सकती है.

बीजेपी विधायक मिश्री लाल यादव को कोर्ट से 2 साल की सजा मिली है, ऐसे में उनकी सदस्यता खत्म हो सकती है.क्या है मामला?ः दरअसल, समैला निवासी उमेश मिश्र ने 29 जनवरी 2019 की आपराधिक घटना को लेकर 30 जनवरी को प्राथमिकी दर्ज करायी थी. जिसमें उन्होंने घेरकर फरसे से वार करने की शिकायत की थी. साथ ही लूटपाट का भी आरोप लगाया था. इस मामले में एमपी/एमएलए की अदालत ने पहले मिश्री लाल यादव और गोसाईं टोल पचाढ़ी निवासी सुरेश यादव को दोषी करार देते हुए तीन महीने की सजा सुनाई थी लेकिन वादी की अपील के बाद आज सजा को बढ़ाकर 2 साल कर दिया गया है.

संक्षिप्त समाचार

उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के प्रस्तावों को स्वीकृति

साहिबगंजः उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में जिला स्थापना समिति, अनुकम्पा समिति एवं जिला शिक्षा स्थापना समिति की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में जिले के विभिन्न विभागों से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर चर्चा की गई और निर्णय लिया गया ।बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन एवं विकास कार्यों से जुड़े विभागों के कुल 33 मामलों को उपायुक्त के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इनमें अनुकंपा के 16 मामले, स्थापना विभागीय कार्यवाही से संबंधित 07 मामले तथा स्थानांतरण एवं अनुशासनात्मक कार्यवाही से जुड़े 10 मामले शामिल थे। उपायुक्त ने सभी प्रस्तावों पर गहन विचार-विमर्श करते हुए मामलों को स्वीकृति प्रदान की। साथ ही, संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया ।बैठक में उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, अपर समाहर्ता गौतम भगत, सिविल सर्जन डॉ. प्रवीण कुमार संथालिया, अनुमंडल पदाधिकारी, साहिबगंज अमर जॉन आईन्द, जिला आपूर्ति पदाधिकारी झुनू कुमार मिश्रा, जिला शिक्षा अधीक्षक कुमार हर्ष, जिला शिक्षा पदाधिकारी दुगानंद झा, जिला सहकारिता पदाधिकारी महादेव मुर्मू एवं जिला पंचायती राज पदाधिकारी अनिल कुमार समेत अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर भगाने के मामले में युवक को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

मंडरोः मिजाचौकी थाना की पुलिस ने एक नाबालिग लड़के के अपहरण के मामले में एक युवक को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल। मिली जानकारी के अनुसार मिजाचौकी उत्तरी महादेववरन मोहल्ले से पिंटू मंडल नामक व्यक्ति ने एक नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर घर से ले भागा। जिसके बाद लड़की के परिजन पूरी तरह परेशान दिखे। मामले को लेकर मिजाचौकी थाना में आवेदन देकर शिकायत किया गया। जिसके बाद मिर्जाचौकी थाना प्रभारी रूपेश कुमार यादव के नेतृत्व में थाना के एसआई महेंद्र सिंह के साथ मिलकर प्लान तैयार कर लड़का लड़की को बरामद किया गया। मिजाचौकी थाना प्रभारी रूपेश कुमार यादव की सक्रियता के कारण लड़का लड़की को बरामद किया गया। वही मामले को लेकर 33/25 कांड संख्या दर्ज कर थाना में पूछताछ के बाद युवक को भेजा गया जेल। वही नाबालिग लड़की को साहिबगंज कोर्ट भेजा गया। इस दौरान लड़की के परिजन भी साहिबगंज कोर्ट में मौजूद थे।

डीपीआरओ ने कुंजबोना पंचायत भवन का किया निरीक्षण

रिपोर्ट - अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ को जिला पंचायत राज पदाधिकारी, पाकुड़ प्रीतिलता मुर्मू के द्वारा लिट्टीपाड़ा प्रखंड अंतर्गत कुंजबोना पंचायत सचिवालय का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पंचायत सचिवालय खुला पाया गया एवं संबन्धित मुखिया, पंचायत सचिव, जेई, भीएलई उपस्थित पाए गए। जिला पंचायत राज पदाधिकारी मुर्मू के द्वारा पंचायत सचिवालय में उपलब्ध पंजियों, पंचायत सुदृढ़ीकरण, पंचायत ज्ञान केंद्र का उपयोगिता प्रमाणपत्र, किए जा रहे कार्यों आदि का निरीक्षण किया गया। उन्होंने भस्मक, हैंड वाश यूनिट, सेग्रीगेसन बीन, वॉटर प्यूरीफायर इत्यादि योजनाओं का भी निरीक्षण किया। साथ ही पंचायत सचिवालय में अधिष्ठापित पंचायत ज्ञान केंद्र, जो कि संचालित नहीं पाया गया। उसके संचालन के संबंध में मुखिया एवं पंचायत सचिव को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि पंचायत के सभी लोगों को पढ़ने हेतु प्रेरित करें। पंचायत के लोग ज्ञान केन्द्र में जाकर प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारियां कर सकेंगे। मौके पर मुखिया, जेई, पंचायत सचिव एवं भीएलई उपस्थित थे।

होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल नारो, मांडर के बच्चों ने मैट्रिक रिजल्ट में लहराया परचम

होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल नारो, मांडर की छात्र एवं छात्राओं ने दसवीं की मैट्रिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किए

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - मंगलवार को मैट्रिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया जिसमें विद्यालय की छात्रा शबाना परवीन 442 अंक (88.8%) लाकर विद्यालय टॉपर बनी । वही नेहा परवीन 404 अंक (80.8%) लाकर दूसरा स्थान प्राप्त की और प्रदीप उरांव 395 अंक (79%) लाकर तीसरा स्थान प्राप्त किया । विद्यालय से कुल 34 छात्र-छात्राओं ने मैट्रिक परीक्षा में शामिल हुए थे । जिसमें 31 छात्र-छात्राओं ने प्रथम श्रेणी और 3 छात्र-छात्राओं ने द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए । विद्यालय के निदेशक आलोक विपिन टोप्पो और प्रधानाचार्य आलोक कुमार तिवारी एवं सभी शिक्षकों ने बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए सभी को शुभकामनाएं दिए। होली चाइल्ड पब्लिक स्कूल नारो मांडर

सड़क दुर्घटना में तीन लोग घायल

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - मांडर में एनएच 75 में मंगलवार को दो अलग सड़क दुर्घटना में तीन लोग घायल हो गये. घायलों में गुड़गुड़जाड़ी निवासी अचल सिंह 55 वर्ष खदिया उरांव 40 वर्ष व रांची के रातू रोड मेट्रो गली के विष्णु गुप्ता 40 वर्ष शामिल हैं. अचल सिंह को मांडर रेफरल अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद रिम्स रेफर किया गया है. जानकारी के अनुसार पहली घटना दिन के करीब 11 बजे मुड़मा पुल के निकट हुई जहां ब्राम्बे से मांडर की ओर आ रहे एक ऑटो के पलट जाने से उसमें सवार अचल सिंह व खदिया उरांव घायल हो गये. वहीं दिन के करीब बारह बजे बाइक में मांडर से रांची जा रहे बिष्णु गुप्ता मांडर बाजार के निकट खुद ही असंतुलित होकर सड़क पर गिर गये और घायल हो गये!

बाल संरक्षण मुद्दे पर कार्य कर रहे बहुहितधारको के साथ जिला स्तरीय बैठक संपन्न

रिपोर्ट अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ सोमवार को जिला बाल संरक्षण इकाई, पाकुड़ एवं गैर सरकारी संस्था झारखण्ड विकास परिषद, अमड़ापाड़ा के संयुक्त तत्वाधान में बाल संरक्षण मुद्दे पर कार्य कर रहे बहुहितधारको के साथ जिला स्तरीय बैठक जिला बाल संरक्षण इकाई कार्यालय में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम का उद्धघाटन कांति रश्मि, सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा कोषांग,पाकुड, जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी व्यास ठाकुर, जिला बल संरक्षण पदाधिकारी विनय कुमार शर्मा, विधि सह परिवीक्षा पदाधिकारी शमा प्रवीन , संरक्षण पदाधिकारी, संस्थागत देखभाल एवं परियोजना समन्वयक मनोरंजन सिंह द्वारा संयुक्त रुप सें किया गया। कार्यक्रम में सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा कोषांग, पाकुड़ ने कहा कि उपायुक्त के निदेर्शानुसार देखरेख एवं संरक्षण की आवश्यकता की श्रेणी वाले बच्चों की पहचान करना, स्पॉन्सरशिप योजना से लाभान्वित होनेवाले बच्चों की संख्या में बढ़ोतरी करना, चाईल्ड हेल्पलाईन टीम के द्वारा बाल संरक्षण मुद्दे का वृहत प्रचार-प्रसार करना एवं सभी संबद्ध विभागों के साथ नियमित समन्वय बैठक सुनिश्चित करना आवश्यक है। जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी व्यास ठाकुर द्वारा बताया गया कि बाल तस्करी, बाल विवाह एवं बाल श्रम रोकथाम के लिए विभिन्न स्टेकहोल्डर के साथ पाकुड जिले के सभी प्रखण्डों एवं पंचायतों में नियमित जागरुकता अभियान आयोजित किया जाना है। विधि सह परवीक्षा पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि विधि का उल्लंघन करने वालें बच्चों को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, शमा परवीन, संरक्षण पदाधिकारी, संस्थागत देखभाल ने कहा कि पाकुड जिला में लड़कियों के लिए बालिका गृह नही है जिस कारण बच्चियों के पुनर्वास एवं संरक्षण के मामलें में बहुत दिक्कतें आती है । राजेश कुमार मंडल, संरक्षण पदाधिकारी, गैर संस्थागत देखभाल द्वारा स्पॉन्सरशिप एवं फोस्टर योजना के बारें में विस्तृत जानकारी दी गई एवं कहा कि ऐसे बच्चों को चिन्हित कर स्पॉन्सरशिप योजना से जोड़ने की जरुरत है। बच्चों से संबंधित जो भी मामलें आतें है उसें त्वरित तौर पर बाल कल्याण समिति, पाकुड़ के समक्ष प्रस्तुत करें जिससें समय पर बच्चों के सर्वोतम हित को ध्यान रखतें हुए उनको सरकार की सेवाऐं एवं योजनाओं से जोड़ा जा सकें। मौके पर चाइल्ड हेल्प लाईन के परामर्शी अभिजीत चन्द्र ने टॉल फ्री नंबर 1098 के बारे में बताया कि कैसे यह नंबर बच्चों को सुरक्षा दिलाने में मदद करता है। इस कार्यक्रम में श्रम विभाग, चाईल्ड हेल्पलाईन के दिलावर हुसैन, पिरामल फाउन्डेशन के प्रतिनिधि,सी०सी०आ-ई०जे०जे०बी० उड़ान फाउन्डेशन एवं अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद थें। इस कार्यक्रम के आयोजन में झारखण्ड विकास परिषद संस्था के मनोरंजन सिंह एवं मुकेश मुर्मू का सराहणीय योगदान रहा।

जातिगत जनगणना के विरोध में जेएमएम ने किया धरना प्रदर्शन

सरना धर्म कोर्ड लागू करनें की उठी मांग

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर -झारखण्ड मुक्ति मोर्चा जिला कमिटी के द्वारा समाहरणालय गेट के समक्ष जातिगत जनगणना के विरोध में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का कार्यक्रम किया गया ।इस दौरान मौके पर धरना का नेतृत्व जिला अध्यक्ष संजय कुमार शर्मा ने किया ।इस धरना प्रदर्शन में जिला के सभी प्रखंडो से जेएमएम कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में पहुंचे थे ।इस दौरान मौके पर जिला सचिव दिनेश्वर किस्कू,सुरेश शाह,प्रदीप चौधरी,श्रीसिंह,मनोज दास,सुभद्रा यादव,परिमल सिंह,मधुपुर नगर सचिव संजय शर्मा,राहुल चन्द्र वंशी,नंद किशोर दास, साथ विधायक चुन्ना सिंह, अजय नारायण मिश्रा,महिला मोर्चा की नीलम देवी मुख्यरूप से उपस्थित थे ।वहीं मौके पर जिला अध्यक्ष संजय कुमार शर्मा ने कहा कि भाजपानीत केंद्र सरकार द्वारा सरना धर्म कोड/आदिवासी धर्म कोड लागू किये बिना जातिगत जनगणना का पार्टी पुरजोर विरोध करती है ।जरूरत पड़ा और बड़ा आंदोलन होगा ।आज बिना सरना कोर्ड के आदिवासियों की जातिगत गणना नहीं हो सकेगी जो आदिवासी मुलवासी के साथ अन्याय जेएमएम इसे कभी बर्दास्त नहीं करेगा और बिना सरना धर्मकोर्ड पास किए बगैर जातिगत जनगणना निराधार है ।भाजपा आदिवासी विरोधी पार्टी है मौके पर उन्होंने असम और मध्यप्रदेश की घटना का जिक्र भी किया ।केंद्रीय समिति के निर्देश के अनुसार यह कार्यक्रम राज्य के सभी जिला मुख्यालय में किया जा रहा है ।मौके पर उपस्थित सभी नेताओं ने कहा कि केन्द्र सरकार हमारे साथ सौतेला व्यवहार कर रही है ।आदिवासी मूलवासी की जातिगत जनगणना से तब तक नहीं जोड़ा जा सकेगा जब तक आदिवासी सरना कोड लागू नहीं होता है ।वहीं कार्यक्रम के बाद एक प्रतिनिधि मंडल उपायुक्त से मिलकर ज्ञापन सौंपा।

आदर्श ग्रामीण पब्लिक स्कूल टांगर के बच्चों का मैट्रिक रिजल्ट रहा सत प्रतिशत

दिव्य दिनकर संवाददाता

चान्हो - आदर्श ग्रामीण पब्लिक स्कूल टांगर के छात्र छात्राओं ने दसवीं की मैट्रिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किए और रिजल्ट रहा सत प्रतिशत। मंगलवार को मैट्रिक परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया जिसमे आदर्श ग्रामीण पब्लिक स्कूल टांगर की छात्रा फरहाना प्रवीन ने 437 अंक (87.4%) लाकर स्कूल का टॉपर बनी । वही पल्लवी कुमारी 436 अंक (87.2%) लकार दूसरा स्थान और हसीना खातून 429 अंक (85.8%)लाकर तीसरा स्थान प्राप्त की । इस स्कूल से कुल 57 छात्र छात्राओं ने मैट्रिक परीक्षा में सामिल हुवे थे जिसमें 38 छात्र छात्राएं प्रथम श्रेणी से और 19 छात्र छात्राएं द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए स्कूल के निदेशक व प्रधानाध्यापक अमीन अंसारी एवं स्कूल के सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने सभी बच्चों को उनके उज्जवल भविष्य का कामना करते हुए सभी को सुभकनाए दिए।

जन वितरण प्रणाली के दुकानदार की असमय निधन पर संघ ने जताया शोक परिजनों से मिलकर बंधाया ढाढस

संघ को अपूर्णीय क्षति ,सरकार डीलरों की सहायता हेतु उठाए कदम बाबू पाठक

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - मांडर प्रखंड के जनवितरण प्रणाली दुकानदार विक्रेता संघ के सदस्य कैंबो के भुनेश्वर साहू की असमय निधन पर संघ ने शोक जताया एवं उनके अंतिम संस्कार में पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिजनों को इस विपत्ति में ढाढस बंधाया एवं साथ खड़े रहने की बात कही। मृतक भुनेश्वर साहू काफी दिनों से अस्वस्थ थे वे अपने पीछे दो पुत्र सहित पूरा परिवार छोड़ कर देवलोकगमन कर गए। मौके पर मांडर प्रखंड डीलर संघ के मुख्य संरक्षक,संयोजक एवं जिला मंत्री अमिताभ उर्फ बाबू पाठक ने कहा की डीलर अपने जीवन काल में दायित्व का निर्वहन करते हुए जन वितरण प्रणाली में पूरी तन्मयता से जनता की सेवा का कार्य करते हैं परंतु निधन के बाद सरकार की ओर से उनका कोई सुध नहीं लिया जाता है इसलिए वह मांग करते हैं कि जन वितरण प्रणाली किस जुड़े दुकानदारों का इंश्योरेंस कराया जाए साथ-साथ उनकी समय मृत्यु पर परिवार को सरकार की ओर से सहायता उपलब्ध कराई जाए। मौके पर मुना साहू शुक्रा उरांव आशा देवी सचिंद्र सिंह ,फिलिप सहाय एक्का कुलदीप साहू सहित अन्य लोग उपस्थित थे ।

नगर पुलिस की बड़ी कार्रवाई 3 किलो गांजा के साथ गांजा तस्कर नासिम

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः पाकुड़ नगर थाना क्षेत्र के बड़ी अलीगंज इलाके में पुलिस ने नशीले पदार्थों की तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 3 किलो गांजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मो० नसीम आलम के रूप में हुई है, जो पाकुड़ के ही बड़ी अलीगंज का रहने वाला है। एसपी प्रभात कुमार को मिली गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई। एसपी को सूचना मिली थी कि बड़ी अलीगंज स्थित एक मकान में मादक पदार्थों की अवैध खरीद-बिक्री की जा रही है। इस पर एसपी के निदेर्शानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी (मुख्यालय), उत्पाद विभाग और स्थानीय थाना की संयुक्त टीम का गठन किया गया ।टीम ने सोमवार की रात करीब 8 बजे उक्त मकान पर छापा मारा ।छापेमारी के दौरान आरोपी के घर की तलाशी ली गई, जहाँ से प्लास्टिक के एक पोटले में रखा गया 3 किलो (373 ग्राम वजन सहित) गांजा बरामद हुआ। मौके पर ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। आरोपी से पूछताछ के बाद उसे पाकुड़ नगर थाना लाया गया और उसके विरुद्ध थाना कांड संख्या-155/25, दिनांक 26.05.25, धारा 20 ठउद्धर एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है ।टीम में सह थाना प्रभारी प्रज्ञान दास, उत्पाद विभाग के समीर एलेक्ज मुर्मू, सअनि राहुल गुप्ता, सअनि सनातन मांझी, सअनि सुशील मांझी, हवलदार रिंकू यादव और आ० 83 मनीषा सोरेन शामिल थे।

नगर में चोरों का बढ़ता आतंक रात के अंधेरे में चोरों ने घर से उड़ाया कीमती सामान

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः पाकुड़ जिले के नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत चर्च रोड, धनुषपुजा में बीती रात अज्ञात चोरों ने एक घर में सेंध लगाकर लैपटॉप और नगदी समेत कई कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया। घटना की लिखित शिकायत मनोज सोरेन ने नगर थाना में दर्ज कराई है ।प्राथमिकी के अनुसार, सोमवार रात लगभग 10:30 बजे जब मनोज अपना घर पहुंचा तो घर का मुख्य दरवाजा का ताला टूटा हुआ पाया। अंदर घुसा तो घर का सारा सामान इधर-उधर बिखरा पाया। घर के अंदर रखें सामानों में एक अरवर कंपनी का लैपटॉप, माउस, बैग तथा करीब 40,500 रुपये गायब थी जिसको अज्ञात चोरों ने चोरी है। जिसके बाद मनोज ने थाना में शिकायत दर्ज कराई ।पीड़ित मनोज सोरेन ने आशंका जताई है कि चोर पहले से इलाके की रेकी कर रहे थे। उन्होंने प्रशासन से जल्द से जल्द दोषियों की गिरफ्तारी और चोरी गए सामान की बरामदगी की मांग की है ।मौके पर पहुंचे नगर थाना के एएसआई सनातन माझी पहुंचे और मामले की तहकीकात करने की शुरूआत की है। पुलिस मामले की जांच शुरू कर दी गई है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

पुत्र के जन्मदिन पर माँ ने की रक्तदान

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

अपने पुत्र साकेत शायन के जन्मदिन पर स्वीटी मिश्रा ने रक्तदान कर अपने बच्चे को शानदार उपहार दिया है. इस परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के जन्मदिन पर रक्तदान करते हैं. स्वीटी ने कहा कि अपनों के जन्मदिन पर किसी को जीवनदान देने से बड़ा कोई पुण्य का कार्य नहीं है. यदि सभी लोग ऐसे रक्तदान करने लगे तो रक्त की कमी से किसी की जान नहीं जाएगी .यही नहीं निर्धारित समयांतराल पर रक्तदान करने वाले को हृदयाघात, उच्च रक्तचाप, मधुमेह जैसी बीमारियों से भी सुरक्षित रखता है.

राजद पार्टी के दिशा निर्देश पर संगठन के चुनाव कार्यक्रम संपन्न कराने को लेकर विचार विमर्श किया गया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज देवघर जिला राष्ट्रीय जनता दल सत्र 2025-28 सांगठनिक चुनाव कार्यक्रम संपन्न कराने हेतु जावेद अख्तर जिला निर्वाचन पदाधिकारी (DRO)एवं शत्रुघ्न यादव जिला सहायक निर्वाचन पदाधिकारी (ADRO)के द्वारा देवघर जिले के सभी प्रखंडों में BRO/ABRO (प्रखंड निर्वाचन पदाधिकारी एवं सहायक निर्वाचन पदाधिकारी मनोनीत किये गए लोगों के साथ बिग बजार स्थित द्वितीय तल्ल सभागार में एक बैठक आयोजित की गई ' इस बैठक में पार्टी के दिशा निर्देश पर संगठन के चुनाव कार्यक्रम ससमय सम्पन्न कराने पर गहन विचार विमर्श किया गया इस बैठक में प्रदेश स्तरीय व जिला स्तरीय कई वरिष्ठ नेता एवं प्रखंड अध्यक्ष नगर अध्यक्ष सहित देवघर के माननीय विधायक सुरेश पासवान भी शामिल हुए बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉक्टर फनी भूषण यादव ने की इस बैठक में मुख्य रूप से राजद वरिष्ठ नेता भूतनाथ यादव अजय यादव रंजीत यादव प्रमोद यादव देवनंदन झा अरुण यादव सुनील महत्ता लालमोहन मांझी पप्पू खान नुन देव यादव जयंत पटेल सिकंदर यादव उदित नारायण यादव दिवाकर महथा प्रकाश महथा फरीद अंसारी रामदेव यादव सुमन देव दीपनारायण यादव अरविन्द सिंह यादव प्रेम प्रकाश यादव कलीम अंसारी संजय मंडल मोहम्मद हैदर खान ममता मिश्रा रीता देवी मोहम्मद जमीर अंसारी राजेंद्र उर्फ पिंटू यादव नवीन देव यादव सुबोध राय बलदेव पूजहर शाहिद खान विजय यादव कुंदन सिंह चिरंजीवी यादव महादेव यादव राजेंद्र प्रसाद चंद्र शेखर यादव, राजकिशोर यादव डमरू यादव मिलन कु पासवान चंदन कुमार यादव राहुल मांझी राजकुमार दास मोहम्मद शाहनवाज अर्जुन हजरा अजय कुमार उर्फ भारत यादव सहित काफी लोगों ने भाग लिए

संक्षिप्त समाचार

कोरोना संक्रमण की संभावना को देखते हुए पाकुड़ प्रशासन सतर्क

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ कोविड संक्रमण को देखते हुए जिला प्रशासन पूरी तरह से सजग एवं तैयार है। कोविड मरीजों की मिलने की संभावना को लेकर पूर्व तैयारियों के तहत उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार ने सदर अस्पताल का जायजा लिया। अस्पताल प्रबंधन एवं डॉक्टरों की टीम के साथ बेड, ऑक्सीजन, दवाईयों के बारे में जानकारी ली गई। अस्पताल में सभी तरह के इंतजाम को देखा गया ताकि कोविड मरीजों को जिले में ही सारी सुविधाएं एवं चिकित्सा मिल सकें। कोरोना मरीजों के लिए अस्पताल में की गई व्यवस्था और अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर उपायुक्त ने एमटीसी, विभिन्न वार्डों का निरीक्षण किया। मौके पर उन्होंने सामान्य मरीजों एवं उनके परिजनों से मुलाकात कर फीडबैक प्राप्त किया। उपायुक्त ने कहा कि अस्पताल की सफाई नियमित रूप से होनी चाहिए और आमलोगों को समुचित स्वास्थ्य सेवाएं मिलनी चाहिए, ताकि सदर अस्पताल की एक अच्छी छवि बने। उपायुक्त ने अस्पताल में स्वास्थ्य सुविधा को और बेहतर व सुदृढ़ करने को लेकर चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों को पूरी लगन के साथ कार्य करने की बात कही। साथ ही कोरोना संक्रमित मरीजों के ईलाज के लिए बेहतर व्यवस्था के लिए उन्होंने सिविल सर्जन को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

सरना धर्मकोड की मांग को लेकर झामुमो का समाहरणालय के समक्ष धरना प्रदर्शन

साहिबगंजः सरना धर्म कोड की मान्यता की मांग को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा जिला कमेटी के बैनर तले मंगलवार को समाहरणालय के समक्ष जोरदार धरना प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व बोरियो विधायक धनंजय सोरेन व राजमहल विधायक मो. ताजुद्दीन उर्फ एमटी राजा , झामुमो जिलाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिनिधिमंडल ने साहिबगंज उपयुक्त हेमंत सती को राज्यपाल के नाम एक ज्ञापन सौंपा ।जिसमें केंद्र सरकार से सरना धर्म कोड को जल्द लागू करने की मांग की गई है। धरणा को संबोधित करते हुए बोरियो विधानसभा विधायक धनंजय सोरेन ने कहा कि झारखंड विधानसभा से सरना धर्म कोड संबंधित विधेयक पारित कर केंद्र सरकार को भेजा जा चुका है। बावजूद इसके केंद्र सरकार इस पर चुप्पी साधे हुए हैं और अब तक कोई निर्णय नहीं लिया गया है उन्होंने चेतावनी दी कि जब तक सरना धर्म कोड लागू नहीं किया जाएगा तब तक राज्य में जातीय जनगणना को शुरू नहीं होने दिया जाएगा।उन्होंने कहा कि धर्मकोड की गैर मौजूदगी में आदिवासियों की जनसंख्या सही से दर्ज नहीं हो पाएगी ।जिससे उन्हें सामाजिक व आर्थिक रूप से नुकसान होगा। वही राजमहल विधायक ताजुद्दीन उर्फ एमटी राजा ने कहा कि केंद्र सरकार आदिवासियों की अस्मिता और पहचान को लेकर उदासीन रवैया अपना रही है ।उन्होंने कहा कि झारखंड विधानसभा से पारित बिल केंद्र सरकार के पास लंबे समय से लंबित है लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। इस दौरान झामुमो जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ने कहा कि जब तक आदिवासियों को उनके अलग धर्म कोड नहीं मिलेगा तब तक जनगणना में उनकी असल पहचान सामने नहीं आ सकती। अगर मांगे नहीं मानी गई तो दिल्ली तक विरोध प्रदर्शन व धरना किया जाएगा। मौके पर झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य संजय कुमार मिश्रा उर्फ बबलु मिश्रा, पूर्व जिलाध्यक्ष शाहजहां अंसारी समेत सैकड़ों जेएमएम सदस्य मौजूद थे।

भारतीय राष्ट्रवादी किसान संगठन के तत्वाधान में ब्रह्मेश्वर मुखिया जी की शहादत दिवस का किया जाएगा आयोजन

गया से अमरेंद्र कुमार दिव्य दिनकर के लिए

आज महासंघ कार्यालय गांधीनगर (गया जी) में केंद्रीय कमेटी की एक बैठक की गई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि आगामी एक जून को महासंघ के संस्थापक सदस्य एवं किसानों के मान,सम्मान,स्वाभिमान की लड़ाई लड़ने वाले राष्ट्रवादी किसानों के महानायक अमर शहीद ब्रह्मेश्वर नाथ सिंह उर्फ मुखिया जी के तेरहवीं शहादत श्रद्धांजलि सभा का आयोजन मुखिया जी के प्रतिमा स्थल ग्राम भोरी में किया जाएगा । सुजातपुर (बक्सर) चौरम (अरवल) खोपीरा (आरा) में क्षत्रिय कमेटी के द्वारा भी इस कार्यक्रम को मनाया जाएगा। अतः महासंघ अपने नेता,कार्यकर्ता एवं मुखिया जी को चाहने वाले लोगों से आवाहन करता है कि अपनी सुविधा अनुसार मुखिया जी के प्रतिमा स्थल पर जाकर श्रद्धांजलि देने का कार्य करें। और जो लोग इन स्थलों पर जाने में असमर्थ हैं वह वे सभी क्षेत्रीय स्तर पर मुखिया जी की फोटो लगाकर श्रद्धांजलि देने का कार्य करें। गया जिला कमेटी द्वारा ग्राम भोरी में मुखिया जी के प्रतिमा स्थल पर आगामी एक जून को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जाएगा। इसकी जानकारी देते हुए राष्ट्रवादी किसान संगठन के राष्ट्रीय संयोजक राजेश शर्मा,भोरी ने बताया कि मुखिया जी की शहादत किसानों के हित रक्षा के लिए समर्पित है। मुखिया जी ने किसानों को अराजक तत्वों से प्रतिकार करके किसानों को उनका मान सम्मान,सुरक्षा,आजीविका लौटाने का जो चीर स्थाई कार्य किया है इसके लिए संपूर्ण भारत के किसान उनके योगदान को कभी नहीं भूलेंगे। ब्रह्मेश्वर मुखिया जी हमेशा शांति संघर्ष का पक्ष लिया और अन्याय के खिलाफ हमेशा मुखर रहकर किसानों का हौसला बढ़ाते रहे। उनका कहना था कि हमें जंग नहीं चाहिए लेकिन अगर शांति जंग से ही आती हो तो जंग से भी पीछे नहीं हटना चाहिए।

झासा की बैठक में मुख्य रूप से संगठन की मजबूती पर चर्चा की गई

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

दिनांक 26 05 25 दिन सोमवार को देवघर जिला झारखंड राज्य स्वास्थ्य सेवा संघ,(झासा) सत्र 2025 27 के लिए मनोनीत जिला कार्यकारिणी की पहली बैठक जिला झासा के मनोनीत अध्यक्ष डॉ अभय यादव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।ज्ञात हो कि 20 अप्रैल को संगठन के प्रमंडलीय बैठक में जिसमें राज्य स्तरीय पदाधिकारी भी मौजूद थे,जिला संगठन का पुनर्गठन किया गया था। आज की बैठक में मुख्य रूप से संगठन की मजबूती पर चर्चा की गई साथ ही यह भी निर्णय लिया गया जिले में नियमित अथवा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत कार्यरत वैसे चिकित्सक जो अब तक संगठन के सदस्य नहीं बने है उनको सदस्य बनाया जाए।इस बैठक में राज्य झासा के संयोजक डॉ शरद कुमार ने जिला कार्यकारिणी के सदस्यों से अपील किया कि वे जनहित में प्रत्येक तीन महीने पर संगठन की तरफ से एक स्वास्थ्य शिविर लगाया जाए,इस प्रस्ताव पर सभी लोगो ने अपनी सहमति जताई। झासा के जिला सचिव डॉ प्रभात रंजन ने बताया कि अभी जिले में लगभग 62 चिकित्सक है जो संगठन के सदस्य है।उन्होंने कहा कि आपातकालीन स्थिति के लिए संगठन में फंड की जरूरत को देखते हुए हमारे पास कुछ राशि जमा रहनी चाहिए,इस प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक सदस्य प्रति वर्ष 1000 रु संगठन के खाते में जमा करेंगे।राज्य कार्यकारिणी सदस्य डॉ चितरंजन पंकज द्वारा यह बात पूछा गया कि केंद्र और बिहार के तर्ज पर डी ए सी पी का भुगतान साथ ही ओ पी डी समय सारिणी में बदलाव को ले कर राज्य संगठन द्वारा क्या पहल किया गया,इसका जवाब देते हुए राज्य संयोजक डॉ शरद कुमार ने कहा कि ओ पी डी समय सारिणी में बदलाव के लिए संगठन द्वारा माननीय मंत्री को लिख कर दिया गया था जिसके आलोक में माननीय मंत्री महोदय द्वारा विभाग को लिखा जा चुका है,चूंकि अपर मुख्य सचिव अवकाश पर है उनके अवकाश उपरांत संशोधित आदेश निकलने की संभावना है।केंद्र और बिहार के तर्ज पर डी ए सी पी अवधि का भुगतान किया जाय इस मांग को ले कर जल्द ही संगठन के राज्य स्तरीय पदाधिकारी का शिष्टमंडल विभागीय मंत्री और अपर मुख्य सचिव से मिल कर अपनी बात रखेगी।जिला कार्यकारिणी सदस्य डॉ प्रियंका जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत मधुपुर में पदस्थापित थी जिनकी प्रतिनियुक्ति सदर अस्पताल देवघर में थी,अब वे एम्स देवघर में योगदान कर चुकी है।इस स्थिति में वो अब झासा की सदस्य भी नहीं थी,उनके स्थान पर सर्वसम्मति से राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सारवा में कार्यरत दन्त चिकित्सक डॉ अनुराधा कुमारी को जिला कार्यकारिणी का नया सदस्य बनाया गया। बैठक में मुख्य रूप से उपाध्यक्ष डॉ संचयन ,डॉ परमजीत कौर,जिला कार्यकारिणी सदस्य डॉ निताशा,डॉ निवेदिता,डॉ के के सिंह,डॉ अवधेश कुमार सिंह,डॉ अम्बरीष ठाकुर,डॉ अनिल कुमार,डॉ अभिषेक प्रकाश मौजूद थे।

सत्य सनातन संस्था के आह्वान पर श्री सत्य साईं सेवा संगठन के सदस्य ने किया रक्तदान

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ : सत्य सनातन संस्था के आह्वान पर श्री सत्य साईं सेवा संगठन के कार्यकर्ता व राजापाड़ा निवासी राकेश पांडे ने रक्तदान कर बचाया 70 वर्षीय बुजुर्ग की जान । सत्य सनातन संस्था के संयुक्त सचिव अजय कुमार भगत ने बताया कि मंगलवार को कुड़ापाड़ा निवासी 70 वर्षीय बुजुर्ग चंद्रशेखर साहा जिनको रक्त का कमी हो गया जिनको इलाज के लिए नगर के एक निजी चिकित्सालय में भर्ती कराया गया, जहां चिकित्सकों ने रक्त चढ़ाने का सुझाव दिया जिसपर मरीज के पुत्री सुनीता कुमारी ने संस्था से रक्त के लिए संपर्क किया , संस्था ने रक्त के लिए राजापाड़ा निवासी राकेश पांडेय से संपर्क किया राकेश पांडेय श्री सत्य साईं सेवा संगठन के सदस्य है, उन्होंने रक्त की महत्व को समझते हुए बिना समय गवाए रक्त अधिकोष में उपस्थित होकर रक्तदान कर 70 वर्षीय बुजुर्ग की बचाई जान।

मौके पर रक्तदाता की पत्नी निवेदिता पांडे, रक्त ग्रहिता सुनीता कुमारी, सत्य सनातन संस्था के सत्युक्त सचिव अजय भगत , रक्त अधिकोष में कार्यरत कर्मचारी नवीन कुमार व पीयूष कुमार उपस्थित रहे।

देवघर एम्स के मुख्य गेट पर धरना प्रदर्शन

8 महीने से मजदूरी का भुगतान नहीं किये जाने पर सब- कॉन्टैक्टर और मजदूर ने किया धरना प्रदर्शन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघरः जिला के देवीपुर में स्थित एम्स के मुख्य गेट पर सब ठेकेदारों और मजदूरों ने NKG इंफ्रास्ट्रक्चर ओर NBCC के खिलाफ 8 महीनों से पेमेंट नहीं दिए जाने पर धरना प्रदर्शन किया धरना पर बैठे लोगों को कहना है कि एम्स निर्माण कराने में NKG इंफ्रास्ट्रक्चर ओर NBCC द्वारा सब कॉन्टैक्टर से पिछले 5 साल से काम कराया जा रहा था इसके बाद पिछले 8 महीना से सब कॉन्टैक्टर को पेमेंट नहीं किए जाने पर मजदूर को पैसा समय पर नहीं दिया जा रहा था वहीं अब दूसरे सब - कॉन्टैक्टर के द्वारा काम कराया जा रहा है जिस कारण सब-कॉन्टैक्टर ने इस मामले को लेकर एम्स के निर्देशक को भी आवेदन देकर एनकेजी और एनबीसीसी के द्वारा भुगतान करने की मांग कर रहा था लेकिन पीछे 8 महीना से भुगतान नहीं मिलने के कारण सब कॉन्टैक्टर और मजदूरों को जीवन यापन करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है इस कारण सभी ने मिलकर एम्स के मुख्य गेट पर धरना प्रदर्शन करते हुए अपने मजदूरी को जल्द से जल्द भुगतान कराने की मांग की है

डीसी मनीष की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री स्वास्थ्य सहायता योजना की बैठक आहूत की गई

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ डीसी मनीष कुमार की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री स्वास्थ्य सहायता योजना की बैठक आहूत की गई, जिसमें समितियों के द्वारा जिले के विभिन्न प्रखंडों एवं विभिन्न बीमारियों से ग्रसित अनुसूचित जनजाति 14, अनुसूचित जाति 01 एवं 30 पिछड़े जाति वर्ग एवं कुल 45 लाभुकों के आवेदन पत्रों की स्वीकृति दी गई। ज्ञातव्य हो कि मुख्यमंत्री स्वास्थ्य सहायता योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य के अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के लोगों को स्वास्थ्य संबंधी सहायता प्रदान करना है। इस योजना के तहत अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति और पिछड़े वर्ग के लोगों को लाभ मिलेगा, जो विभिन्न बीमारियों और स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित है। इसके तहत व्यस्क लाभुकों को 3 से 5 हजार तक, अव्यस्क लाभुकों को 1500 से लेकर 2500 रुपये एवं कैंसर पीड़ित लाभुकों को 25 हजार रुपये तक की सहायता राशि प्रदान की जाती है। इसके लिए लाभार्थी वर्ग के लोगों को आवेदन करने के लिए राशन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक खाता, जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र आदि दस्तावेजों की आवश्यकता होती है। इस दौरान परियोजना निदेशक आईटीडीए, जिला यक्ष्मा पदाधिकारी समेत अन्य उपस्थित थे।

सिविल सर्जन ने मासिक समीक्षा बैठक की

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 27.०5.२०२५ को सिविल सर्जन देवघर के अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग अंतर्गत मैटरनल हैल्थ, चाइल्ड हेल्थ, फैमिली प्लानिंग, NCD AI निंग एवं फॉलोअप TBI, PBI भुगतान स्थिति, NQAS कायाकल्प, NUHM ,आयुष्मान भारत, NTEP, NVBDCP, IDSP NLEP एवं PM JA से सम्बन्धी कार्यक्रम का मासिक समीक्षात्मक बैठक सदर अस्पताल देवघर के सभागार में पूर्वाह्न ११ बजे से आयोजित किया गया।इस बैठक में विश्व टीकाकरण दिवस के शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने हेतु गुणवत्तापूर्वक ड्यू लिस्ट तैयार करने का निर्देश सभी प्रभारी को दिया गया। सभी को निर्देशित किया गया कि एक भी बच्चा टीकाकरण से वंचित न हो इसे ध्यान में रखते हुए विश्व टीकाकरण दिवस मनाया जाना है। अध्यक्ष महोदय द्वारा ल्लू में कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले cho को हिदायत दिया गया कि यदि उपलब्धि आपका अगले बैठक में भी कम पाया जाएगा तो मानदेय एवं इनसेंटिव रोकने की कार्रवाई की जाएगी। इस बैठक में प्रसव पूर्व जांच शत प्रतिशत करने हेतु सभी प्रखंडों को निदेश दिया गया कि प्रसव पूर्व जांच की उपलब्धि शत प्रतिशत हो। सरकारी स्वास्थ्य संस्थान में शत प्रतिशत प्रसव हो इसका ध्यान रखा जाय। साथ ही vbd tb आदि कार्यक्रमों का बारीकी से समीक्षा की गई।इस बैठक में मुख्य रूप से सिविल सर्जन देवघर के अलावे acmo drchoऑफिसर TB ऑफिसर ds सदर एवं अनुमंडलीय अस्पताल मधुपुर एवं अन्य कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में r के कंप्यूटर assistant संतोष तिवारी की भूमिका महत्वपूर्ण रहा।सभी प्रखंड के moic bpmu के सदस्य dpmu के सदस्य मुख्य रूप से उपस्थित थे ।

महेशमारा उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों ने 10वीं बोर्ड परीक्षा में किया शानदार प्रदर्शन

देवघर। महेशमारा उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों ने इस वर्ष 10वीं बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी मेहनत और शिक्षा संस्था की गुणवत्ता का लोहा मनवाया है। खास बात यह रही कि टॉप 10 विद्यार्थियों में 8 छात्र-छात्राएं विद्यापीठ, कोचिंग संस्थान देवघर से हैं। खुशी कुमारी और संध्या कुमारी ने संयुक्त रूप से 92.60 प्रतिशत अंक प्राप्त कर शीर्ष स्थान प्राप्त किया है, जबकि लक्ष्य कुमार ने 91.20 प्रतिशत के साथ तीसरा स्थान हासिल किया। रूपेश कुमार यादव, सत्यम कुमार यादव, उषा कुमारी, सायनी कुमारी, और कोमल कुमारी जैसे कई नाम विद्यापीठ के छात्र-छात्राएं हैं जिन्होंने स्कूल और जिले का नाम रौशन किया है। टॉप 10 की सूची इस प्रकार हैः 1. खुशी कुमारी 92.60 प्रतिशत 2. संध्या कुमारी 92.60 प्रतिशत 3. रोशन राज 92 प्रतिशत 4. लक्ष्य कुमार 91.20 प्रतिशत

5. रूपेश कुमार यादव 89.40 प्रतिशत 6. निशांत गुप्ता 89.40 प्रतिशत

7. सत्यम कुमार यादव 88 प्रतिशत (विद्यापीठ) 8. उषा कुमारी 87.80 प्रतिशत 9. सायनी कुमारी 87.40 प्रतिशत 10. कोमल कुमारी 84 प्रतिशत

संस्थान के निदेशक व शिक्षकों ने सभी विद्यार्थियों को उज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं और कहा कि यह सफलता विद्यार्थी, अभिभावक व शिक्षक तीनों के समर्पण और परिश्रम का परिणाम है।

फुल फॉर्म में दिखे देवघर के नए DC नमन प्रियेश लकड़ा, पदभार संभालते ही विकास की रफ्तार पकड़ने के दिए संकेत

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर जिले को उसका नया कप्तान मिल गया है। जिले के 46वें उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी के रूप में नमन प्रियेश लकड़ा ने आज पदभार ग्रहण कर लिया। निवर्तमान उपायुक्त विशाल सागर ने उन्हें गरिमामयी समारोह में जिम्मेदारी सौंपी। औपचारिकता के साथ-साथ भावनात्मक विदाई और गर्मजोशी भरा स्वागत भी इस मौके पर देखा गया। पदभार ग्रहण करते ही श्री लकड़ा ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह फूल फॉर्म में हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इस वर्ष के राजकीय श्रावणी मेला 2025 के बेहतर प्रबंधन व सफल संचालन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। लाखों श्रद्धालुओं की आस्था और सुरक्षा के मद्देनजर हर विभाग को मिलकर काम करने की हिदायत दी जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि देवघर की अंतरराष्ट्रीय छवि को और बेहतर बनाना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। यह शहर केवल आध्यात्मिक केंद्र ही नहीं, बल्कि पर्यटन, चिकित्सा और निवेश की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन सकता है। इसके लिए जिला प्रशासन हरसंभव प्रयास करेगा। नमन प्रियेश लकड़ा ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाओं को धरातल पर उतारना और उसका प्रभाव जमीनी स्तर पर दिखाना ही असल प्रशासनिक सफलता है। अपने पहले ही दिन वह बाबा बैद्यनाथ धाम पहुंचे और पूजा अर्चना कर आशीर्वाद लिया। यह कदम यह दर्शाता है कि आध्यात्म और प्रशासन को साथ लेकर चलने की उनकी सोच कितनी स्पष्ट है। कुशल नेतृत्व, तेजतर्रार निर्णय क्षमता और सजग कार्यशैली के लिए पहचाने जाने वाले नमन प्रियेश लकड़ा के आगमन से जिले में विकास की उम्मीदों को नई रफ्तार मिल गई है। कार्यालय में उनके पहले फैसलों और दिशा-निर्देशों से यह जाहिर होता है कि वह सिर्फ बैठकों के उपायुक्त नहीं होंगे, बल्कि फील्ड में उतरकर काम करने वाले अधिकारी होंगे। देवघर प्रशासन, जनप्रतिनिधि और आम जनता– सभी को उनसे उम्मीदें हैं। अब देखना यह है कि उनके नेतृत्व में यह आस्था की धरती विकास की नई ऊँचाइयों को कैसे छूती है। फिलहाल तो इतना तय है–देवघर का ऊ्ठ अब एक्शन मोड में है!

किआ ने अपनी बिग, बोल्ड फैमिली कार, नई कैरेन्स क्लैविस को 11.49 लाख रुपये में लॉन्च किया

6 और 7-सीटर विकल्पों में उपलब्ध, इस कार में ग्राहकों को मिलेगी ब७ल्ड डिजाइन, प्रीमियम स्पेस और एडवांस्ड टेक्नोलॉजी

स्पेशियस तीसरी पंक्ति और वन-टच इलेक्ट्रिक टंबल के साथ लचीली दूसरी पंक्ति, और सेगमेंट में पहला वॉक-इन लीवर (बॉस मोड) जो आसान पहुंच देता है

लेवल 2 एडीएएस के साथ 20 ऑटोनॉमस फीचर्स सहित श्रेणी में अग्रणी ऐक्टि० सेफ्टी फीचर्स, और 18 एडवांस्ड फीचर्स के साथ मजबूत स्टैंडर्ड पैसिव सेफ्टी पैकेज

G1.5 T-Gdi पेट्रोल इंजन के साथ बिल्कुल नया 6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन, जो अधिक गतिशील और आकर्षक ड्राइविंग अनुभव देता है

नई दिल्ली, : किआ इंडिया, एक मशहूर मास-प्रीमियम कार कंपनी, ने आज अपनी बिग बोल्ड फैमिली कार, नई कैरेन्स क्लैविस को भारत में 11.49 लाख रुपये की शुरूआती कीमत पर लॉन्च किया। यह गाड़ी बड़े और आधुनिक परिवारों के लिए बनाई गई है, जोकि एमपीवी और एसयूवी के बीच मौजूद अंतर को कम करेगी।

इसके आकर्षक बाहरी लुक, विशाल इंटीरियर और आधुनिक फीचर्स के साथ, कैरेन्स क्लैविस नए जमाने के परिवारों को आराम, सुविधा और स्टाइल देती है।

संक्षिप्त समाचार

झारखंड सिनियर वूशु चैंपियनशिप में साहेबगंज के खिलाड़ियों का जलवा, 4 पदक जीतकर किया जिले का नाम रोशन

साहेबगंज की राधिका को रजत, पूजा, मीनू व प्रियम को कांस्य; खेलजगत ने दी बधाई

साहिबगंज: झारखंड वूशु संघ, रांची के तत्वावधान में 26 से 27 मई तक आर.के. आनंद स्टेडियम, नामकुम, रांची में 21वीं झारखंड राज्य स्तरीय सिनियर वूशु चैंपियनशिप का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में राज्यभर के सैकड़ों खिलाड़ियों ने भाग लिया और अपने कौशल का प्रदर्शन किया।इस प्रतियोगिता में साहिबगंज जिला वूशु संघ के सचिव सह प्रशिक्षक मृतुंजय राय के नेतृत्व में जिले की टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। जिले की चार प्रतिभावान खिलाड़ियों ने पदक जीतकर साहेबगंज का नाम गौरवान्वित किया।राधिका कुमारी ने 65 किलो वर्ग में शानदार फाइट करते हुए रजत पदक हासिल किया। वहीं पूजा कुमारी (48 किलो वर्ग), मीनू कुमारी (45 किलो वर्ग) और प्रियम घोष (48 किलो वर्ग) ने कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा और मेहनत का लोहा मनवाया।खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर पूरे जिले में हर्ष का माहौल है। विजेता खिलाड़ियों को उपायुक्त हेमंत सती, जिला खेल पदाधिकारी पंकज झा सहित जिलेवासियों ने शुभकामनाएं एवं बधाई दी।

बीबीडी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा बीबीडी टाइम्स स्क्वायर, विभूति खंड गोमती नगर में भी विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया

बीबीडी ग्रुप एवं डा0 अखिलेश दास गुप्ता फाउंडेशन के प्रेसिडेंट, बैडमिन्टन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट, चेयरमैन उ0प्र0 बैडमिन्टन एसोसिएशन व यू0पी0 ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष श्री विराज सागर दास ने तृतीय बड़े मंगल पर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि एवं उन्नति की कामना की।

आम जनता की सेवा करना ही सच्चा धर्म है- विराज सागर दास

ज्येष्ठ माह के तृतीय बड़े मंगलवार के मौके पर आज बीबीडी कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा बीबीडी टाइम्स स्क्वायर, विभूति खंड गोमती नगर में भी विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें बीबीडी ग्रुप एवं डा0 अखिलेश दास गुप्ता फाउंडेशन के प्रेसिडेंट, बैडमिन्टन एसोसिएशन ऑफ इंडिया के वाइस प्रेसिडेंट, चेयरमैन उ0प्र0 बैडमिन्टन एसोसिएशन व यू0पी0 ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष श्री विराज सागर दास ने भंडारे में शमिल हुए भारी संख्या में श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण किया। इसके अलावा ऐशबाग, रामलीला मैदान के समीप डॉ0 अखिलेश दास गुप्ता फाउंडेशन द्वारा विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया इस मौके पर बीबीडी ग्रुप की चेयरपर्सन श्रीमती अलका दास, श्रीमती देवांशी दास एवं सोनाक्षी दास, बीबीडी के चीफ एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्री आर0के0 अग्रवाल सहित कई मणमान्य लोग मुख्य रूप से उपस्थित रहे। भण्डारे में प्रसाद वितरण के इस मौके पर श्री विराज सागर दास* ने कहा कि लोगों के बीच उनका अपनापन पाकर और उनकी सेवा करने का मौका मिलने पर सही मायने में ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम है और यही जीवन का सबसे बड़ा आनन्द है। उन्होने प्रतिवर्ष ज्येष्ठ माह के प्रत्येक मंगलवार को भण्डारे का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार के आयोजनों से न सिर्फ मन को शांति मिलती है बल्कि धर्म के प्रति आस्था और अधिक प्रगाढ़ होती है। इस पावन माह में लोगों को प्रसाद वितरण कर बहुत खुशी मिलती है साथ ही यह पुण्य कमाने का कार्य है। उन्होने प्रसाद वितरण के इस मौके पर सभी लोगों के सुख, समृद्धि एवं उन्नति की कामना की है।

राजद नगर कमेटी के गठन से पहले चुनावी प्रक्रिया के लिए डेलिगेशन का किया गया चयन

जमालपुर। राजद नगर कमेटी के गठन को लेकर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत मंगलवार को जमालपुर नगर परिषद क्षेत्र के लक्ष्मणपुर स्थित पाल भवन तथा नयागांव दुर्गास्थान परिसर में अलग-अलग गुट की ओर से वार्ड स्तरीय डेलिगेशन का चुनाव सम्पन्न कराया गया। एक ओर जहां चुनाव संयोजक के रूप में निवर्तमान राजद नगर अध्यक्ष बमबम यादव के संयोजन में तथा राजद जिलाध्यक्ष त्रिलोकी नारायण शर्मा की मौजूदगी में पाल भवन लक्ष्मणपुर में डेलिगेशन का चुनाव कराया गया। जहां सर्वसम्मति से जमालपुर नगर परिषद के 36 वार्ड के लिए डेलिगेशन का चयन किया गया। जिलाध्यक्ष त्रिलोकी नारायण शर्मा ने बताया कि प्रदेश राजद की ओर से नगर एवं प्रखंड कमेटी के गठन को लेकर होने वाले चुनाव की तारीख में बदलाव किया गया है। चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से नगर कमेटी के चुनाव से ठीक पहले रिलेशन का चुनाव कराया जाना है। जमालपुर नगर परिषद क्षेत्र के निर्वाचन पदाधिकारी अनिल भूषण तथा सहायक निर्वाचन पदाधिकारी कंचन की गैरमौजूदगी में डेलिगेशन का चुनाव कराया गया है। उधर दूसरी ओर, राजद नेता मंटू यादव के संयोजन में निर्वाचन पदाधिकारी की मौजूदगी में नयागांव दुर्गा स्थान परिसर में नगर डेलिगेशन का चुनाव कराया गया। जमालपुर नगर क्षेत्र के कई वार्ड के डेलिगेशन नियुक्त किए गए। लक्ष्मणपुर में आयोजित कार्यक्रम में चुनावी प्रक्रिया में हिस्सा लेने पहुंचे राजद नेता नागेश्वर यादव, विनय यादव, रविंद्र कुमार रवि, अशोक यादव, निर्मला देवी, गोरेलाल सिंह, अरुण यादव, प्रभु यादव, देव आनंद यादव, चंदन पासवान राज गुप्ता उर्फ सिंटू, अरुण यादव, मो बरकत कुरैशी सहित अन्य राजद कार्यकर्ता मौजूद थे।

महमदा पाटम के ग्रामीणों ने एसपी कार्यालय का किया घेराव, निष्पक्ष जांच की मांग

मामला मंदिर का दिवाला गिराए जाने का

तनाव को देखते तीसरे दिन भी पुलिस कैंप जारी

दिव्य दिनकर संवाददाता

मुंगेर : नयारामनगर थाना क्षेत्र के गढीरामपुर एवं महमदा पाटम गांव के बीच तीन दिन पूर्व हुए मंदिर विवाद को लेकर हिंसक वारदात के मुद्दे पर मंगलवार को महमदा पाटम के ग्रामीणों ने आरक्षी अधीक्षक कार्यालय का घेराव किया तथा मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की. धेराव में महिला एवं पुरुष शामिल थे.एसपी को ग्रामीणों द्वारा सौंपे गए ज्ञापन में ग्रामीणों ने कहा है कि गढीरामपुर गांव के पूर्व मुखिया शैलेश चौधरी, अजय चौधरी, कन्हैया सिंह,रामकृपाल सिंह सहित लगभग 200 लोगों के द्वारा पूरे महमदा गांव में घर में घुसकर मारपीट, रोड़ेबाजी तथा दरवाजा तोड़कर आतंक फैलाया गया. महमदा गांव के ग्रामीण सरिता देवी, मुकेश कुमार, प्रियंका कुमारी, दिलीप साह, नीतू देवी, गीत देवी, अमित साह, राजीव कुमार,संतोष कुमार, आकाश कुमार, अजय पाल, प्रेमलता देवी, मंटू पंडित, रेणु देवी, संतोष कुमार, राजीव कुमार, मुन्नी देवी तथा कंचन कुमारी सहित सैकरो ग्रामीणो ने एसपी को हस्ताक्षर युक्त आवेदन देकर कहां है कि गढीरामपुर गांव के आतंक से महमदा गांव के ग्रामीण दहशत में हैं. ग्रामीणों ने एसपी को बताया कि घटना के दिन लगभग 300 के आसपास गढीरामपुर गांव के नामांकित व्यक्तियों के नेतृत्व में पूरे गांव में घर-घर मारपीट, गाली गलौज के साथ-साथ दरवाजा तोड़ा गया. यहां तक की घर में लूटपाट भी किया गया. पूरा महमदा गांव इस घटना से आतंकित है. गढीरामपुर गांव की ओर से फायरिंग भी की गई. ग्रामीण ने आगे कहा कि नयारामनगर थाना पुलिस के उपस्थिति में गढीरामपुर गांव के लोगों द्वारा तांडव मचाया गया. पुलिस के द्वारा महमदा गांव के कुल आठ लोगों को जो गिरफ्तार किया गया है, वे सभी निर्दोष हैं. ग्रामीणों ने एसपी से उचित कार्रवाई करते हुए न्याय की गुहार लगाई है. बताते चले की तीन दिन पूर्व रात्रि में असामाजिक तत्वों ने श्री राम जानकी ठाकुरबाड़ी मंदिर के दीवाल को क्षतिग्रस्त कर दिया था. जिस कारण महमदा और गढीरामपुर गांव के बीच हिंसक घटना घटी थी. सूचना पर एसपी सैयद इमरान मसूद सहित दर्जन भर थाना के पुलिस जवान घटनास्थल पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित किया था. एसपी सैयद इमरान मसूद को खुद मोर्चा संभालना पड़ा था. घटना को लेकर दोनों गांव के बीच तनाव व्याप्त है. तनाव को देखते हुए पुलिस मंदिर के समीप कैंप कर रही है. वहीं दूसरी ओर श्री राम जानकी ठाकुरबाड़ी न्यास समिति के अध्यक्ष पूर्व मुखिया अजय चौधरी के द्वारा 18 लोगों पर नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई गई है. साथ ही 25 अन्य लोगों पर भी मुकदमा दर्ज किया गया है. कुल मिलाकर महमदा पाटम गांव के 43 लोगों पर पत्थरबाजी,मारपीट तथा मंदिर क्षतिग्रस्त किए जाने को लेकर नयारामनगर थाना में मुकदमा दायर किया गया है. पुलिस मामले की छानबीन कर रही है. इस मामले में कुल आठ लोगों की अब तक गिरफ्तारी हो चुकी है. शेष आरोपियो की गिरफ्तारी के लिए पुलिस संभावित ठिकानों पर छापामारी कर रही है. दोनों गांव के बीच तनाव को देखते हुए पुलिस कैंप जारी है. एसपी सैयद इमरान मसूद ने ग्रामीणों के प्रतिनिधि मंडल से बातचीत कर वस्तु स्थिति से अवगत हुए और जांच की बात कही.

देव राज रैयासत का अभिन्न अंग रानी तालाब का अस्तित्व खतरे में

चारदिवारी पर उग रहें पीपल और बरगद का पेड़

शतचंडी यज्ञ 02 जून से प्रारम्भ, प्राशनिक उदासीनता के कारण नहीं हुआ तालाब का सफाई

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद - जिले के सौर तीर्थ देव का मुख्य आकर्षण का केंद्र रानी तालाब प्रशाशनिक उदासीनता के कारण तालाब में पड़ा है गंदगी का अम्बार, चारदिवारी पर भी बरगद और पीपल का पेड़ उग गया है ' सरकार का जल जीवन हरियाली देव के लिए हवा हवाई साबित हुई ' देव राज विरासत का कुआँ भी हो रहा क्षतिग्रस्त ' श्रद्धांलुओं के लिए यहाँ पर अवस्थीत टॉयलेट वाश रुम भी हो गया नाकामयाब ' ज्ञात हो की सूर्य नगरी देव में जिला प्रशासन के द्वारा रानी तालाब में वार्षिक दो बार छठ महापर्व में श्रद्धांलुओं का ठहरने का ब्यवस्था किया जाता है ' अचलासप्तमी में यहाँ बिहार सरकार के द्वारा यहाँ भव्य सूर्य महोत्सव का आयोजन भी किया जाता है ' दो वर्ष पूर्व यहाँ सूर्यमहायज्ञ भी सम्पन हुआ था जिसमे स्वामी रामभद्राचार्य आये थे ' इसी स्थल में रानी बृजकिशोरी प्रोजेक्ट कन्या विद्यालय व सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल भी संचालित होता है ' देव प्रखंड का थाना भी यहीं पर अवस्थीत है, जिला परिषद का डाक बंगला भी यहीं पर अवस्थीत है '

देव नगर पंचायत बननें के बाद देव वासियों को बहुत उम्मीद थी की इस ऐतिहासिक रानी तालाब का नियमित साफ सफाई होता रहेगा लेकिन यह संभव नहीं हो पाया

राम स्वारथ कॉलेज, तारापुर में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर कार्यशाला आयोजित

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

राम स्वारथ कॉलेज, तारापुर में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आईआईटी पटना एवं वुमेंस कलेक्टिव फॉरम, नई दिल्ली के संयुक्त प्रयास से संपन्न हुआ। कार्यशाला का मंच संचालन विनायक ने किया।कार्यक्रम का विषय प्रवेश आईआईटी पटना की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. पपिया राज ने किया। उन्होंने पारंपरिक ज्ञान और जीवनशैली की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि ऐसी पद्धतियाँ स्वास्थ्य प्रणाली को अधिक टिकाऊ बना सकती हैं। भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया पैनलिस्ट एवं प्रदेश प्रवक्ता जयराम विप्लव ने कहा कि सरकार की योजनाएं तभी सफल होंगी जब समाज सक्रिय भागीदार बनेगा। उन्होंने कहा कि नैतिकता, जिम्मेदारी और जागरूकता से ही बदलाव संभव है। उन्होंने पीएम मातृत्व वंदना योजना, पीएम जननी सुरक्षा योजना एवं आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं की सफलता का जिक्र करते हुए कहा कि 2047 तक विकसित भारत का सपना स्वस्थ नागरिकों से ही संभव है।एम्स देवघर के डॉ. अविजीत विश्वास ने एनीमिया की समस्या पर चिंता जताई और कहा कि सरकार एनीमिया मुक्त भारत की दिशा में गंभीर प्रयास कर रही है। उन्होंने बताया कि एक बच्चे के टीकाकरण

पर औसतन 55 हजार रुपये खर्च होते हैं।पिरामल फाउंडेशन की प्रतिनिधि रश्मि झा ने बाल विवाह, लिंग भेद और बच्चों के अधिकारों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे को जन्म, विकास और सुरक्षा का अधिकार है, जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर में भी मान्य है।समाजसेवी स्मिता श्री ने मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही जरूरी है जितना शारीरिक स्वास्थ्य। कार्यशाला में आशा कार्यकताओं, ममता, आंगनबाड़ी सेविकाओं, स्वास्थ्य कर्मियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और समाजसेवियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने जमीनी अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न पहलुओं पर सार्थक संवाद हुआ। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देते

22 से 27 तक मसाल खेल प्रतियोगिता का आयोजन

दिव्य दिनकर संवाददाता संग्रामपुर।

प्रखंड क्षेत्र के प्लस टू उच्च विद्यालय मॅझगांय में बिहार सरकार के आदेश अनुसार स्कूल एवं संकुल संसाधन केंद्र स्तर पर 22 से 27 मई 2025 तक मसाल खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। खेल प्रतियोगिता में एथलेटिक्स, कबड्डी, फुटबॉल, साइकिलिंग, वॉलीबॉल, 100 मीटर दौड़ 600 मीटर दौड़ तथा लंबी कूद आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें संकुल संसाधन केंद्र स्तर पर कबड्डी में अंकित शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया वही 60 मीटर के दौड़ में लक्ष्मण कुमार एवं कुमकुम कुमारी 600 मीटर की दौड़ में देवेश चौधरी सुगंधा कुमारी एवं लंबी कूद में आशीष कुमार और पूर्णिमा कुमारी ने अच्छे अंक प्राप्त कर अपनी जगह बनाई, तो वहीं क्रिकेट बॉल थ्रो में गुड्डू कुमार भव्य कुमारी एवं रजनी कुमारी ने अच्छा प्रदर्शन किया। वही कबड्डी में छात्र प्रिंस कुमार राजा कुमार रोहित कुमार दिलखुश कुमार एवं छात्रा मनीषा कुमारी अंजली कुमारी साक्षी कुमारी ने जगह बनाई। तो फुटबॉल में बादल कुमार सुमन कुमार किशन कुमार का बढ़िया प्रदर्शन रहा। वॉलीबॉल में रितेश कुमार दिवाकर कुमार सुधांशु कुमार ने खेल में अच्छा प्रदर्शन किया। तो वहीं खेल के अंत में प्रभारी प्रधानाध्यापक मोहम्मदी खानम के द्वारा सभी विजेताओं को शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। वही इस मौके पर संकुल संसाधन केंद्र के संचालक चंदन कुमार चौधरी अभिषेक कुमार दिलीप राय सुबोध कुमार गुप्ता संतोष कुमार झा गणेश कुमार सिंह एवं संकुल स्तर के सभी विद्यालय के शिक्षक गण मौजूद थे।

कांग्रेस विधायक ने वार्ड संख्या 28 में मतदाताओं से हुए रूबरू जर्जर सड़क तथा पेयजल समस्या को लेकर स्थानीय नागरिकों ने विधायक से की शिकायत

जमालपुर। आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए जमालपुर विधानसभा क्षेत्र के प्रत्याशियों की ओर से जोर आजमाइश शुरू कर दी गई है। जमालपुर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस विधायक डॉ अजय कुमार सिंह ने वार्ड संख्या 28 में मसोमात तालाब से सटे चैती दुर्गास्थान के निकट मतदाताओं से मुलाकात कर उनकी समस्याओं से रूबरू हुए। वार्ड संख्या 28 में पहुंचे विभिन्न वार्ड के मतदाताओं ने मुख्य रूप से जर्जर सड़क और पेयजल से जुड़ी समस्याओं को स्थानीय विधायक के समक्ष रखा। वार्ड संख्या 32 के वार्ड पार्षद रकेश कुमार ने बताया कि वार्ड 32 में विगत कई दिनों से प्याऊ की बिजली के बिल के भुगतान में नगर परिषद प्रशासन की लापरवाही के कारण प्याऊ पूरी तरह से ठप पड़ा

हुआ है। नगर परिषद जमालपुर के कार्यपालक पदाधिकारी कौन लिखित आवेदन देने के बावजूद अब तक जो के बिजली बिल से जुड़ी समस्या का निपटारा नहीं किया जा सका है। वार्ड 32 के मतदाताओं तथा वार्ड पार्षद के शिकायत के आधार पर विधायक डॉ अजय कुमार सिंह ने कार्यपालक पदाधिकारी विजयशील गौतम तथा विद्युत विभाग के सहायक अभियंता से फोन पर बातचीत कर समस्या के जल्द से जल्द निपटने का निर्देश दिया। वार्ड संख्या 27, वार्ड संख्या 31 सहित कई वार्ड में नल जल योजना के तहत पाइपलाइन घरों में कनेक्शन नहीं मिलने को लेकर स्थानीय लोगों ने विधायक के समक्ष शिकायत की। कई वार्ड में स्ट्रीट लाइट की समस्या को लेकर भी विधायक के समक्ष शिकायत की गई। विधायक डॉ अजय कुमार सिंह ने स्थानीय लोगों से यथाशीघ्र समस्याओं के निपटारा को लेकर भरोसा दिलाया गया। मौके पर कांग्रेस नगर अध्यक्ष साईं शंकर, राजद नेता विनय यादव, अरुण यादव, कांग्रेस नेता भूपेंद्र सिंह, वार्ड संख्या 28 के वार्ड पार्षद राकेश तिवारी, विवेक श्रीवास्तव, अमन कुमार गंगा, परम नवीन कुमार, सिद्धेश्वर नाथ विश्वकर्मा, प्रभु यादव, मयंक कुमार उर्फ छोटू डॉन, अमिताभ कश्यप सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

माल परिवहन के क्षेत्र में रेलवे के एक नए युग की हुई शुरूआत

*** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात के दाहोद स्थित रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप में लोको निर्माण केंद्र का किया गया लोकार्पण**

*** दाहोद स्थित रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप में लोको निर्माण केंद्र परिवर्तन की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम**

*** 9,000 हॉर्सपावर क्षमता वाले 1,200 अत्याधुनिक इलेक्ट्रिक मालवाहक इंजनों का निर्माण किया जाएगा। मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड को इससे बढ़ावा मिलेगा**

नई दिल्ली: भारतीय रेल ने मालवाहन क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण छलांग लगा दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 26 मई, 2025 को गुजरात के दाहोद स्थित रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप में लोको निर्माण केंद्र का लोकार्पण किया जाना इस परिवर्तन की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। एक ऐसा कदम जो तेज गति, माल वाहन में वृद्धि और सतत विकास को गति देने की प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होगा। इस अत्याधुनिक सुविधा में 9,000 हॉर्सपावर क्षमता वाले 1,200 अत्याधुनिक इलेक्ट्रिक मालवाहक इंजनों का निर्माण किया जाएगा। इससे मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड को बढ़ावा मिलेगा।

ये इंजन 4,500 से 5,000 टन तक के भारी माल को तीव्र चढ़ाई पर भी आसानी से ले जाने में सक्षम हैं। जिससे भारी मालवाहन परिवहन में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। मेक इन इंडिया पहल के तहत निर्मित ये इंजन अत्याधुनिक क्ष्ल्ढ्ळ-आधारित प्रणोदन तकनीक से सुसज्जित हैं, जो ऊर्जा दक्षता और संचालन प्रदर्शन को नई ऊंचाइयों पर ले जाते हैं। ये विशेषताएं भारतीय रेल को आधुनिक, विश्वसनीय और पर्यावरण अनुकूल मालवाहक लॉजिस्टिक्स के अग्रणी पथ पर ले जाती हैं।

9000 हॉर्सपावर की यह लोकोमोटिव भारतीय रेल द्वारा विकसित सबसे शक्तिशाली एकल-इकाई इलेक्ट्रिक इंजन है। अब तक मालवाहक इंजन आमतौर पर 4500 या 6000 हॉर्सपावर की क्षमता वाले चलते थे। जबकि 12,000 हॉर्सपावर के इंजन भी हैं, वे दो 6000 हॉर्सपावर इकाइयों को जोड़कर बनाए जाते हैं। इसके विपरीत, दाहोद में निर्मित यह इंजन एकीकृत उच्च-शक्ति समाधान प्रदान करता है, जो लंबे और भारी माल गाड़ियों को आसानी से खींच सकता है। इस बढ़ी हुई क्षमता का अर्थ है कम ट्रिप्स में अधिक माल परिवहन। जिससे समय की बचत, भीड़भाड़ में कमी और बेहतर लॉजिस्टिक्स दक्षता सुनिश्चित होती है। इससे रेल यातायात अनुकूलित होगा। जिससे व्यस्त मार्गों पर दबाव घटेगा। साथ ही, मानव संसाधन और ऊर्जा खपत में कमी आएगी। ये सभी लाभ उद्योगों के लिए लॉजिस्टिक्स लागत को घटाकर मूल्य प्रतिस्पर्धा और आपूर्ति श्रृंखला को बेहतर बनाएंगे।

एक समय ऐसा भी था जब रेलवे कार्यों का प्रमुख केंद्र रहे दाहोद में गतिविधियां घट गई थीं। 2022 में प्रधानमंत्री मोदी ने इसे रेलवे निर्माण के एक नए केंद्र के रूप में पुनः स्थापित करने का दृष्टिकोण रखा। आज यह दृष्टिकोण साकार हो रहा है। लोको निर्माण केंद्र भारतीय रेल के लिए ब्रॉड गेज और निर्यात के लिए स्टैंडर्ड गेज दोनों प्रकार के इंजन बनाने में सक्षम है। यह दोहरी क्षमता भारत को वैश्विक रेल निर्माण बाजार में मजबूत स्थिति प्रदान करती है। इस परियोजना में 89% पुर्जे भारत में बनाए गए हैं, जिससे यह ह्यमेक इन इंडियाह्ल और ह्यमेक फॉर वर्ल्डह्ल दोनों अभियानों के अनुरूप है।

9000 हॉर्सपावर इंजन की खासियत इसकी सततता में निहित है। इसका निर्माण हरित ऊर्जा से संचालित फैक्ट्री में होता है, जिसे ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग टैग मिला है। इसके अलावा, इसमें पुनर्योज्य ब्रेकिंग तकनीक भी है, जो ब्रेक लगने पर ऊर्जा को ग्रिड में वापस भेजती है। जिससे कार्बन फुटप्रिंट कम होता है। ये विशेषताएं भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं को सशक्त करती हैं।

इस इंजन में 'कवच' प्रणाली (भारत की स्वदेशी टक्कर-रोधी प्रणाली), वातानुकूलित ड्राइवर केबिन, कम शोर और कंपन जैसी विशेषताएं हैं, जो सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करती हैं। इंजन के सभी ओर लगे कैमरे निगरानी और सुरक्षा को और बेहतर बनाते हैं। इसके शौचालय में इलेक्ट्रॉनिक लॉक होते हैं जो केवल इंजन के स्थिर रहने पर खुलते हैं। जिससे संचालन अनुशासन सुनिश्चित होता है।

दाहोद सुविधा की एक प्रमुख विशेषता कौशल विकास पर जोर है। एक वर्चुअल डिजिटल मॉडल विकसित किया गया है, जो मैकेनिकों और ड्राइवरों को प्रशिक्षण देने में सहायता करता है। इस परियोजना से जुड़े अवसंरचना विकास के तहत 85% नौकरियां स्थानीय युवाओं को मिली हैं। कार्यबल की तकनीकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाए गए हैं। यह लोको निर्माण केंद्र न केवल रोजगार सृजित कर रहा है, बल्कि दाहोद क्षेत्र में उद्योगों और आधारभूत संरचना के विकास को भी गति दे रहा है।

9000 हॉर्सपावर इंजन मालवाहन परिवहन की एक नई प्रणाली का केंद्र बनने जा रहा है। इसकी शक्ति, दक्षता और डिजाइन भारतीय रेल को अधिक प्रतिस्पर्धी, अधिक टिकाऊ और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए बेहतर सुसज्जित बनाएंगे। तकनीक, क्षेत्रीय विकास और वैश्विक दृष्टिकोण के संयोजन से दाहोद में बना यह इंजन न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी मालवाहन परिवहन की दिशा को नया आयाम देगा।

पहले पर घर पर मचाया उत्पात, मां से मांगी रंगदारी; फिर नशे की हालत में स्कूल पहुंचा हेडमास्टर

= खगड़िया के बेलदौर प्रखंड के एक प्राथमिक विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक राजेश कुमार को शराब के नशे में किया गया गिरफ्तार

= प्रधानाध्यापक पर घर पर उत्पात मचाने और परिजनों के साथ मारपीट करने का आरोप है।

= वह पहले भी शराब के नशे में गिरफ्तार हो चुका है।

= पुलिस ने मामला दर्ज कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया है और मामले की जांच जारी है.

रंजीत विद्यार्थी

खगड़िया (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत खगड़िया जिले के बेलदौर प्रखंड स्थित प्राथमिक विद्यालय कुरहा बासा के प्रभारी प्रधानाध्यापक राजेश कुमार को शराब के नशे में मंगलवार को गिरफ्तार किया गया।

विद्यालय से उसकी गिरफ्तारी की गई। आरोपित प्रधानाध्यापक राजेश कुमार शराब के नशे में सोमवार की देर रात से ही अपने घर पर उत्पात मचा रहा था। सूचना पर रात में जब डायल 112 की पुलिस पहुंची, तो वह फरार हो गया। मंगलवार सुबह उसने फिर घर पर ड्रामा शुरू किया और वहां से शराब के नशे में ही विद्यालय पहुंच गया। जांच में प्रधानाध्यापक राजेश कुमार द्वारा शराब पीने की पुष्टि हुई है। आरोपित प्रधानाध्यापक की मां के आवेदन पर केस कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। आरोपित की मां कुरहा बासा की निर्मला देवी ने बेलदौर थाना में आवेदन देकर कहा है कि राजेश कुमार शराब के नशे में अक्सर स्वजन के साथ मारपीट करता है।

सोमवार की रात भी उसने शराब पीकर मारपीट की। उसने उनको व भाई मुकेश कुमार आदि को पीटा। मां से रंगदारी भी मांगी। आरोपित प्रधानाध्यापक इससे पूर्व भी 15 मई, 2023 को शराब के नशे में गिरफ्तार हो चुका है। बेलदौर थानाध्यक्ष परशुराम सिंह ने बताया कि उक्त प्रधानाध्यापक शराब के नशे में दूसरी बार गिरफ्तार हुआ है। उसे न्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

इधर विद्यालय के पोषक क्षेत्र के अभिभावकों ने आरोपित प्रधानाध्यापक पर विभागीय अधिकारियों से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। डीपीओ निशीथ प्रणीत सिंह ने कहा कि मामले की जानकारी बीईओ से ली जा रही है। जांच-पड़ताल के बाद विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी

संक्षिप्त समाचार

एनडीए सरकार के कार्यकाल में राज्य का हुआ चौतरफा विकास - रंजन सिंह

लालू राज्य में अपराधियों का चलता था अपराध करने का उद्योग

औरंगाबाद : – मुख्यालय स्थित दानी बिगहा के नजदीक सर्किट हाउस के सभागार में मंगलवार को लोजपा (रामविलास) पार्टी ने एक प्रेस वार्ता आयोजित किया। इस प्रेस वार्ता का अध्यक्षता लोजपा (रामविलास) के जिलाध्यक्ष चंद्रभूषण कुमार सिंह उर्फ सोनू सिंह ने किया। मौके पर लोजपा (रामविलास) के प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता रंजन सिंह, राजीव रंजन सिंह उर्फ सोनू सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रोहतास के बिक्रमगंज में आगामी 30 मई को होने वाली जनसभा और भोजपुर जिले के आरा के रमना मैदान में 8 जून को आयोजित नव संकल्प महासभा को सफल बनाने में कार्यकर्ता लगे हुए हैं। कहा कि प्रचार-प्रसार के माध्यम से दोनों कार्यक्रमों में व्यापक जन सहभागिता सुनिश्चित करने को लेकर पार्टी ने प्रवक्ताओं की फौज को मैदान में उतार दिया है। नव संकल्प महासभा पार्टी के बिहार फर्स्ट बिहारी फर्स्ट के विजन के साथ शाहाबाद और मगध प्रमंडल के आठ जिलों में पार्टी के विधानसभा चुनाव अभियान का उद्घोष है। कार्यक्रम को सफल बनाने में पार्टी कार्यकर्ता पूरी तरह से जुटे हैं। प्रधानमंत्री का कार्यक्रम और पार्टी का यह कार्यक्रम दोनों ही ऐतिहासिक रूप से सफल होगा। दोनों कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जन सैलाब उमड़ेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यकर्ता गांव-गांव जा रहे है। लोगों को आमंत्रण दे रहे हैं। दोनों ही कार्यक्रमों में अकेले औरंगाबाद जिले से 50-50 हजार की भागीदारी होगी। यह सिर्फ हमारा दावा नहीं बल्कि सच्चाई के रूप में यह कार्यक्रम में दिखेगा। कहा कि एनडीए सरकार के कार्यकाल में राज्य का चौतरफा विकास हुआ है। विधानसभा 2025 में राज्य में पुनः एनडीए की सरकार बनेगी। कहा कि लालू राज्य में अपराधियों का अपराध करने का उद्योग चलता था। राज्य के लोग रात्रि में बाहर नहीं निकलते थे। प्रदेश प्रवक्ता सह संसदीय बोर्ड की प्रदेश महासचिव कुमारी सोनम, महिला सेल की प्रदेश सचिव अंशु कुमारी, महिला नेत्री कुसुम पासवान, डा. रामविलास पासवान, राकी राज एवं लेबर सेल के जिलाध्यक्ष रंधीर पासवान सहित मौजूद रहे।

मांगों को ले वित्त रहित शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का धरना

मांगों को नहीं माना गया तो होगा चरणबद्ध आंदोलन।

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के दानी बिगहा बस स्टैंड के समीप मंगलवार को वित्त रहित शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने बिहार प्रदेश माध्यमिक शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारी महासंघ के बैनर तले एक दिवसीय महाधरना का आयोजन किया गया। धरना 715 अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों पर संबंधता विनियमावली 2011 लागू करने के विरोध में किया गया। अध्यक्षता जिलाध्यक्ष रामनरेश सिंह ने किया। रामनरेश सिंह ने कहा कि 1970 से 2008 तक माध्यमिक स्तर के शैक्षणिक संस्थान खोलने के लिए आम जनता द्वारा महामहिम राज्यपाल के नाम की गई निबंधित भूमि पर स्थापित विद्यालयों को राज्य सरकार मान्यता देती रही। 715 माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना बिहार अराजकीय माध्यमिक विद्यालयों (प्रबंध एवं नियंत्रण ग्रहण) अधिनियम 1981 की धारा 19 के तहत राज्य सरकार ने की है। यह विद्यालय स्वत्वधारक नियमावली 1994 के अंतर्गत स्थापित और मान्यता प्राप्त हैं। बताया कि 2008 में राज्य सरकार ने वित्त रहित शिक्षा नीति समाप्त कर शिक्षकों को अनुदान देने की व्यवस्था की थी। साथ ही विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को सरकारी योजनाओं का लाभ भी दिया जा रहा है। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति नियमावली 1952 में स्पष्ट है कि विद्यालय वहीं माना जाएगा जिसे राज्य सरकार से स्थापना अनुमति और प्रस्वीकृति प्राप्त हो। इसलिए इन 715 विद्यालयों पर संबंधता विनियमावली 2011 लागू नहीं की जा सकती। संबंधता विनियमावली 2011 केवल परीक्षा के लिए संबद्धता देती है। इसमें न तो विद्यालयों को और न ही शिक्षकों या छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता का प्रावधान है। इसलिए अधिनियम 1981 की धारा 19 के तहत पूर्व से मान्यता प्राप्त इन विद्यालयों पर यह नियमावली लागू नहीं होनी चाहिए। जिला संयोजक प्रद्युमन कुमार सिंह ने कहा कि धरना प्रदेश कमेटी के आह्वान पर आयोजित हुआ। मुख्य मांग संबंधता विनियमावली 2011 एवं उसके 2013 के संशोधन को वापस लेने की है। कहा कि सरकार इस नियमावली को थोपकर अनुदानित विद्यालयों को समाप्त करना चाहती है। जबकि यह विद्यालय पिछले 30 से 40 वर्षों से संचालित हैं। सरकार के 538 संकल्प के अनुसार अधिनियम के तहत मान्यता प्राप्त हैं। बताया कि 2008 में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने परफार्मेंस आधारित अनुदान की घोषणा की थी। तब से अनुदान मिल रहा है। सभी योग्यताएं पूरी करने के बाद भी अब सरकार कह रही है कि इस नियमावली का पालन करें। कहा कि किसी भी कीमत पर यह नियमावली स्वीकार नहीं की जाएगी। सरकार इसे जबरन थोपना चाहती है। इसके खिलाफ उच्च न्यायालय में मुकदमा दायर किया गया है। प्रद्युमन कुमार सिंह ने चेतावनी दी कि यदि सरकार कैबिनेट के इस फैसले को वापस नहीं लेती तो चरणबद्ध आंदोलन किया जाएगा। चुनाव में सरकार का विरोध किया जाएगा और सत्ता से हटाया जाएगा। डा. श्रीधर कुमार सिंह, अनूप प्रसाद, गौतम कुमार, रविंद्र कुमार सिंह, विवेक कुमार, कविंद्र कुमार, अक्षय कुमार, महेश प्रसाद सिंह समेत बड़ी संख्या में शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी शामिल रहे।

लोजपा (आर) पार्टी के प्रदेश महासचिव प्रमोद कुमार सिंह के प्रयास से कोटवारा गांव में विद्युत समस्या का समाधान कराया

कोटवारा गांव की बिजली समस्या को लेकर ग्रामीणों की एकजुटता समाधान का मिला आश्वासन- प्रमोद कुमार सिंह

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के रफीगंज प्रखंड के कोटवारा पंचायत के कोटवारा गांव में बिजली आपूर्ति की समस्या को लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश था। पिछले कई दिनों से बिजली की आपूर्ति अनियमित और बाधित रही, जिससे गांव के लोग विशेषकर छात्र-छात्राएं, किसान और बुजुर्ग बेहद परेशान थे। इस बात जानकारी जैसे ही ग्रामीणों ने लोजपा नेता सह रफीगंज विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी रहे प्रमोद कुमार सिंह ने वहां पहुंचे और गांव के सभी जागरूक नागरिक के साथ बड़ी संख्या में एकत्र लोग हुए और रफीगंज के एसडीओ बिजली तथा जेई से संपर्क स्थापित किया। ग्रामीणों की समस्या को विस्तार से बात चित करते हुए हुए प्रमोद कुमार ने उनसे त्वरित समाधान की मांग की। इनकी बात को सुनकर विद्युत विभाग के एसडीओ ने भरोसा दिलाया कि जो भी तकनीकी कारण हैं, उन्हें अगले दो दिनों के भीतर ठीक कर दिया जाएगा। जेई ने भी आश्वासन दिया कि आवश्यक मरम्मत कार्य और लाइन चेकिंग शीघ्र पूर्ण की जाएगी। आगे लोजपा नेता प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि ग्रामीणों की एकजुटता और सहयोग के लिए मैं सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।और आप लोग की समस्या का हर समय समस्या का समाधान करने के लिए मैं आप लोग के बीच तत्पर हूं।

संदिग्ध अवस्था में घर में मिला 27 साल की युवती का शव, मचा हड़कंप; मां बोली- एक लड़का...

पटना , बिहार की राजधानी पटना से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है, जहां पर एक घर से एक युवती का संदिग्ध अवस्था में शव मिला है। वहीं, शव मिलने के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। इधर, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है। जानकारी के मुताबिक, मामला जिले के मनेर नगर परिषद की नई बस्ती, रामनगर स्थित एक घर का है। युवती की पहचान नई बस्ती निवासी स्व.बच्चू सिंह की पुत्री प्रिया (27) के रूप में हुई है। मृतका के परिजनों ने बताया कि सोमवार को प्रिया की विधवा मां कुछ काम से बाहर गई थी। जब वह घर वापिस आई तो प्रिया बाथरूम के बाहर पड़ी हुई थी। उन्होंने शोर मचाया तो आसपास के लोग इकट्ठा हो गए। इसके बाद युवती को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

विष्णु धाम जाने के लिए भाया जीवन बाग सड़क की स्थिति काफी दयनीय

रिपोर्ट – प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के राजकीय मध्य विद्यालय से होकर गुजरने वाली सड़क जो जीवनबाग गांव के समीप से होकर गुजरती है उस सड़क की स्थिति काफी जर्जर है। एक दशक पूर्व इस सड़क का मरमतीकरण कार्य किया गया था लेकिन उसके बाद से मरम्मतीकरण के अभाव में सड़क काफी जर्जर हो चुका है एवं सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे हैं।दो पहिया, चार पहिया वाहन से चलना तो दूर बरसात के दिनों में पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है।आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि इस सड़क का टेंडर हुआ था लेकिन तकनीकी कारणों से सड़क का रूट मैप जम्होर बाजार से

होकर चला गया जिसके कारण यह रोड अब तक नहीं बन सका है। मरम्मतीकरण के अभाव में दिनों दिन इस सड़क की स्थिति दयनीय होती जा रही है।इस वर्ष विष्णु धाम महोत्सव को राजकीय दर्जा भी दिया जा चुका है।विष्णु धाम पहुंचने के लिए स्टेशन मार्ग से सबसे नजदीक सड़क यही है। धर्मशाला से होकर विष्णु धाम जाने में 1 किलोमीटर की दूरी अधिक पड़ती है इसलिए इस सड़क को यदि मरम्मतीकरण कार्य किया जाता है तो विष्णु धाम पहुंचने का सबसे सरल एवं सुलभ मार्ग इसी सड़क को माना जाता है।कार्तिक पूर्णिमा के मेले में जहां लाखों की भीड़ विष्णु धाम परिसर में होती है उस लिहाज से भी इस सड़क का मरम्मतीकरण अति आवश्यक है। ग्रामीणों ने इस संबंध में कई बार जनप्रतिनिधियों को इससे संबंधित पत्र प्रेषित भी कराया था लेकिन उस पर कोई सुनवाई नहीं हो चुकी है। इससे बाध्य होकर आसपास के ग्रामीणों ने प्रेस ब्यान जारी कर इस सड़क के मरम्तीकरण के लिए अपनी आवाज उठाई है ताकि यथाशीघ्र इस सड़क का मरमतीकरण कार्य किया जा सके।

लखीसराय पुलिस को मिली बड़ी सफलता, केन बम व बारूद का एक्सपर्ट नक्सली गिरफ्तार

थाना पुलिस व एसटीएफ ने संयुक्त रूप से चार वर्षों से फरार नक्सली को गिरफ्तार किया है.

रंजीत विद्यार्थी

लखीसराय (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत लखीसराय जिले के घोघी बरियारपुर गांव से पकड़ा गया नक्सली मंटू सदा प्रतिनिधि को खैरा स्थानीय थाना पुलिस व एसटीएफ ने संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए चार वर्षों से फरार नक्सली को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने लखीसराय जिले के पीरी बाजार थाना क्षेत्र के घोघी बरियारपुर गांव में छापेमारी कर नक्सली मंटू सदा को गिरफ्तार किया है. मंटू सदा पर खैरा थाना कांड संख्या 203/21 में मामला दर्ज था और वह पिछले चार वर्षों से फरार चल रहा था. गुप्त सूचना के आधार पर एसटीएफ और स्थानीय पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिया. बताते चलें कि नक्सली मंटू सदा पर कई तरह के मामले दर्ज हैं. उसके खिलाफ खैरा थाना में भारतीय दंड विधानसभा के अलावा विशिष्ट पदार्थ अधिनियम एवं यूएपी अधिनियम के विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज हैं. गिरफ्तार नक्सली मंटू सदा केन स्टील बम बनाने और केमिकल लिक्विड जमा करने में एक्सपर्ट था तथा कई सालों से नक्सली संगठन में सक्रिय था. पिछले 4 वर्षों से लगातार वह फरार चल रहा था. जिसके बाद गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई की गयी और उसे गिरफ्तार कर लिया गया. गिरफ्तार नक्सली से पुलिस पूछताछ कर रही है.

जमुई में फिल्मी अंदाज में फरार हुई नई नवेली, दूल्हा पानी लेने उतरा और दुल्हन प्रेमी संग भाग निकली

= जमुई जिले से एक हैरान कर देने वाली खबर सामने आई है।

= शादी के महज पांच दिन बाद विदाई कराकर ससुराल ले जा रहा था.

= दूल्हा जैसे ही रास्ते में पानी लेने के लिए कार से उतरा, उसकी नई नवेली दुल्हन मौका पाकर प्रेमी संग फरार हो गई।

रंजीत विद्यार्थी

जमुई (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत जमुई जिले में एक अजीबोगरीब और फिल्मी अंदाज का मामला सामने आया है। शादी के कुछ ही दिन बाद एक नवविवाहिता ने अपने प्रेमी के साथ भागकर सबको चौंका दिया। झाझा प्रखंड के मछली पट्टी चौक पर यह घटना उस वक्त घटी, जब दूल्हा कार से उतरकर पानी लेने गया और लौटने पर कार से दुल्हन गायब मिली। बारात बांका जिले के कटोरिया थाना क्षेत्र से आई थी और विवाह हंसी-खुशी संपन्न हुआ था। विदाई के पांच दिन बाद जब दुल्हन को ससुराल ले जाया जा रहा था, तो झाझा बाजार पहुंचने पर उसने प्यास लगने की बात कही। दूल्हा जब पानी लेने उतरा, तभी दुल्हन की नजर वहां खड़े अपने पुराने प्रेमी राजू कुमार पर पड़ी और वह मौका पाकर उसी के साथ फरार हो गई। देखते ही देखते यह घटना इलाके में चर्चा का विषय बन गई और मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। लड़की के पिता ने झाझा थाने में मामला दर्ज कराया, जिसमें राजू कुमार के अलावा टुनटुन दास, लखन दास, सुनीता देवी और कारी देवी को साजिश और अपहरण में सहयोग का आरोपी बनाया गया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि लड़की और राजू पहले से संपर्क में थे और भागने की पूरी योजना पहले से तैयार थी। सहेली की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही।

बोले थानाध्यक्ष

थानाध्यक्ष संजय कुमार ने बताया कि लड़की बालिग है और मामला प्रेम प्रसंग से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। फिलहाल पुलिस मामले की छानबीन कर रही है और लड़की की तलाश जारी है। यह पूरी घटना अब जमुई जिले में लोगों के बीच चर्चा का सबसे बड़ा मुद्दा बनी हुई है।

परमाणु हथियार और खतरे के मुहाने

>> विचार

> “ 1970 के दशक में जब भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिए थे, तब से यहां आर्मी कार्प्स ऑफ इंजीनियर्स संस्था ने सैन्य और परमाणु अनुसंधान संबंधी लक्ष्य पूरे करने के लिए यहां काम शुरू किया। यहीं पाक वायुसेना के रडार स्टेशन है। भारतीय वायुसेना ने किराना हिल्स से मात्र 22 किमी दूरी पर स्थित सरगोधा एयरबेस सटीक हमले किए। सेना ने ये हमले ड्रोण और मिसाइलों से किए। पाक के सुरक्षा उपकरण इन हमलों से एयरबेस की रक्षा करने में असफल रहे। इन हमलों के बाद ही पाकिस्तान युद्ध विराम के लिए शरणागत हुआ। अमेरिकी गुप्तचर संस्था सीआईए के पूर्व वरिष्ठ खुफिया अधिकारी केविन हलबर्ट की बात मानें तो पाकिस्तान दुनिया के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक देशों में से एक है।

प्रमोद भार्गव

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारतीय राजनीतिक नेतृत्व की दृढ़ता और तीनों सेनाओं ने जिस षौर्य का प्रदर्षन किया है, उससे देष का माथा गर्व से ऊंचा है, लेकिन पाकिस्तान के पास परमाणु हथियार सुरक्षित रहने के औचित्य पर सवाल उठने लगे हैं। क्योंकि भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान स्थित जिन आतंकी ठिकानों पर हमले किए हैं, उनसे साफ हो गया है कि पाक सेना आतंकवादियों को संरक्षण दे ही रही है, आतंकी सेना के भेश में भी सीमा पर लड़ाई और घुसपैठ करते हैं। अतएव यदि पाकिस्तान के परमाणु हथियार वाईदवे आतंकियों के हाथ आ जाते हैं, तो तो वे इन हथियारों का इस्तेमाल करके मानवता को संकट में डाल सकते हैं ? अतएव रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस परिप्रेक्ष्य में कहा है कि वैश्विक समुदाय को विचार करने की जरूरत है कि पाकिस्तान जैसे दुष्ट देश के पास क्या परमाणु हथियारों का होना उचित है, सिंह ने जोर देकर कहा कि ‘अंतरराश्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी‘ पाकिस्तान के परमाणु हथियारों को अपनी निगरानी एवं नियंत्रण में ले। हालांकि भारत ने अब आतंकवाद के विरुद्ध भारत की नीति को नए सिरे से परिभाषित किया है। अब भारत की धरती पर होने वाले आतंकी हमलों को युद्ध की कार्यवाही माना जाएगा। वस्तुतः भारत की ओर से चेतावनी दे दी गई है कि यदि पाकिस्तान आतंकवाद जारी रखता है तो इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। अर्थात कह सकते हैं कि भारत पाक के परमाणु हथियारों के जखीरे और संयंत्रों को नश्ट कर सकता है। हालांकि भारत समेत कई बड़े देष उपग्रहों से परमाणु हथियारों पर गंभीर नजर रखते हैं। परमाणु षक्ति से कूटनीतिक और सैन्य दबाव भी बनाए जाते है। अंतरराश्ट्रीय कानून परमाणु बम के उपयोग को मानवता के विरुद्ध अमानुशिक कृत्य मानते हैं। इनके उपयोग के बाद संयुक्त राश्ट्र सुरक्षा परिशद (यूएनएससी) के कठोर आर्थिक व राजनीतिक प्रतिबंधों का सामना भी करना पड़ता है। इसीलिए भारत ने पहलगाम के बदले में पाकिस्तान के हवाई अड्ढो, सैन्य ठिकानों और अन्य रक्षा केंद्रों पर सावधानी बरतते हुए हमले किए। वरना भारतीय वायुसेना ने पाक के परमाणु ठिकानों के इर्द-गिर्द अत्यंत सटीक हमले कर दिए थे। इसी से घबराकर पाकिस्तान, अमेरिका और चीन के समक्ष गिड़गिड़ाया और युद्ध विराम कराने में सफल हो गया। दरअसल पाक के पंजाब के सरगोधा जिले में किराना हिल्स नाम से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सुरक्षित भौगोलिक स्थल है। यह मुषफ एयरफोर्स बेस का हिस्सा है। यह चट्टानी पहाड़ियों रक्षा और सैन्य गतिविधियों में अपनी अहम् भूमिका के चलते रणनीतिक एवं सामरिक महत्व का स्थल है। इस भू-भाग का

रंग भूरा है, इसलिए इसे कला पर्वत भी कहा जाता है। 260 वर्ग किमी क्षेत्रफल में ये पहाड़ियां फैली हुई हैं। इसकी चोटियों की औसत ऊंचाई 600 फुट तक है। इस कारण इसे सुरक्षित क्षेत्र माना जाता है। यहीं पाक का भूमिगत परमाणु ढांचा है। परमाणु हथियार रखने के लिए यहां 10 किलेबंद सुरंगे बनाई गई हैं। ये सुरंगें बहुस्तरीय रक्षाप्रणाली से ढकी हुई है। 1970 के दशक में जब भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिए थे, तब से यहां आर्मी कार्प्स ऑफ इंजीनियर्स संस्था ने सैन्य और परमाणु अनुसंधान संबंधी लक्ष्य पूरे करने के लिए यहां काम षुरू किया। यहीं पाक वायुसेना के रडार स्टेशन है। भारतीय वायुसेना ने किराना हिल्स से मात्र 22 किमी दूरी पर स्थित सरगोधा एयरबेस सटीक हमले किए। सेना ने ये हमले ड्रोण और मिसाइलों से किए। पाक के सुरक्षा उपकरण इन हमलों से एयरबेस की रक्षा करने में असफल रहे। इन हमलों के बाद ही पाकिस्तान युद्ध विराम के लिए शरणागत हुआ। अमेरिकी गुप्तचर संस्था सीआईए के पूर्व वरिश्ठ खुफिया अधिकारी केविन हलबर्ट की बात मानें तो पाकिस्तान दुनिया के लिए सबसे ज्यादा खतरनाक देषों में से एक है। पाकिस्तान की यह खुंखार और डरावनी सूरत इसलिए बन गई है, क्योंकि तीन तरह के जोखिम इस देष में खतरनाक ढंग से बढ़ रहे हैं। एक आतंकवाद, दूसरे ढह रही अर्थव्यवस्था और तीसरे परमाणु हथियारों का जरूरत से ज्यादा भंडारण। दुनियाभर में अंतरराश्ट्रीय षांति और सुरक्षा के लिए सक्रिय संस्था स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान की जनवरी 2024 में जारी रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के पास 170 और भारत के पास 172 परमाणु हथियार हैं। इसीलिए पाकिस्तान भारत को परमाणु हमले की धमकी देता रहा है। मानव स्वभाव में प्रतिषोध और ईश्र्या दो ऐसे तत्व हैं, जो व्यक्ति को विवेक और संयम का साथ छोड़ देने को मजबूर कर देते हैं। इस स्वभाव को क्रूरतम परिणति में बदलते हुए हम अमेरिका को देख चुके हैं। उसने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमले किए थे। अमेरिका ने हमले का जघन्य अपराध उस नाजुक परिस्थिति में किया था, जब जापान इस हमले के पहले ही लगभग पराजय स्वीकार कर चुका था। इस दृश्टि से पाकिस्तान और उसके सरपरस्त आतंकवादियों पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता है। हालांकि अब भारत ने आतंकियों की कमर तोड़ दी है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के शहर हिरोशिमा पर 6 अगस्त और नागासाकी पर 9 अगस्त 1945 को परमाणु बम गिराए थे। इन बमों से हुए विस्फोट और विस्फोट से फूटने वाली रेडियोधर्मी विकिरण के कारण लाखों लोग तो मरे ही, हजारों लोग अनेक वर्षों तक लाइलाज बीमारियों की भी गिरफ्त में रहे। विकिरण प्रभावित क्षेत्र में दशकों तक अपंग बच्चों के पैदा होने का सिलसिला जारी रहा। अपवादस्वरूप आज भी इस इलाके में लगड़े-लूले बच्चे पैदा होते हैं। अमेरिका ने पहला परीक्षण 1945 में किया था। तब आणविक हथियार निर्माण की पहली अवस्था में थे, किंतु तब से लेकर अब तक घातक से घातक परमाणु हथियार निर्माण की दिषा में बहुत प्रगति हो चुकी है। लिहाजा अब इन हथियारों का इस्तेमाल होता है तो बर्बादी की विभीषिका हिरोशिमा और नागासाकी से कहीं ज्यादा भयावह होगी ? इसलिए कहा जा रहा है कि आज दुनिया के पास इतनी बड़ी मात्रा में परमाणु हथियार हैं कि समूची धरती को एक बार नहीं, अनेक बार नश्ट-भ्रश्ट किया जा सकता है। दुनिया के पास इस समय लगभग 12,119 परमाणु हथियार हैं। जापान के आणविक विध्वंस से विचलित होकर ही 9 जुलाई 1955 को महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन और प्रसिद्ध ब्रिटिष दार्षनिक बर्ट्रेंड रसेल ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी करके आणविक युद्ध से फैलने वाली तबाही की ओर इषारा करते हुए षांति के उपाय अपनाने का संदेष देते हुए कहा था, ‘यह तय है कि तीसरे विष्व-युद्ध में परमाणु हथियारों का प्रयोग निष्चित किया जाएगा। इस कारण मनुश्य जाति के लिए अस्तित्व का संकट पैदा हो जाएगा। किंतु चैथा विष्व-युद्ध लाठी और पत्थरों से लड़ा जाएगा।‘ इसलिए इस विज्ञप्ति में यह भी आगाह किया था कि नरसंहार की आशंका वाले सभी हथियारों को नष्ट कर देना चाहिए। तय है, भविष्य में दो देशों के बीच हुए युद्ध की परिणति यदि विश्व-युद्ध में बदलती है और परमाणु हमले षुरू हो जाते हैं तो हालात कल्पना से कहीं ज्यादा डरावने होंगे। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इस भयावहता का अनुभव कर लिया था, इसलिए उन्होंने संयुक्त राष्ट्र में आणविक अस्त्रों के समूल नाश का प्रस्ताव रखा था। लेकिन परमाणु महाशक्तियों ने इस प्रस्ताव में कोई रुचि नहीं दिखाई, क्योंकि परमाणु प्रभुत्व में ही, उनकी वीटो-शक्ति अंतर्निहित है। अब तो परमाणु शक्ति संपन्न देश, कई देशों से असैन्य परमाणु समझौते करके यूरेनियम का व्यापार कर रहे हैं। परमाणु ऊर्जा और स्वास्थ्य सेवा की ओट में ही कई देश परमाणु-शक्ति से संपन्न देश बने हैं और हथियारों का जखीरा इकट्ठा करते चले जा रहे हैं। पाकिस्तान ऐसा ही देश है। दुनिया में फिलहाल 9 परमाणु शक्ति संपन्न देश हैं। ये हैं, अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन, ब्रिटेन, भारत, पाकिस्तान, इजराइल और उत्तर कोरिया। इनमें अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन और ब्रिटेन के पास परमाणु बमों का इतना बड़ा भंडार है कि वे दुनिया को कई बार नष्ट कर सकते हैं। हालांकि ये पांचों देश परमाणु अप्रसार संधि में शामिल हैं। इस संधि का मुख्य उद्देश्य परमाणु हथियार व इसके निर्माण की तकनीक को प्रतिबंधित बनाए रखना है। हालांकि ये देश इस मकसद पूर्ति में सफल नहीं रहे। पाकिस्तान ने ही तस्करी के जरिए उत्तर कोरिया को परमाणु हथियार निर्माण की तकनीक हस्तांतरित की और वह आज परमाणु शक्ति संपन्न नया देश बन गया है।

संपादकीय

लालू परिवार और उसकी सियासत

लालू प्रसाद यादव का अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी और परिवार से निष्कासित करना डैमेज कंट्रोल की एक कोशिश है। हालांकि इस पूरे प्रकरण से बिहार विधानसभा चुनाव से पहले पख्रऊके लिए एक नई मुसीबत तो खड़ी ही हो गई है। भले यह मामला तेज प्रताप के निजी जीवन से जुड़ा हो, लेकिन उन पर जिस तरह का एक्शन हुआ, उससे जाहिर है कि इसकी परछाई लालू परिवार और उसकी सियासत पर पड़ने का भी डर है।

विवादों से नाता : तेज प्रताप ने 2015 में पहला चुनाव लड़ा था और नीतीश सरकार में स्वास्थ्य व पर्यावरण मंत्री बने थे। तब से अभी तक वह कई बार असहज स्थिति पैदा कर चुके हैं और हर बार परिवार-पार्टी को उनके बचाव में उतरना पड़ा। लेकिन, उनकी कुछ हरकतों ने आरजेडी के परंपरागत समर्थक वर्ग को भी नाराज किया था। बिहार के पूर्व सीएम दरोगा राय की पौत्री के साथ उनकी असफल शादी और अब तलाक का केस पूरे परिवार की किरकिरी करा चुका है।

उत्तराधिकार की लड़ाई : आरजेडी में अपनी भूमिका और कद को लेकर तेज प्रताप कभी संतुष्ट नहीं दिखाई दिए। लालू के उत्तराधिकार के लिए दोनों भाइयों के बीच होड़ की खबरें आती रहीं और यह लड़ाई 2019 के लोकसभा चुनाव से ठीक पहले उस समय सतह पर आ गई, जब तेज प्रताप ने एक अलग मोर्चा ही बना दिया। 2020 के विधानसभा चुनाव में यह स्पष्ट हो गया कि लालू ने अपना उत्तराधिकारी तेजस्वी को चुन लिया है। इस बार आरजेडी का पूरा जोर है कि चुनावी मैदान में उतरने से पहले महागठबंधन की तरफ से सीएम पद का चेहरा तेजस्वी को घोषित कर दिया जाए। हालांकि इसके लिए सभी सहयोगी दलों के बीच सहमति बनाना थोड़ा मुश्किल हो रहा है।

सीट बंटवारे का दबाव : पिछले विधानसभा चुनाव में 75 सीटों के साथ आरजेडी राज्य में सबसे बड़ा दल बनकर उभरा था। पार्टी अपना वही दबदबा गठबंधन के भीतर भी कायम रखना चाहती है, जबकि कांग्रेस ने संकेत दिए हैं कि उसे पिछलग्गू नहीं, बराबरी का दर्जा चाहिए। पिछले दिनों अपनी राज्य इकाई में बदलाव कर उसने यह मेसेज दे दिया था। आरजेडी के सामने सीट बंटवारे की चुनौती है। उस पर कांग्रेस ही नहीं, वामदल और मुकेश सहनी की वीआईपी जैसे घटक दलों का भी दबाव है।

न्याय की भाषा में बदलाव की दस्तक

उमेश चतुर्वेदी

बीते 14 मई को राष्ट्रपति भवन में हिंदी के प्रयोग ने एक नया इतिहास रच दिया। देश के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई का शपथ ग्रहण समारोह ऐतिहासिक बन गया। उन्होंने हिंदी में शपथ लेकर एक नई परंपरा की शुरुआत की। अब तक सभी मुख्य न्यायाधीश अंग्रेज़ी में ही शपथ लेते रहे हैं। देश के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसी प्रमुख हस्तियां पहले से ही हिंदी में शपथ लेते रहे हैं, लेकिन न्यायपालिका का सवोच्च पद अब तक इससे अछूता था। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र से ताल्लुक रखने वाले न्यायमूर्ति गवई ने हिंदी में शपथ लेकर उस परंपरा को तोड़ा और न्यायपालिका में अब तक उपेक्षित रही हिंदी को सम्मान दिया। उनके इस निर्णय का विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत किया जा रहा है। अपने शपथ ग्रहण में मातृभाषा का प्रयोग कर न्यायमूर्ति गवई ने देश के करोड़ों हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रेमियों को एक नई उम्मीद से भर दिया है। लोगों को आशा है कि उनके नेतृत्व में न्यायपालिका में हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान और स्थान प्राप्त होगा। यह विडंबना ही है कि छह वर्ष पूर्व संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की अदालतों में हिंदी में सुनवाई की अनुमति दी जा चुकी है, जबकि भारत की सवोच्च न्यायपालिका आज भी अंग्रेज़ी तक ही सीमित है। न्यायमूर्ति गवई से अपेक्षाएं इसलिए भी हैं क्योंकि उनके पद में महत्वपूर्ण अधिकार निहित हैं। मुख्य न्यायाधीश की सहमति के बिना किसी भी उच्च न्यायालय में कार्यवाही की भाषा स्थानीय नहीं बन सकती। संविधान के अनुच्छेद 348 (1)(ए) के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट और सभी हाईकोर्ट की कार्यवाही

अंग्रेज़ी में ही की जाएगी। हालांकि, इसी अनुच्छेद के भाग (2) में यह प्रावधान भी है कि यदि कोई राज्य अपनी राजभाषा में न्यायिक कार्य करना चाहता है, तो राज्यपाल राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त कर संबंधित हाईकोर्ट की कार्यवाही में हिंदी या राज्य की अन्य आधिकारिक भाषा के प्रयोग की अनुमति दे सकता है। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 7 में भी इसी तरह का प्रावधान किया गया है। इसके तहत राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से, उच्च न्यायालय के निर्णय या आदेशों के लिए अंग्रेज़ी के साथ-साथ हिंदी या राज्य की अन्य राजभाषा के प्रयोग को अनुमति दे सकता है। दुर्भाग्यवश, इन संवैधानिक और विधिक प्रावधानों के बावजूद, आज तक इनका उपयोग बहुत सीमित रहा है। संविधान के प्रावधानों के तहत हिंदी को 26 जनवरी, 1965 से राजभाषा के तौर पर पूरे देश में कामकाज करने की अनुमति मिलनी थी। लेकिन इसके खिलाफ तीखे विरोध के साथ तमिलनाडु की द्रविड़ राजनीति मैदान में कूद पड़ी थी। हालांकि, जब उसे अहसास हुआ कि गणतंत्र दिवस पर ऐसा करना उचित नहीं होगा तो एक दिन पहले यानी 25 जनवरी को उसने ऐसा किया। राजभाषा को लेकर होते रहे ऐसे विवादों की वजह से राजभाषा नीति पर विचार के लिए मंत्रिमंडल समिति का गठन किया गया। जिसने 21 मई, 1965 की अपनी बैठक में यह तय किया कि हाईकोर्ट में अंग्रेजी के अलावा किसी अन्य भाषा के प्रयोग से संबंधित प्रस्ताव पर देश के मुख्य न्यायाधीश की सहमति प्राप्त की जानी चाहिए। भारतीय भाषा प्रेमियों की नजर में यह प्रावधान भारतीय भाषाओं की न्याय की भाषा बनने की राह में सबसे बड़ी बाधा है। सांविधानिक प्रावधान के अंतर्गत हिंदी में कामकाज की अनुमति सबसे पहले राजस्थान को हासिल हुई, जिसे हिंदी में कार्यवाही की अनुमति 1950 में मिली। इलाहाबाद हाईकोर्ट में हिंदी कार्यवाही की अनुमति 1969 में मिली, जबकि मध्य प्रदेश को 1971 और बिहार को 1972 में मिली। कई राज्य ऐसे हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपनी भाषाओं में अपने हाईकोर्ट में कार्यवाही चलाने की अनुमति मांगी, लेकिन उन्हें नाकामी ही मिली। यद्यपि तमाम सांविधानिक प्रावधानों और उनकी बाधा के बावजूद भारतीय भाषा प्रेमियों का उत्साह कम नहीं हुआ। वे भारतीय भाषाओं को न्यायपालिका की भाषा बनाने की मांग करते रहे हैं। इसका असर उच्च न्यायपालिका पर भी पड़ा है। बेशक न्यायिक कार्यवाही भारतीय भाषाओं में नहीं हो रही है, लेकिन फैसलों और न्यायिक कार्यवाही तक आम लोगों की सहज पहुंच बनाने की दिशा न्यायलय आगे बढ़े हैं। इसके तहत कार्यवाही और निर्णयों का अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने न्यायमूर्ति अभय एस ओका की अध्यक्षता में एआई सहायता प्राप्त कानूनी अनुवाद सलाहकार समिति का गठन किया है। इसके जरिए अब तक 16 भाषाओं में हजारों फैसलों आदि का अनुवाद किया जा रहा है। ओका समिति की तरह सभी हाईकोर्टों ने भी अपने यहां अनुवाद के लिए समितियां बनाई हैं। कानून और न्याय मंत्रालय के अधीन बार काउंसिल ऑफ इंडिया ने देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस.ए. बोबडे की अध्यक्षता में ‘भारतीय भाषा समिति’ का भी गठन किया है। यह समिति कानूनी सामग्री का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के उद्देश्य से सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक समान शब्दावली विकसित कर रही है।

जल जीवन की धार को सुचारू करने की जरूरत

हरि ॐ पंजवानीधर

जल किसी भी व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता होता है। जल बिन जीवन संभव नहीं है। इसलिए हर व्यक्ति, हर परिवार की दिनचर्या की शुरुआत जल की व्यवस्था से ही होती है। और यह एक उजागर तथ्य है कि देश में जल प्रबंधन की स्थिति अच्छी नहीं है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में दुरूह ढाणियों और कस्बों में तो पानी का इंतजाम कर पाना दुष्कर कार्य है। मीलों दूर से पानी लाने तक की मजबूरी से करोड़ों परिवार रूबरू हैं। हर परिवार का घंटों का समय और श्रम प्रतिदिन इसमें जाया हो रहा है। इसके बावजूद यह आश्वस्त होकर नहीं कहा जा सकता कि घर की जरूरत के लिए पर्याप्त पानी उन्हें मिल ही जाएगा और वह शुद्ध होगा। ऐसे करोड़ों परिवारों की हर रोज की पानी के लिए भटकने की जद्दोजहद और तकलीफ दूर करने के लिए ही केंद्र सरकार ने राज्यों के सहयोग से 2019 में जल जीवन मिशन की अवधारणा दी थी। इस अवधारणा का फायदा हुआ है और तस्वीर भी बदली है। प्रारंभिक आकलन में जिन सोलह करोड़ परिवारों को जल से सर्वथा वंचित माना गया था, उनमें 12.31 करोड़ परिवारों के घरों में नल की व्यवस्था हो

चुकी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि लक्ष्य की लगभग 80 प्रतिशत उपलब्धि का यह आंकड़ा अच्छा है, लेकिन इस पर संतोष नहीं किया जा सकता। इसलिए कि मूल परियोजना में यह सारा काम वर्ष 2024 तक पूरा कर देना था। पांच महीने ज्यादा हो चुके हैं और अभी लक्ष्य से 20 प्रतिशत दूर हैं। परियोजना की यही गति चलती रही तो अभी डेढ़ साल और लगेगा। इसका अर्थ है कि परियोजना लगभग दो साल विलंबित हो चुकी है। यह सवाल नीति नियंताओं को सोचना होगा कि देश की लगभग हर परियोजना विलंबित क्यों होती है? जल जीवन मिशन में तो उन्हें यह सोचने के साथ ये पहलू भी देखने हैं कि राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे कुछ राज्यों में परियोजना घोटालों की पटरी पर कैसे चली गई? निगरानी तंत्र क्या कर रहा था? केंद्र सरकार के पास ही जो रिपोर्ट्स पहुंची हैं, उसके मुताबिक अकेले राजस्थान और मध्यप्रदेश में ही परियोजना के 48 भागों में गड़बड़ियां हुई हैं। उत्तरप्रदेश, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल भी अनियमितताओं से अछूते नहीं हैं। यह जानकारी भी धरातल पर आ चुकी है कि परियोजना के पूर्ण हिस्सों में भी काफी स्थानों पर घरों में पानी नहीं पहुंचा है। इतने व्यापक स्तर पर गड़बड़ियां हैं कि केंद्र को इनकी जांच के लिए 100 टीमें लगानी पड़ी हैं। कब ये टीमें जांच में लगेंगी और कब जांच पूरी होगी? कार्रवाई का चरण इसके बाद ही आएगा। तब तक परियोजना कितनी प्रभावित हो जाएगी, अंदाजा ही लगाया जा सकता है। जल जीवन मिशन में जो नुकसान हो चुका है, उसकी भरपाई नहीं की जा सकती। लेकिन, आगे नुकसान न हो और जो नुकसान हो चुका है, उसकी भरपाई के कदम उठाए जा सकते हैं। यह काम तुरंत होना चाहिए।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा विजय प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित तथा 302, मां तारा कंपलेक्स, नारायण मूर्ति पथ, नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड पटना से प्रकाशित! संपादक सरोज चौधरी, R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

डिफेंस पीएसयू की रक्षा मंत्री ने की समीक्षा, 'ऑपरेशन सिंदूर' में योगदान को सराहा

नई दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली स्थित साउथ ब्लॉक में सार्वजनिक क्षेत्र के रक्षा उपक्रमों की समीक्षा की। मंत्रालय में उन्होंने रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र यानी डिफेंस पीएसयू से जुड़े आठ उपक्रमों के अध्यक्षों एवं प्रबंध निदेशकों के साथ यह समीक्षा बैठक की। रक्षा मंत्री ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान भारतीय सशस्त्र बलों की तैयारियों को प्रदर्शित करने वाले प्लेटफॉर्म और तकनीकों के विकास में रक्षा उद्योग, विशेष रूप से डिफेंस पीएसयू की भूमिका की सराहना की। गौरतलब है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' में स्वदेशी रक्षा उपकरणों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। खास तौर पर स्वदेशी एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तानी सेना द्वारा भेजे गए ड्रोन और हवाई हमलों को निष्क्रिय कर उन्हें सफलतापूर्वक मार गिराया। समीक्षा बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार देश के रक्षा औद्योगिक आधार को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रही है। साथ ही सरकार डिफेंस पीएसयू की वैश्विक प्रतिस्पर्धा क्षमता को बढ़ाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों और हालिया घटनाक्रमों के मद्देनजर रक्षा मंत्री ने विभिन्न डिफेंस पीएसयू को आधुनिक युद्ध की उभरती तकनीकों पर अधिक अनुसंधान एवं विकास करने को कहा।

कांग्रेस ने गौरव गोगोई को असम का अध्यक्ष किया नियुक्त, पार्टी सांसद ने कही ये बात

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी ने असम के पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत तरूण गोगोई के बेटे गौरव गोगोई को राज्य का नया अध्यक्ष बनाया है। वह भूपेन कुमार बोरा की जगह लेंगे। इसकी जानकारी कांग्रेस पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने दी। इसके साथ ही कांग्रेस ने असम में तीन कार्यकारी अध्यक्ष भी बनाए हैं, जिनमें जाकिर हुसैन सिकदर, रोजलीना तिर्की और प्रदीप सरकार शामिल हैं।वहीं, असम में कांग्रेस का अध्यक्ष बनाए जाने पर पार्टी सांसद गौरव गोगोई ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि असम में कांग्रेस पार्टी में इतने समर्पित और प्रेरक वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ काम करना सौभाग्य की बात है। आने वाले दिनों में मैं असम के लोगों का आशीर्वाद मांगूंगा। मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर अपने राज्य का बेहतर भविष्य बना सकते हैं। लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, विपक्ष के नेता राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल और जितेंद्र सिंह अलवर का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी। पूर्व पीसीसी अध्यक्ष भूपेन कुमार बोरा ने पार्टी का नेतृत्व किया और बहुत बड़ा योगदान दिया।

शराब कंपनी व्हिस्की के नाम से तुरंत 'त्रिकाल' शब्द हटाए : प्रवीण खंडेलवाल

नई दिल्ली । रेडिको खेतान की 'त्रिकाल' व्हिस्की पर बढ़ते विवाद के बीच भाजपा सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने शराब कंपनी से मांग की है कि वह तुरंत लेबल से 'त्रिकाल' शब्द हटाए। प्रवीण खंडेलवाल ने समाचार एजेंसी से बातचीत के दौरान कहा कि निश्चित रूप से यह गंभीर चिंता का विषय है कि ब्रांड कंपनियां अपने प्रचार और निजी लाभ के लिए हमारे धार्मिक नामों को अपनाती हैं। मैं मांग करता हूं कि ये कंपनियां तुरंत ऐसे नाम बदलें। हमारी संस्कृति और विरासत से जुड़ा कोई भी नाम शराब की बोतल पर होता है तो हम सभी के लिए बेहद शर्मनाक है। राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव के अपने बड़े बेटे तेज प्रताप यादव को पार्टी और परिवार से निकाले जाने पर भाजपा सांसद ने कहा, मैं पारिवारिक मामलों पर टिप्पणी नहीं करूंगा। यह उनका निजी मामला है। लेकिन जहां तक लालू यादव द्वारा की जा रही नैतिकता की बात है, मेरा एक ही सवाल है - जब लालू यादव मुख्यमंत्री थे और बाद में जब राबड़ी देवी उसी पद पर थीं, तब वह नैतिकता कहां थी? उस दौरान कई घोटाले हुए थे। इसलिए, लालू यादव आज जिस नैतिकता की बात कर रहे हैं, उसकी तुलना उनके खुद के कार्यकाल की नैतिकता से करने पर गंभीर सवाल उठते हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नए सीजेआई बी.आर. गवई के स्वागत में रात्रिभोज का किया आयोजन

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने हाल ही में पदभार संभालने वाले भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) न्यायमूर्ति भूषण रामकृष्ण गवई के सम्मान में राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में एक भव्य रात्रिभोज का आयोजन किया। इस विशेष अवसर पर देश के शीर्ष संवैधानिक पदाधिकारियों और न्यायपालिका से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। रात्रिभोज में उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर और विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल भी उपस्थित रहे। इसके अलावा, पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशगण, देश भर के उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस समारोह में शामिल हुए। बता दें कि जस्टिस बी.आर. गवई ने 14 मई को देश के 52वें सीजीआई के रूप में शपथ ली थी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने उन्हें शपथ दिलाई थी। गवई देश के दूसरे दलित मुख्य न्यायाधीश हैं।

थल सेना, नौसेना और वायुसेना प्रमुखों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' का लाइव प्रसारण देखा, सेना ने जारी की तस्वीर

एजेंसी
नई दिल्ली। भारतीय सेना के वॉर रुम से कुछ दुर्लभ और चौंकाने वाली तस्वीरें सामने आई हैं। ये तस्वीरें 7 मई को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओजेके) में आतंकवादी बुनियादी ढांचे के खिलाफ भारतीय सेना द्वारा किए गए सटीक सैन्य हमले 'ऑपरेशन सिंदूर'' के पीछे की झलक पेश करती है। तस्वीरों में थल सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल डीके त्रिपाठी और वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह कंधे से कंधा मिलाकर खड़े और उच्च सुरक्षा वाले कमांड सेंटर में ऑपरेशन की वास्तविक अपडेट पर नजर रखते हुए नजर आ रहे हैं। उनके साथ सेना के एक और वरिष्ठ अधिकारी भी दिखाई दे रहे हैं। भारतीय सशस्त्र बलों के शीर्ष अधिकारी पाकिस्तान स्थित आतंकी ठिकानों के खिलाफ हमले की निगरानी करते दिख रहे हैं।

दूसरी तस्वीर, जो रात 1:05 बजे की है, वह 'ऑपरेशन सिंदूर' के शुरू होने के समय की है। जनरल द्विवेदी और वरिष्ठ अधिकारी ड्रोन फुटेज और सैटेलाइट तस्वीरों के लाइव प्रसारण को ध्यान से देख रहे हैं। भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान, ड्रोन और नौसेना के उपकरण 9 आतंकी ठिकानों पर सटीक हमले कर रहे हैं। ये ठिकाने उन प्रमुख आतंकी संगठनों के शिविर थे, जिन्हें पाकिस्तान का समर्थन मिल रहा था। सेना के आधिकारिक विवरण के अनुसार, इस सटीक ऑपरेशन में 140 से ज्यादा आतंकवादी मारे गए। इस हमले में कथित तौर पर स्कैल्प क्रूज मिसाइल, लेजर-गाइडेड बम और सशस्त्र यूएवी का इस्तेमाल किया गया, जिससे भारत के सशस्त्र बलों की एकजुटता और तकनीकी बढ़त का पता चलता है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय सेना द्वारा इन तस्वीरों का जारी करना एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल भारत के सैन्य नेतृत्व की कुशल क्षमता को दर्शाता है, बल्कि पाकिस्तान या कहीं और से आने वाले सीमा पार खतरों को बेअसर करने के लिए भारत की तत्परता और दृढ़ संकल्प का भी एक मजबूत रणनीतिक संदेश देता है। भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दायरे, समन्वय और कार्यान्वयन के बारे में अपने कर्मियों को जानकारी देने के लिए एक आंतरिक पुस्तिका भी प्रकाशित की है। यह एक दुर्लभ कदम है, जो इन हमलों के पैमाने और महत्व को दर्शाता है। इन तस्वीरों के साथ, भारतीय सशस्त्र बलों ने एक साहसिक बयान दिया है। बयान में कहा गया है कि जब राष्ट्रीय सुरक्षा की बात आती है, तो शीर्ष अधिकारी न केवल कमान में हैं, बल्कि वह युद्ध कक्ष में भी मौजूद हैं।

केंद्रीय मंत्री नायडू से मिले उप मुख्यमंत्री शुक्ल, विंध्य क्षेत्र में हवाई सेवाओं के विस्तार पर की चर्चा

एजेंसी
नई दिल्ली। मध्य प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने नई दिल्ली में केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राम मोहन नायडू से सौजन्य भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने विंध्य क्षेत्र में हवाई सेवाओं के विस्तार पर सार्थक चर्चा की। उप मुख्यमंत्री ने रीवा से इंदौर, हैदराबाद, दिल्ली और प्रयागराज जैसे प्रमुख नगरों के लिए एटीआर-72 विमानों के माध्यम से नियमित उड़ानों की आवश्यकता एवं जनसामान्य की अपेक्षाओं से केंद्रीय मंत्री नायडू को अवगत कराया। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि रीवा एयरपोर्ट से इन महानगरों के लिए हवाई संपर्क स्थापित होने से क्षेत्रीय व्यापार, शिक्षा, पर्यटन एवं स्वास्थ्य सेवाओं को नई गति मिलेगी।

साथ ही रीवा सहित पूरे विंध्य क्षेत्र को समावेशी विकास में समुचित स्थान मिलेगा। केंद्रीय मंत्री नायडू ने प्रस्तुत सुझावों और मांगों पर आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने का भरोसा दिलाया।

कोरोना के मामलों में बढ़ोतरी चिंता की बात नहीं है : आईसीएमआर चीफ

एजेंसी
नई दिल्ली। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के महानिदेशक डॉ. राजीव बहल ने कहा कि भारत में कोविड-19 संक्रमण बढ़ रहा है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि ये गंभीर नहीं हैं।

बहल ने आश्वासन दिया कि सरकार सक्रिय रूप से मामलों की निगरानी कर रही है।स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी नए आंकड़ों के अनुसार, भारत में कोविड के 1,009 मामले हैं, जिनमें केरल (430), महाराष्ट्र (209) और दिल्ली (104) में मामले दर्ज किए गए हैं। इसके अलावा, महाराष्ट्र (4), केरल (2) और कर्नाटक (1) में सात मौतें भी हुई हैं। बहल ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि संक्रमण की संख्या में वृद्धि हुई है और हम इस पर कड़ी नजर बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि संख्या बढ़ रही है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है, क्योंकि अभी तक सभी कोविड मामलों में गंभीर मामलों का प्रतिशत आम तौर पर कम

है।स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्थापित भारतीय सार्स-कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, एनबी.1.8.1 और एलएफ.7, जेएन.1 कोविड वैरिएंट, देश में सार्स-कोव-2 मामलों में वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। बहल ने कहा कि ये सब-वेरिएंट प्राकृतिक या वैक्सीन-प्रेरित पिछली प्रतिरक्षा को चकमा दे सकते हैं। हालांकि, उनकी क्षमता पिछले ओमिक्रॉन और अन्य वेरिएंट से कम है। इसके साथ ही, उन्होंने मामलों में वृद्धि की स्थिति में सतर्कता बढ़ाने और तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर दिया।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने की तीन जजों की नियुक्ति की सिफारिश

एजेंसी
नई दिल्ली । भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाले सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने शीर्ष अदालत में तीन जजों की नियुक्ति के संबंध में केंद्र को अपनी सिफारिशें भेजी। जानकारी के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने कर्नाटक हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एन.वी. अंजारिया, गौहाटी हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस विजय बिश्नोई और बॉम्बे हाई कोर्ट के जस्टिस अतुल एस. चंदुरकर के नामों की सिफारिश की है। वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 31 है, जो कि इसके स्वीकृत 34 न्यायाधीशों की संख्या से तीन कम है। इसके अलावा, 9 जून को न्यायमूर्ति बेला एम. त्रिवेदी के सेवानिवृत्त होने पर एक और पद रिक्त हो जाएगा। जस्टिस अंजारिया को नवंबर 2011 में गुजरात हाई कोर्ट के अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था और सितंबर 2023 में उन्हें स्थायी न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया। पिछले साल 25 फरवरी

को उन्होंने कर्नाटक हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली थी। गौहाटी उच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति बिश्नोई को जनवरी 2013 में राजस्थान उच्च न्यायालय का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया था और उन्होंने जनवरी 2015 में राजस्थान उच्च न्यायालय के स्थायी न्यायाधीश के रूप में शपथ ली थी। वहीं, न्यायमूर्ति चंदुरकर को जून 2013 में बॉम्बे उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में पदोन्नत किया गया था।

मौजूदा प्रक्रिया ज्ञापन (एमओपी) के अनुसार, सीजेआई, चार वरिष्ठतम सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीशों के साथ, जिन्हें आमतौर पर कॉलेजियम के रूप में जाना जाता है, शीर्ष अदालत में रिक्तियों को भरने के लिए केंद्र को अपनी सिफारिश भेजते हैं। प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद, केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री प्रधानमंत्री को सिफारिश प्रस्तुत करेंगे, जो नियुक्ति के मामले में राष्ट्रपति को सलाह देंगे। इसके बाद जैसे ही राष्ट्रपति द्वारा नियुक्ति के वारंट पर हस्ताक्षर किए जाएंगे, न्याय विभाग नियुक्ति की घोषणा करेगा और आधिकारिक राजपत्र में आवश्यक अधिसूचना जारी करेगा।

एनआईए ने सीआरपीएफ जवान को किया गिरफ्तार, जासूसी और पाकिस्तान को संवेदनशील जानकारी भेजने का आरोप

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने पाकिस्तानी खुफिया अधिकारियों के साथ संवेदनशील जानकारी साझा करने के आरोप में दिल्ली से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के एक जवान को गिरफ्तार किया है। बल के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। जानकारी के अनुसार, जवान मोती राम जाट जासूसी में सक्रिय रूप से शामिल था। वह 2023 से पाकिस्तानियों के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित गोपनीय जानकारी साझा कर रहा था। एनआईए ने कहा कि एजेंसी यह भी पता लगाने में कामयाब रही है कि वह विभिन्न माध्यमों से पाकिस्तानी अधिकारियों से पैसे प्राप्त करता था। मोती राम जाट की गिरफ्तारी के तुरंत बाद, एनआईए ने उसे पटियाला हाउस कोर्ट में एक विशेष न्यायाधीश के समक्ष पेश किया, जिन्होंने उसे 6 जून तक की

हिरासत में भेज दिया। एनआईए ने उसकी हिरासत की मांग करते हुए अदालत को बताया कि सीआरपीएफ जवान से उन लोगों के बारे में पूछताछ की जानी है, जिनसे वह मिलता था। जांचकर्ताओं ने जासूसी में कथित रूप से शामिल उसके सहयोगियों की पहचान करने के लिए उसे अन्य शहरों में ले जाने की मंशा भी जताई। सीआरपीएफ जवान की गिरफ्तारी भारतीय एजेंसियों द्वारा पिछले करीब एक महीने से पाकिस्तानी जासूसों के खिलाफ की जा रही कार्रवाई का हिस्सा है। हाल ही में हरियाणा की यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा और पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश से 11 अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया है। एनआईए, खुफिया ब्यूरो और सैन्य खुफिया अधिकारियों ने अब तक मल्होत्रा से पूछताछ की है। ज्योति मल्होत्रा एक यूट्यूब चैनल चलाती थी। उसके खिलाफ 16 मई को आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया और बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। खबरों की मानें तो वह नवंबर 2023 से पाकिस्तानी उच्चायोग के कर्मचारी एहसान-उर-रहीम उर्फ दानिश के संपर्क में थी। भारत ने कथित तौर पर जासूसी में लिप्त होने के कारण 13 मई को दानिश को निष्कासित कर दिया था।

मालदीव के विदेश मंत्री ने की पहलगाम हमले की कड़ी निंदा

एजेंसी
नई दिल्ली। भारत यात्रा पर आए मालदीव के विदेश मंत्री डॉ. अब्दुल्ला खलील ने अप्रैल में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने आतंकवाद के सभी स्वरूपों के खिलाफ भारत को मालदीव का पूर्ण समर्थन दोहराया। डॉ. खलील ने इस दौरान भारत की जनता और सरकार के साथ गहरी संवेदना और एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने भारत सरकार को मालदीव को दी गई समय पर आपातकालीन वित्तीय सहायता के लिए धन्यवाद भी दिया। उन्होंने कहा कि इस सहायता से मालदीव की आम जनता के जीवन पर सकारात्मक असर पड़ा है। डॉ. खलील ने आज भारत-मालदीव द्वितीय उच्च स्तरीय कोर ग्रुप (एचएलसीजी) बैठक में भाग लिया। इसमें भारत-मालदीव संयुक्त विजन दस्तावेज़ के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा की गई। बातचीत में राजनीतिक संवाद, रक्षा-सुरक्षा सहयोग, व्यापार, स्वास्थ्य, जनसंपर्क और विकास साझेदारी को तेज़ करने

पर सहमति बनी।विदेश मंत्री डॉ. खलील ने भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। इसमें परस्पर हित के मुद्दों पर चर्चा की गई। दोनों नेताओं ने विश्वास व्यक्त किया कि सहयोग की यह प्रक्रिया भारत और मालदीव के संबंधों को नई ऊंचाई तक ले जाएगी। यह भी तय हुआ कि तीसरी एचएलसीजी बैठक मालदीव की राजधानी माले में पारस्परिक रूप से सुविधाजनक समय पर आयोजित की जाएगी।

डीआरडीओ प्रमुख डॉ समीर वी. कामत का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा

एजेंसी
नई दिल्ली। मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति ने रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग (डीडीआरएंडडी) के सचिव और रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) के अध्यक्ष डॉ समीर वी. कामत का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया है। जारी अधिसूचना में कहा गया कि उनकी सेवा में 01.06.2025 से एक वर्ष की अवधि के लिए 31.05.2026 तक या अगले आदेशों तक, जो भी पहले हो, विस्तार को मंजूरी दे दी है।

डॉ समीर ने 26 अगस्त 2022 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के अध्यक्ष और रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग (डीडीआरएंडडी) के सेक्रेटरी का पदभार संभाला था। डॉ कामत ने वर्ष 1985 में आईआईटी खड़गपुर से मेटलर्जिकल इंजीनियरिंग में बीटेक (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने 1988 में ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका से मैटेरियल्स साइंस एंड इंजीनियरिंग में पीएचडी पूरी की। साल 1989 में उन्होंने डीआरडीओ में साइंटिस्ट के रूप में अपनी सेवाएं शुरू की। डॉ

कामत ने कई एडवांस्ड डिफेंस मेटेरियल प्रोजेक्ट में नेतृत्व किया है। उन्होंने नौसेना जहाजों के लिए मजबूत स्टील, एयरोइंजन के लिए हाई-टेम्परेचर टाइटेनियम और निकल आधारित सुपरलॉय और मिसाइल सिस्टम के लिए रेडोम सामग्री विकसित करने में अहम भूमिका निभाई। इसके अलावा उन्होंने सैनिकों और वाहनों के लिए सुरक्षा कवच और स्टील्थ टेक्नोलॉजी पर भी काम किया है।

डॉ कामत ने एंटी टारपीडो सिस्टम, हल्के टारपीडो, ऑटोनॉमस अंडरवाटर व्हीकल और पनडुब्बियों के लिए अत्याधुनिक ईंधन सेल आधारित प्रणालियों जैसे कई नौसेना प्रोजेक्ट्स को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया है।

मधुबनी-गोंड कलाकारों से मिलीं राष्ट्रपति, कृतियों को सराहा

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने मधुबनी और गोंड कला के कलाकारों ने आर्टिस्ट इन रेजिडेंस कार्यक्रम के तहत मुलाकात की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश की पारंपरिक कला रूपों को प्रदर्शित करना है। मध्य प्रदेश के गोंड कला और बिहार के मधुबनी कला के कलाकार आर्टिस्ट-इन-रेजिडेंस कार्यक्रम के तहत 20 से 27 मई तक राष्ट्रपति भवन में निवास करके अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं। मधुबनी कला के कलाकारों में शांति देवी, अंबिका देवी, मनीषा झा, प्रीति कर्ण, रंजन पासवान, शांति देवी, उर्मिला देवी, श्रवण पासवान, कुमारी नलिनी शाह और मोती कर्ण शामिल हैं। गोंड कला के कलाकारों में दुर्गाबाई व्याम, सुभाष व्याम, नानकुसिया श्याम, राम सिंह उर्वेती, दिलीप श्याम, चंपाकली, हीरामन उर्वेटी और जापानी श्याम धुर्वे शामिल हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कलाकारों की कृतियों को देखा और उनकी सराहना की। उन्होंने कहा कि ये कलाकार भारत की महत्वपूर्ण पारंपरिक कला रूपों में योगदान दे रहे हैं और उन्हें भविष्य में भी अपनी कला को आगे बढ़ाने के लिए शुभकामनाएं दीं।

असम में डिफेंस कॉरिडोर की मांग को लेकर मुख्यमंत्री ने की रक्षा मंत्री से मुलाकात

नई दिल्ली। असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से उनके सरकारी निवास पर मुलाकात की और राज्य में डिफेंस कॉरिडोर की स्थापना के लिए उनके हस्तक्षेप की मांग की। मुख्यमंत्री डॉ. सरमा ने रक्षा मंत्री से आग्रह किया कि असम में डिफेंस कॉरिडोर की स्थापना से पूर्वी सीमांत पर तैनात सशस्त्र बलों की जरूरतें मजबूत होंगी, साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के %मेक इन इंडिया% विजन को गति भी मिलेगी और पूर्वोत्तर क्षेत्र में नए आर्थिक अवसर पैदा होंगे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आश्वासन दिया कि उनका मंत्रालय असम में डिफेंस कॉरिडोर की स्थापना पर सक्रियता से विचार कर रहा है। बाद में मुख्यमंत्री सरमा ने सोशल मीडिशा एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, आज नई दिल्ली में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमने असम में एक डिफेंस कॉरिडोर स्थापित करने पर चर्चा की। यह हमारे सशस्त्र बलों की पूर्वी सीमांत पर आवश्यकताओं को सुदृढ़ करेगा, प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया'

विजन को मजबूती देगा और उत्तर-पूर्व में नए आर्थिक अवसर उत्पन्न करेगा। असम सरकार ने असम एयरोस्पेस एंड डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग पॉलिसी 2025 तैयार की है, जिसका उद्देश्य राज्य को भारत में एयरोस्पेस और रक्षा उत्पादन के एक प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित करना है। यह नीति असम की रणनीतिक स्थिति, बुनियादी ढांचे और प्राकृतिक संसाधनों का लाभ उठाकर निवेश आकर्षित करने और नवाचार को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। राज्य की भौगोलिक स्थिति, दक्षिण-पूर्व एशिया के समीपता और मौजूदा ढांचे को निवेश आकर्षण के लिए लाभदायक माना जा रहा है। इस नीति के तहत पूंजी सब्सिडी, एसजीएसटी की वापसी, परिवहन सब्सिडी और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाएं शामिल हैं। साथ ही रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्र में कुशल मानव संसाधन की जरूरत को पहचानते हुए स्किल डेवलपमेंट के लिए भी प्रोत्साहन प्रदान किया गया है।

वन नेशन वन इलेक्शन से डबल होगी देश के विकास की रफ्तार : रामनाथ कोविंद

एजेंसी
नई दिल्ली । पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद परिवार सहित अपने दो दिवसीय प्रवास पर हरिद्वार के कनखल स्थित हरिहर आश्रम पहुंचे।पूर्व राष्ट्रपति ने वन नेशन वन इलेक्शन पर कहा कि इससे देश में विकास की रफ्तार डबल होगी। इससे देश की जीडीपी एक से डेढ़ फीसदी बढ़ेगी। पूर्व राष्ट्रपति सायंकाल हरकी पैड़ी पर गंगा आरती में भी हिस्सा लेगें। इससे पहले वह यहां उन्होंने जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज का आशीर्वाद लिया। पूर्व राष्ट्रपति कोविंद ने देश के समसामयिक मुद्दों पर अपने विचार रखते हुए कहा कि उन्होंने वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर रिपोर्ट दे दी है। इससे देश में विकास की रफ्तार डबल होगी। भारत सरकार ने इसे स्वीकार कर लिया है। पार्लियामेंट ने

इस पर विधेयक बनाया है। अभी ये विधेयक जेपीसी के सामने विचारार्थ है। पूर्व राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि वन नेशन वन इलेक्शन पर जेपीसी में जो निर्णय आएगा जैसा भी संसद को उचित लगेगा, उस पर काम होगा। उन्होंने कहा अभी तीन दिन पहले ही इंटरनेशनल मॉनिटरिंग फंड की रिपोर्ट आई है, जिसमें भारत अब पांचवी अर्थव्यवस्था से बढ़कर विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था हो गया है। हम विश्व में चौथे नंबर की आर्थिक शक्ति बन गए हैं। हमने जापान को पीछे छोड़ दिया है। अभी केवल अमेरिका, चीन और जर्मनी हम से आगे हैं। उन्होंने कहा कि अगले दो वर्षों में हम तीसरे नंबर पर पहुंच जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति कर रहा है। ऑपरेशन सिंदूर पर पूर्व राष्ट्रपति कोविंद ने कहा कि यह ऑपरेशन हमारी सेनाओं के शौर्य का प्रतीक है, जिसको देश और दुनिया सदियों तक याद रखेगी। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के जरिये हमने विश्व में एक बहुत बड़ा संदेश दिया है। उन्होंने कहा इस ऑपरेशन को आतंकवाद के खिलाफ हमेशा याद रखा जाएगा।

लिंगानुपात सुधार में आशा वर्करों की भूमिका महत्वपूर्ण : उपायुक्त

सोनीपत। समाज में लैंगिक समानता केवल एक संवैधानिक अधिकार नहीं, बल्कि सामाजिक संतुलन की आवश्यकता भी है। इसी कड़ी में सोनीपत जिले में प्रशासन द्वारा लिंगानुपात सुधार के लिए गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें आशा वर्करों की भागीदारी को विशेष रूप से सराहा गया।जिले के पिछड़े लिंगानुपात वाले गांवों माजरी, किड़ौली और आनन्दपुर झरोठ में उपायुक्त डॉ. मनोज कुमार ने लिंगानुपात समीक्षा बैठक के दौरान ग्रामीण स्तर पर सक्रिय भागीदारी की अपील की। उन्होंने कहा कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान का उद्देश्य केवल जागरूकता नहीं, बल्कि सामाजिक सोच में परिवर्तन लाना है। बैठक में सरपंचों, पंचों, चिकित्सा अधिकारियों, एएनएम और आशा वर्करों को निर्देश दिए गए कि प्रत्येक गर्भवती महिला का पंजीकरण गर्भावस्था के प्रथम आठ सप्ताह में आंगनवाड़ी केंद्र में कराया जाए। उन्होंने कहा कि आशा वर्कर अवैध लिंग जांच की सूचनाएं प्रशासन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभा सकती हैं। डॉ. मनोज कुमार ने कहा कि गिरता लिंगानुपात समाज के लिए कलंक है और इसे दूर करने के लिए प्रत्येक नागरिक को सहयोगी बनना होगा। उन्होंने पीसी-पीएनडीटी अधिनियम को सख्ती से लागू करने की बात कही और बताया कि विशेष पुलिस सेल गठित की जा रही है, जो फर्जी ग्राहक बनकर लिंग जांच करने वालों का भंडाफोड़ करेगी।

देश के लोकतंत्र को मजबूत व पारदर्शी बनाएगा वन नेशन-वन इलेक्शन : कुलदीप बिश्नोई

हिसार। भिवानी व हिसार से सांसद रहे कुलदीप बिश्नोई ने कहा है कि वन नेशन-वन इलेक्शन भारत के लोकतंत्र को और अधिक मजबूत, पारदर्शी व कुशल बना सकता है। इससे न केवल सरकार के कार्यों में निरंतरता आएगी, बल्कि राष्ट्रीय एकता और अखंडता भी और ज्यादा सुदृढ़ होगी। कुलदीप बिश्नोई पनिहार फार्म पर नलवा हलके में एक देश-एक चुनाव पर आयोजित संगोष्ठी को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। कुलदीप बिश्नोई ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं, जिससे हमारा देश वैश्विक मंचों पर और ज्यादा मजबूत हुआ है। वन नेशन-वन एलेक्शन भी भारत जैसे अनेकता में एकता के संदेश को दुनिया के सामने लाने का सुनहरा निर्णय साबित होगा। एक राष्ट्र-एक चुनाव का मुख्य उद्देश्य लोकसभा ओर सभी राज्य विधानसभाओं के चुनावों को एक साथ आयोजित करवाना है, ताकि समय, संसाधन और प्रशासनिक खर्चों की बचत हो सके तथा देश के विकास कार्यों में निरंतरता बनी रहे। बार-बार चुनाव कराने में भारी प्रशासनिक खर्च और संसाधनों की बर्बादी होती है। एक साथ चुनाव से चुनावी खर्च में भारी कमी आएगी।

पानीपत नगर निगम में फर्जीवाड़े का भंडाफोड़,जांच के आदेश

पानीपत। पानीपत नगर निगम एक बार फिर फर्जीवाड़े के लिए सुर्खियों में है। शहर में ड्रेन नंबर एक की सफाई के टेंडर आवंटन में नकली दस्तावेजों का उपयोग करके नियमों का उल्लंघन किया गया है। यह मामला तब सामने आया जब एक कंपनी के मालिक ने मुख्यमंत्री, और अन्य उच्च अधिकारियों को एक शिकायत दी। उन्होंने एक कार्यकारी अभियंता गोपाल कलावत और उसके कथित सहयोगी के खिलाफ शिकायत की । शिकायत के बाद निगम आयुक्त ने कंपनी के कार्य आवंटन को रोक दिया और सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर एमसी को इस मामले की जांच करने के निर्देश दिए। सोनीपत के कल्पेश्वर इंटरप्राइजेज के मालिक ने अपने पत्र में कहा कि उनकी कंपनी ने टेंडर में भाग लिया, जो दूसरी बार कार्यकारी अभियंता द्वारा जारी किया गया था, जिसमें ड्रेन नंबर एक की सफाई का काम था। टेंडर सोसायटीज के लिए जारी किया गया था। विशेष रूप से ड्रेन नंबर 1 लगभग 8 किलोमीटर लंबा है और शहर के बीच से होकर गुजरता है। जो काबड़ी रोड से शुरू होकर चौटाला रोड पर पहुंचता है और फिर ड्रेन नंबर दो से मिल जाता है। यह नाला कूड़ा-कचरे से भरा हुआ था और हरियाणा स्टेट पॉल्युशन कंट्रोल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार यह अत्यंत प्रदूषित था। नोटिस में निर्दिष्ट विवरण के अनुसार चार कंपनियों को शॉर्टलिस्टेड किया गया था।

नारनौल में भवन के नीचे दबे नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने की हुई रिहर्सल

नारनौल। किसी भी प्रकार की आपदा की हालात में हम कितने तैयार है, इस बात को परखने के लिए लघु सचिवालय में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। उपायुक्त डॉ विवेक भारती तथा पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ की मौजूदगी में हुई इस रिहर्सल में रविवार सुबह रिक्टर पैमाने पर 7.4 की तीव्रता का भूकंप की सूचना मिलते ही सायरन बजा और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) को सूचित किया। इसके साथ ही जिला प्रशासन की टीम ने राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। इस दौरान एसडीआरएफ, रेडक्रॉस, एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड व अन्य टीमों ने घायलों को बाहर निकाल कर प्राथमिक उपचार शुरू किया। इसके बाद एनडीआरएफ 7वीं बटालियन भटिंडा की टीम असिस्टेंट कमांडेंट सरोज रानी की कमान में पहुंची तथा राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) ने मोर्चा संभाला।

मुख्यमंत्री की अपील, रासायनिक खाद की बजाय प्राकृतिक खेती अपनाएं किसान

● मुख्यमंत्री ने कुरुक्षेत्र के बिहोली गांव में पशु चिकित्सा पॉलीक्लिनिक का किया उद्घाटन

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी फसलों में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग करने से बचें। हमारी आने वाली पीढ़ी सशक्त और मजबूत हो, इसके लिए हमें प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ना होगा। मुख्यमंत्री सैनी जिला कुरुक्षेत्र के गांव बिहोली में राजकीय पशु चिकित्सा पॉलीक्लिनिक के उद्घाटन के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने गांव के विकास कार्यों के लिए 21 लाख रुपये देने की घोषणा की। किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इससे न केवल मिट्टी की उर्वरा बनी रहती है, बल्कि पर्यावरण और स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्राकृतिक खेती को

प्रोत्साहित करने के लिए हरियाणा सरकार किसानों को एक देसी गाय की खरीद पर 30 हजार रुपये तक की सब्सिडी दी जा रही है, जिससे वे गो-आधारित जैविक विधियों को अपनाकर टिकाऊ कृषि की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि लगभग 4 करोड़ 67 लाख रुपये की लागत से बना यह पॉलीक्लिनिक आसपास के क्षेत्र के पशुओं को विशेष पशुचिकित्सा सेवाएं उपलब्ध करेगा। इस पॉलीक्लिनिक में पैथोलॉजी, पैरासिटोलॉजी, गायनोकोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, सर्जरी, अल्ट्रासाउंड, एक्स-रे जैसी सेवाओं के साथ-साथ इनडोर एवं आउटडोर इकाइयाँ भी उपलब्ध रहेगी। साथ ही, यह संस्थान विशेषज्ञ पशु चिकित्सा अधिकारियों, तकनीशियनों और सहायक स्टाफ से सुसज्जित होगा, जिससे यह एक आदर्श पशु चिकित्सा केन्द्र के रूप में स्थापित होगा। पशुपालन क्षेत्र में आ रही चुनौतियों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि आज दुधारू पशुओं की कीमत हजारों में नहीं, लाखों में है।

भूमिहीन और छोटे किसानों के लिए इतना महंगा पशु खरीदना मुश्किल होता है। यदि वह खरीद भी लेता है तो उसे पशु के स्वास्थ्य की चिंता रहती है। इन हालातों में पशु चिकित्सा संस्थानों का महत्व बहुत बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि इस समय पूरे राज्य में 6 राजकीय पशु चिकित्सा पॉलीक्लिनिक चल रहे हैं। ये सिरसा, जींद, रोहतक, भिवानी, सोनीपत और रेवाड़ी में स्थित हैं। अब कुरुक्षेत्र का यह पॉलीक्लिनिक 7वां केन्द्र बन गया है। उन्होंने कहा कि जिला कुरुक्षेत्र में इस समय 49 राजकीय पशु चिकित्सालय एवं 72 राजकीय पशु औषधालय चल रहे हैं। इनमें पशु चिकित्सकों के 51 पदों में से 47 पद तथा वी.एल.डी.ए के 130 में से 119 पद भरे हुए हैं।

उपायुक्त ने 'सैनिक अभिलाषा' नामक पुस्तक का किया विमोचन

एजेंसी

रेवाड़ी। उपायुक्त अभिषेक मीणा ने बीरेंद्र सिंह द्वारा देशभक्ति, पर्यावरण संरक्षण व स्वास्थ्य अभियान पर लिखित 'सैनिक अभिलाषा' नामक पुस्तक का विमोचन किया।उपायुक्त अभिषेक मीणा ने कहा कि साहित्य समाज का आईना है। यह समाज और साहित्य के बीच गहरे संबंध को उजागर करता है। साहित्य मानव अनुभवों, भावनाओं और समाज की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करता है। साहित्यकार अपने लेखन में समाज की विभिन्न परतों को उजागर करते हैं, जिसमें आम जीवन, संघर्ष, आशाएं और सपने शामिल होते हैं। साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण होता है। यह समाज की अच्छाइयों और बुराइयों दोनों को प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक समाज के विभिन्न रंगों को समझ सकते हैं।

ज्ञात हो कि गांव कालाका निवासी बीरेंद्र सिंह ने भारतीय सेना और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित कुछ साहित्यिक कार्य किए हैं। वह वर्तमान में दिल्ली विधानसभा के आईजीपी कार्यालय में सब इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत हैं और देश की सेवा कर रहे हैं।

नवनियुक्त मुख्य सूचना आयुक्त व चार राज्य सूचना आयुक्तों को राज्यपाल ने दिलाई शपथ

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने राजभवन में आयोजित एक समारोह में हरियाणा के पूर्व मुख्य सचिव व नवनियुक्त मुख्य सूचना आयुक्त टीवीएसएन प्रसाद (आईएएस सेवानिवृत्त) को पद एवं निष्ठा की शपथ दिलाई। इसके साथ ही चार नवनियुक्त राज्य सूचना आयुक्त अमरजीत सिंह (एचसीएस सेवानिवृत्त), कर्मवीर सैनी, नीता खेड़ा और संजय मदान को भी पद एवं निष्ठा की शपथ दिलाई गई। इस मौके पर राज्यपाल ने मुख्य सूचना आयुक्त और सूचना आयुक्तों की भूमिका को लोकतंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने नवनियुक्त आयुक्तों से अपेक्षा की कि वे निष्पक्षता, ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे, ताकि सूचना के अधिकार को और सशक्त किया जा सके। हरियाणा सरकार ने भिवानी निवासी प्रियंका धूपड़ को भी सूचना आयुक्त नामित किया गया था, लेकिन अंतिम समय में उनका शपथ ग्रहण रोक दिया गया।

प्रियंका भिवानी में जिला बाल कल्याण परिषद की सदस्य रह चुकी हैं। उनके कई विवाद सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद सरकार ने उन्हें शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं किया। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा, कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा, मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी, पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण, पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

हरियाणा के छह हजार दो सौ गांवों की पंचायतों में बनेंगी ई-लाइब्रेरी : पंवार

एजेंसी

पानीपत। हरियाणा के पंचायत एवं खनन मंत्री कृष्णलाल पंवार ने कहा कि हरियाणा के प्रत्येक गांव को ग्राम पंचायत ई -लाइब्रेरी व स्ट्रीट लाइटें तथा महिला सांस्कृतिक केंद्र आदि से जोड़ा जाएगा। जिला सचिवालय सभागार में खण्ड मडलौडा के सरपंचों व ग्राम सचिवों की बैठक में बोलते हुए कहा कि प्रदेश में 6200 ग्राम पंचायतों में ई-लाईब्रेरी बनाने का कार्य किया जा रहा है। हर गांव में पंचायत भवन भी बनाये जा रहे हैं। सरकार इस कार्य को प्राथमिकता से कर रही है। 125 करोड़ की लागत से ये भवन बनाए जाने है। इनमें 21 लाख रूपये भवन निर्माण पर व 4 लाख रूपये फर्नीचर पर खर्च होंगे।कैबिनेट मंत्री ने कहा कि दूसरे चरण में 541 गांवों में स्ट्रीट लाईटें लगाई जाएगी। जिन गांवों में महिला सांस्कृतिक केन्द्र अभी तक नही बने है उनके निर्माण का कार्य किया जा रहा है। इण्डोर जिम गांव में खोले जा रहे है। एक जिम की लागत 10 लाख रूपये है। इसका उददेश्य गांव में खेल का वातावरण तैयार करना है।कैबिनेट

मंत्री ने कहा कि गांव के शमशान घाट की चार दिवारी करवाने का कार्य किया जा रहा है। प्रदेश के 2200 तालाबों का जिर्णोद्धार करने का भी सरकार कार्य कर रही है। इसको लेकर कार्य को गति प्रदान की जा रही है। इन तालाबों को शीघ्र बनाया जाएगा। इनके सुधारीकरण को लेकर सरपंचों को निष्ठा से कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि सरपंच गांव का जिम्मेदार व्यक्ति है। उसे अपनी शक्तियों का सकारात्मक दिशा में व गांव के विकास में प्रयोग करना चाहिए। राज्य सरकार गांवों को मॉडल गांव बनाने के लिए गांव में हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए वचनबद्ध है।

मोदी के नेतृत्व ने बनाया भारत को संसार की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था : धनखड़

एजेंसी

झज्जर। भारतीय जनता पार्टी के सचिव ओम प्रकाश धनखड़ ने भारत के दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सशक्त नेतृत्व को दिया है और इस उपलब्धि के लिए जनता को बधाई दी है। भाजपा नेता धनखड़ ने जारी बयान में कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था 4.187 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद के साथ चौथे पायदान पर पहुंच गई है। अगले तीन-चार साल में हमारा देश दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। भारत की अर्थव्यवस्था के सामने अमेरिका, चीन और जर्मनी ही

अब आगे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी अर्थ व्यवस्था अब चार लाख 18 हजार 700 करोड़ अमेरिकी डॉलर की हो गई है, अर्थात 356 लाख दस हजार 435 करोड़ रूपये की हो गई है। धनखड़ ने कहा कि पीएम मोदी के कुशल नेतृत्व में अर्थव्यवस्था के मामले में भारत का डंका अब फिर से पूरी दुनिया में बजने लगा है। भारत के लिए अभी माहौल अच्छा है। देश की आर्थिक स्थिति मजबूत है। आने वाले कुछ वर्षो में जर्मनी को भी पीछे छोड़ देंगे। उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2025 की चौथी तिमाही में देश की ग्रोथ रेट 6.8 फीसदी रह सकती है। इसका मतलब है कि देश की इकोनॉमी इस दौरान तेजी से बढ़ी है। इस बढ़ोतरी के पीछे खेती-किसानी, होटल, परिवहन और निर्माण जैसे क्षेत्रों का मजबूत प्रदर्शन है।

गांवों में लोगों की खरीदारी बढ़ी है जिससे खपत के मोर्चे पर मजबूती मिली है। धनखड़ ने कहा कि टैरिफ वॉर जैसे नेरेटिव भी भारत की अर्थव्यवस्था को रोक नहीं पा रहे। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत की छवि दुनिया में एक परिपक्व और मजबूत राष्ट्र के रूप में हुई है। निश्चित रूप से भारत वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनकर उभरेगा और दुनिया की अव्वल अर्थ व्यवस्थाओं में से एक होगा।

जिले में नहीं पनपने दी जाएंगी अवैध कॉलोनियां : डीसी

एजेंसी

झज्जर। उपायुक्त स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि जिले में अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। शहर के योजनाबद्ध विकास में बाधा न बनने देने के लिए किसी भी हालत में अवैध कॉलोनियां नहीं पनपने दी जाएंगी। यह निर्देश उपायुक्त ने लघु सचिवालय में आयोजित डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स की बैठक में दिए।बैठक में जिले में अब तक की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई। बैठक में जिला नगर योजनाकार (डीटीपी) मनीष दहिया ने बताया कि अप्रैल माह में आठ निर्धारित योजनाओं पर कार्रवाई करते हुए अवैध निर्माण तोड़े गए। जबकि 11 पुरानी कॉलोनियों में दोबारा किए जा रहे अवैध निर्माण भी ध्वस्त किए गए। इसके अलावा पांच नई कॉलोनियों में अवैध निर्माणों को तोड़ा गया। डीटीपी ने बताया कि बीते महीने में चार मामलों में एफआईआर दर्ज करवाई गई है, ताकि अवैध कॉलोनी बसाने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। उपायुक्त पाटिल ने कहा कि सभी एसडीएम अपने क्षेत्रों में अवैध निर्माण पर नजर रखें और ऐसी सूचना मिलते ही तुरंत डीटीपी के साथ मिलकर कार्रवाई करें। अवैध कॉलोनियों के कारण सरकार को राजस्व की हानि होती है।

नशे पर रोक लगाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से करें काम : उपायुक्त शांतनु शर्मा

एजेंसी

सिरसा। सिरसा के उपायुक्त शांतनु शर्मा ने कहा कि जिला में नशा पर रोक लगाने के लिए व्यापक स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना होगा। जिला में नशे के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए, वहीं युवाओं को खेल गतिविधियों से जोडकर नशा के खिलाफ जागरूक किया जाए।

उपायुक्त शांतनु शर्मा नशा संबंधी गतिविधियों पर रोक लगाने के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस कार्य में समाज के प्रबुद्ध लोगों व सामाजिक संस्थाओं का सहयोग लिया जाए तथा युवाओं को नशा न करने के लिए प्रेरित किया जाए। उपायुक्त ने कहा कि नशे की तस्करी में संलिप्त व्यक्तियों के खिलाफ पुलिस विभाग में शिकायतें दर्ज करवाएं और नशे में संलिप्त व्यक्तियों की सूचना भी पुलिस व जिला प्रशासन को अवश्य दें।उपायुक्त ने कहा कि विशेष जागरूकता मिशन के तहत कार्य करते हुए नशे के खिलाफ अधिक से अधिक आमजन को जोड़ें। इसके अलावा स्कूलों व कॉलेजों में विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणाम के बारे में निरंतर बताया जाए ताकि उनमें जागरूकता उत्पन्न

हो। अभिभावक व अध्यापक समय-समय पर बच्चों से सकारात्मक संवाद करते हुए उन्हें नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूक करते रहें।उपायुक्त ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग की ओर से जिला में स्थित केमिस्ट की दुकानों को हिदायत दी जाएं कि वे डाक्टर्स द्वारा परामर्श की गई दवाइयां ही दें। बिना परामर्श की गई दवाइयां न बेची जाएं। मेडिकल के बाहर लाइसेंस नंबर व उसकी वैद्यता की जानकारी अंकित वाला बोर्ड भी लगाया जाए तथा कैमरे भी लगाए जाएं।

बैठक में पुलिस अधीक्षक डा. मयंक गुप्ता ने भी नशे की रोकथाम को लेकर प्रभावी कदम उठाने के बारे में जानकारी दी।

बरसात पूर्व हो नालों की सफाई, जल भराव हुआ तो होगी कार्रवाई: विपुल गोयल

एजेंसी

रेवाड़ी।। हरियाणा के शहरी स्थानीय निकाय एवं राजस्व मंत्री विपुल गोयल ने कहा है कि मानसून सीजन शुरू होने से पहले प्रदेश के सभी शहरी क्षेत्रों में नालों व ड्रेनेज सिस्टम को नगर निगम, नगर परिषद व नगर पालिका द्वारा साफ करवाया जाए ताकि बरसात के दौरान शहरी क्षेत्र में जलभराव की समस्या न आए। उन्होंने कहा कि सभी निकाय अधिकारियों को अलर्ट मोड में रहते हुए नियमित मॉनिटरिंग करने के भी आदेश विभाग की ओर से दिए गए हैं।

वह रेवाड़ी बाल भवन सभागार में जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की मासिक बैठक के उपरांत मीडिया कर्मियों से बातचीत कर रहे थे। परिवेदना समिति की बैठक में राजस्व एवं आपदा मंत्री ने कुल 21 परिवादों की सुनवाई की, जिनमें से 17 का मौके पर निपटारा किया गया।

चार मामलों को लंबित रखते हुए निर्धारित कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। राजस्व मंत्री के साथ बैठक में रेवाड़ी से विधायक लक्ष्मण सिंह यादव, बावल से विधायक डा. कृष्ण कुमार व कोसली से विधायक अनिल यादव, भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना पोपली तथा उपायुक्त अभिषेक मीणा व पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र मीणा मौजूद रहे।मंत्री विपुल गोयल ने कहा कि शासन-प्रशासन

आम जनता की शिकायतों व समस्याओं के समाधान के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसे में जनसेवा से जुड़े कार्यों में सजगता बरतते हुए अधिकारी अपने दायित्व का निर्वहन प्रभावी ढंग से करें। अधिकारियों को चाहिए कि वे सरकार द्वारा लागू योजनाओं का क्रियान्वयन बेहतर ढंग से सुनिश्चित करें। परिवेदना समिति की बैठक में सुनवाई के दौरान रेवाड़ी शहर के कंकरवाली जोहड़ पर अतिक्रमण की समस्या को लेकर रखी गई शिकायत में राजस्व मंत्री ने निर्देश दिए कि तहसीलदार तत्काल प्रभाव से सार्वजनिक भूमि की पैमाइश को नगर परिषद कार्यालय में जमा करवाए, जिससे कि जोहड़ की जमीन से अवैध कब्जे हटवाए जा सकें। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य की पालना करें और जो अधिकारी कार्य के प्रति उदासीन पाए जाएंगे, उनके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। इस मौके पर अतिरिक्त उपायुक्त अनुपमा अंजलि, डीएमसी राहुल मोदी, प्रशिक्षु आईएएस रूहानी, नगर परिषद चेयरमैन पूनम यादव, एसडीएम सुरेंद्र सिंह, नगराधीश प्रीति रावत आदि मौजूद रहे।

पानीपत में गांजा के साथ युवक तो दिल्ली में सप्लायर महिला गिरफ्तार

पानीपत। पानीपत पुलिस ने भारी मात्रा गांजा लेकर जा रहे एक युवक को गिरफ्तार किया है। अगले दिन गांजा सप्लायर महिला को भी दिल्ली से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। थाना चान्दनी बाग प्रभारी फूल कुमार ने बताया कि रविवार की शाम पुलिस को सूचना मिली कि कोई संदिग्ध व्यक्ति चौटाला रोड पर खड़ा किसी का इंतजार कर रहा है। उन्होंने तुरन्त पुलिस पार्टी को रवाना किया। मौके पर पहुंचते ही पुलिस की गाड़ी को देखकर वह युवक कंधे पर रखे पॉलीथिन बैग सहित भागने लगा, लेकिन पुलिस ने कुछ दूरी पर उस युवक को धर दबोचा। पूछताछ में उसने अपना नाम सागर निवासी गंगापुरी रोड बताया तलाशी लेने पर उसके पॉलीथीन बैग की तलाश ली तो उसमें भूरे रंग का पत्तीनुमा पदार्थ मिला जिसको चेक करने पर नशीला पदार्थ गांजा पाया गया, जिसका वजन 25 किलो 640 ग्राम निकला।

बधिर युवाओं को विशेष प्लेसमेंट ड्राइव में मिली नौकरी, अब राज्यपाल देंगे नियुक्ति पत्र

एजेंसी

गुरुग्राम। हरियाणा वेलफेयर सोसाइटी फॉर पर्सन्स विद स्पीच एंड हियरिंग इम्पेयरमेंट (डब्ल्यूसीपीएसएचआई) द्वारा बधिर युवाओं को रोजगार दिलाकर समाज की मुख्यधारा में लाया जा रहा है। इसी कड़ी में गुरुग्राम में एक विशेष प्लेसमेंट ड्राइव हुई, जिसमें 45 बधिक युवाओं ने नौकरी के लिए आवेदन किया। पांच मल्टीनेशनल कंपनियों ने बधिर युवाओं से संवाद करके उनका चयन किया। अब 29 मई को हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय इन युवाओं को नौकरी के नियुक्ति पत्र सौंपेंगे। विशेष प्लेसमेंट ड्राइव में मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा वेलफेयर सोसाइटी फॉर पर्सन्स विद स्पीच एंड हियरिंग इम्पेयरमेंट की उपाध्यक्ष मेघा भंडारी ने शिरकत की। उन्होंने प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाते हुए कहा कि डब्ल्यूसीपीएसएचआई का उद्देश्य दिव्यांगजनों को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराना है। संस्था के हरियाणा में कुल आठ केंद्र सक्रिय हैं, जिनमें गुरुग्राम, करनाल, हिसार, सिरसा, पंचकूला, नगीना, रायपुर रानी और अन्य स्थान शामिल हैं। भविष्य में करनाल और हिसार में भी इसी प्रकार के जॉब फेयर आयोजित किए जायेंगे। मेघा भंडारी ने बताया कि संस्था का मिशन बधिर युवाओं को शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार के मजबूत साधन प्रदान करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। हमारा प्रयास है कि हम न केवल उनके जीवन स्तर को सुधारें, बल्कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाकर सम्मानजनक स्थान दिलाएं। कार्यक्रम के दौरान असिस्टेंट डायरेक्टर डॉ. सीमा ने बताया कि संस्था द्वारा छह वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए हॉस्टल सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है, जहां उन्हें स्किल डेवलपमेंट, नैतिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता से जुड़ी गतिविधियां सिखाई जाती हैं। बच्चों को सिलाई, ब्यूटीशियन कोर्स, पेंटिंग, योगा आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्होंने यह भी बताया गया कि हरियाणा के किसी भी जिले से इच्छुक बधिर युवक-युवती इस रोजगार अभियान में भाग ले सकते हैं, चाहे वे संस्था से जुड़े हों या नहीं।

ओलंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा की ऑडी इंडिया के साथ साझेदारी

नयी दिल्ली। दोहरा ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने जर्मन लक्जरी कार निर्माता ऑडी के साथ साझेदारी की है। जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स ने यह घोषणा करते हुये कहा कि उसके एथलीट नीरज चोपड़ा ने यह साझेदारी की है। उसने कहा कि नीरज चोपड़ा ने ओलंपिक पदक जीत कर देश और दुनिया को अपनी ओर आकर्षित किया था। अब ऑडी इंडिया के साथ साझेदारी एथलीट और ब्रांड के बीच साझा मूल्यों का आदान प्रदान है। ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने कहा, ऑडी में हम उन लोगों के लिए खड़े हैं जो सीमाओं को लांघते हैं - वे जो सिर्फ प्रदर्शन से नहीं, बल्कि उत्कृष्टता की निरंतर खोज से परिभाषित होते हैं। नीरज चोपड़ा उस भावना के प्रतीक हैं। दृढ़ निश्चयी और प्रतिष्ठित, महत्वाकांक्षा से उपलब्धि तक का उनका सफ़र ऑडी के प्रगतिशील डीएनए को दर्शाता है। उनका ध्यान, गति और बेजोड़ प्रदर्शन उन्हें हमारे ब्रांड का स्वाभाविक विस्तार बनाता है जो इस बात का प्रतीक है कि नेतृत्व करना क्या होता है। उन्होंने कहा कि अपनी तकनीक के लिए प्रसिद्ध नीरज चोपड़ा ऑडी के मूल में मौजूद उन्हीं गुणों को दर्शाते हैं जिसमें सटीकता, दृढ़ संकल्प और सीमाओं को तोड़ने की इच्छा है। रेसट्रैक से लेकर रनवे तक और खेल के मैदान से लेकर वैश्विक मंच तक यह साझेदारी उत्कृष्टता के लिए एक साझा दृष्टिकोण का संकेत देती है।

डैशकैम को अनिवार्य किया जाए: सर्वे

नयी दिल्ली। देश के वाहन मालिकों विशेषकर कार मालिकों ने सुरक्षा के लिए फ्रंट एंड बैक डैशकैम महत्वपूर्ण माना है और कंपनियों से इसके अनिवार्य रूप से लगाये जाने की इच्छा व्यक्त की है। सर्वे प्लेटफॉर्म पार्क प्लस रिसर्च लैब्स ने आज अपने नवीनतम शहर-केंद्रित सर्वेक्षण के प्रमुख निष्कर्ष साझा किए। दिल्ली एनसीआर, मुंबई और बेंगलुरु में 3,000 कार मालिकों पर किए गए इस सर्वे का उद्देश्य यह समझना था कि आज के कार मालिक नई कारों में किस एक फीचर को अनिवार्य चाहते हैं। रिपोर्ट के अनुसार 48 प्रतिशत प्रतिभागियों ने उम्मीदों के विपरीत 6 एयरबैग या बीएनसीएपी रेटिंग नहीं बल्कि फ्रंट और बैक डैशकैम को उस सुरक्षा फीचर के रूप में चुना जिसे सरकार और कार निर्माता कंपनियों को अनिवार्य बनाना चाहिए। इस पसंद के पीछे उत्तरदाताओं ने जो कारण बताए, वह भी कम रोचक नहीं हैं। उनका कहना है कि रोड रेज की बढ़ती घटनाएं, असुरक्षित ड्राइविंग व्यवहार, हिट-एंड-रन केस और बीमा दावों में पेचीदगियों को देखते हुए आज यह बेहद जरूरी हो गए हैं। आज के शहरी ट्रैफिक माहौल में डैशकैम को सिर्फ एक्सेसरी नहीं, बल्कि सबूत देने वाले साधन के रूप में देखा जा रहा है, जो ड्राइवर को ताकतवर बनाते हैं और जवाबदेही को प्रोत्साहन देते हैं। रिपोर्ट के अनुसार एयरबैग या क्रैश टेस्ट रेटिंग जैसे कार सेफ्टी फीचर सर्वे में टॉप पर नहीं रहे क्योंकि ग्राहकों ने उन्हें अब मूलभूत आवश्यकता मान लिया है जिस पर वे कोई समझौता नहीं करना चाहते।

ओकले के ब्रांड एंम्बेसडर बने शुभमन गिल

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेटर शुभमन गिल आई वियर बनाने वाली कंपनी ओकले के ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त किये गये हैं। कंपनी ने आज यहां कहा कि शुभमन गिल भारत में 'आर्टिफैक्ट्स फ्रॉम द फ्यूचर' अभियान का चेहरा होंगे। शुभमन गिल क्रिकेट की दुनिया में सबसे प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ियों में से एक हैं। गिल ने अपने स्थिर प्रदर्शन, शानदार शॉट्स और दबाव में भी अच्छे खेल के साथ पूरी दुनिया में अपने फैन बना लिए हैं। उनकी उपलब्धियाँ और बेहतरीन सफर भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जिससे दृढ़ निश्चय और उत्कृष्टता की शक्ति का प्रदर्शन होता है। इस पर शुभमन गिल ने कहा, मैं ओकले से जुड़कर बहुत उत्साहित हूँ। यह ब्रांड परफॉर्मेंस, प्रगति और जुनून का प्रतीक है। ये गुण मुझे बहुत प्रभावित करते हैं। जब भी मैं मैदान पर रहा हूँ, ओकले हर बार मेरे क्रिकेट के सफर का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहा। हर ओकले उत्पाद में उनकी इनोवेटिव लेंस और फ्रेम टेक्नोलॉजी मेरी परफॉर्मेंस बढ़ाने में मदद करती है। वे बहुत स्टाईलिश हैं, इसलिए मुझे बहुत पसंद हैं। कंपनी के वरिष्ठ ब्रांड बिज़नेस प्रबंधक साहिल जंदियाल ने कहा, खेल में ओकले की जड़ें बहुत गहरी हैं। यह खिलाड़ियों के समुदाय और संस्कृति के साथ परफॉर्मेंस की सीमाएं बढ़ाते रहने के लिए प्रेरित करता है।

मध्यम उद्योगों की जीडीपी में 29 प्रतिशत की हिस्सेदारी

नयी दिल्ली। सकल घरेलू उत्पादन - जीडीपी में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग- एमएसएमई क्षेत्र का योगदान 29 प्रतिशत है जबकि यह 60 प्रतिशत लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। नीति आयोग की यहांमध्यम उद्यमों के लिए नीति तैयार करना पर रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि मध्यम उद्यम भविष्य के बड़े उद्यम हैं और 2047 के विकासशील भारत के चालक हैं। छोटे उद्योग क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 29 प्रतिशत का योगदान देता है और 60 प्रतिशत से अधिक कार्यबल को रोजगार देता है। इसके अलाव निर्यात में 40 प्रतिशत की हिस्सेदारी है रिपोर्ट में मध्यम उद्यमों को भारत की अर्थव्यवस्था के भविष्य के विकास इंजन में बदलने के लिए एक व्यापक योजना पेश की है। इस रिपोर्ट को नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी ने नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी.के. सारस्वत और नीति आयोग के सदस्य डॉ. अरविंद विरमानी की उपस्थिति में जारी की गयी। रिपोर्ट के अनुसार देश में पंजीकृत एमएसएमई में से 97 प्रतिशत सूक्ष्म उद्यम, 2.7 प्रतिशत छोटे और केवल 0.3 प्रतिशत मध्यम उद्यम हैं ।

गोयल ने पेटीएम संस्थापक से की मुलाकात, भारत को डिजिटल भुगतान केंद्र बनाने पर की चर्चा

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने पेटीएम के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) विजय शेखर शर्मा से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान उन्होंने वैश्विक फिनटेक और डिजिटल भुगतान पावरहाउस बनाने और भारत में निर्मित भुगतान प्रणालियों को दुनियाभर में निर्यात करने पर चर्चा की। वाणिज्य मंत्री कार्यालय ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी बयान में बताया कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने वैश्विक डिजिटल अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में पेटीएम के संस्थापक और सीईओ विजय शेखर शर्मा से मुलाकात की और भारत में फिनटेक, डिजिटल

भुगतान और समावेशी ई-कॉमर्स के भविष्य पर चर्चा की।

केंद्रीय मंत्री ने चर्चा के दौरान भारत को वैश्विक फिनटेक और डिजिटल भुगतान पावरहाउस बनाने के सरकार के दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। बातचीत में भारत-निर्मित भुगतान प्रणालियों को दुनिया भर में निर्यात करने की क्षमता पर ध्यान केंद्रित किया गया, एक ऐसा क्षेत्र जहां पेटीएम मोबाइल भुगतान, क्यूआर आधारित भुगतान, साउंडबॉक्स, कार्ड मशीन और यूपीआई-आधारित सेवाओं जैसे नवाचारों के साथ अग्रणी शक्ति रहा है। इसके अलावा दोनों ने ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (्हह्रष्ठष्ट) की समावेशी क्षमता पर भी चर्चा की। पड़ोस के किराना स्टोर और छोटे व्यवसाय मालिकों को सशक्त बनाने पर ज़ोर देते हुए बैठक में इस बात पर चर्चा की गई कि पेटीएम जैसे प्लेटफ़ॉर्म इन व्यापारियों को औपचारिक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में शामिल करने में कैसे मदद कर सकते हैं, ताकि पहुंच, पारदर्शिता और आर्थिक अवसर में सुधार करके।

खाद्य तेल और दाल-दलहन में मिलाजुला रुख

एजेंसी
नई दिल्ली। विदेशी बाजारों में तेजी जारी रहने के बावजूद स्थानीय स्तर पर मांग सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेल और दाल-दलहन में मिलाजुला रुख रहा वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे। तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का जून वायदा आठ रिंगिट की बढ़त के साथ 3832 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह जून का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.24 सेंट चढ़कर 49.35 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सरसों तेल 439 रुपये, सूरजमुखी तेल 146 रुपये, सोया रिफाइंड 219 रुपये और वनस्पति तेल 513 रुपये प्रति क्विंटल महंगा हो गया जबकि मूंगफली तेल 220 रुपये और पाम ऑयल 147 रुपये प्रति क्विंटल उतर गया। गुड़-चीनीः मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टीके रहे। दाल-दलहनः दाल-दलहन के बाजार में मिश्रित

रुझान रहा। इस दौरान चना 100 रुपये, दाल चना 100 रुपये, मसूर दाल 150 रुपये और उड़द दाल 50 रुपये प्रति क्विंटल गिर गई जबकि मूंग दाल 50 रुपये और अरहर दाल 200 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ गई। अनाजः अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

शेयर बाजार में तेजी का माहौल, निफ्टी 25 हजार के पार

एजेंसी
नई दिल्ली।अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर भारत के दुनिया भर में चौथे स्थान पर पहुंच जाने और आरबीआई के रिकॉर्ड डिविडेंड पेमेंट के कारण आज शेयर बाजार का मूड लगातार पॉजिटिव बना रहा। इसके साथ ही यूरोपीय यूनियन पर अमेरिकी टैरिफ लगाने की समय सीमा बढ़ा दिए जाने के कारण ग्लोबल मार्केट के सेंटीमेंट में भी सुधार हुआ। वैश्विक और घरेलू दोनों स्तरों पर माहौल बेहतर होने के कारण घरेलू शेयर बाजार भी आज सप्ताह के पहले कारोबारी दिन मजबूती के साथ बंद हुआ। आज की तेजी के कारण निफ्टी एक बार फिर 25 हजार अंक के स्तर को पार कर गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.56 प्रतिशत और निफ्टी 0.60 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। आज दिन भर के कारोबार के दौरान आईटी, ऑटोमोबाइल और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में लगातार खरीदारी होती रही। इसी तरह बैंकिंग, कैपिटल गुड्स, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, हेल्थ केयर, मेटल, ऑयल एंड गैस, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और टेक इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.56 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.48 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में पौने तीन लाख करोड़ रुपये से भी अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 444.81 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन यानी शुक्रवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 441.96 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 2.85 लाख करोड़ रुपये का फायदा हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,267 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,298 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,774 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 195 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,605 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,604 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,001 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 22 शेयर बढ़त के साथ और 8 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 38 शेयर हरे निशान में और 12 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 207.87 अंक की मजबूती के साथ 81,928.95 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होते ही बाजार में खरीदारी का जोर बन गया। खासकर, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने आक्रामक अंदाज में खरीदारी शुरू कर दी, जिससे इस सूचकांक की चाल में तेजी आ गई। चौतरफा खरीदारी के सपोर्ट से पहले आधे घंटे के कारोबार में ही ये सूचकांक 771.16 अंक उछल कर 82,492.24 अंक तक पहुंच गया। हालांकि, इसके बाद मुनाफा वसूली के चक्कर में हुई ।

नीति आयोग ने मझोले उद्योगों को भविष्य के वृद्धि इंजन में बदलने पर जोर दिया

एजेंसी
नई दिल्ली। नीति आयोग ने मध्यम उद्यमों के लिए नीति तैयार करने के शीर्षक से एक रिपोर्ट जारी की है। रिपोर्ट में मध्यम उद्यमों को भारत की अर्थव्यवस्था के भविष्य के विकास इंजन में बदलने के लिए एक व्यापक रोडमैप पेश किया गया है। आयोग का कहना है कि मध्यम उद्यम एमएसएमई निर्यात में लगभग 40 फीसदी का योगदान देते हैं, जो अपार अप्रयुक्त क्षमता को दर्शाता है। नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी द्वारा नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी.के. सारस्वत और नीति आयोग के सदस्य डॉ. अरविंद विरमानी की उपस्थिति में लॉन्च की गई इस रिपोर्ट में मध्यम उद्यमों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण, फिर भी कम-उपयोग की गई भूमिका पर प्रकाश डाला गया है और उनकी पूरी क्षमता को अनलॉक करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की रूपरेखा तैयार की गई है। अयोग ने अपनी रिपोर्ट में मध्यम उद्यमों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण, फिर भी कम-से-कम भूमिका पर प्रकाश डाला है। आयोग की इस रिपोर्ट में उनकी पूरी क्षमता को अनलॉक करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों की रूपरेखा

तैयार की गई है। नीति आयोग ने मझोले उद्योगों को भविष्य के वृद्धि इंजन में बदलने के लिए वित्तीय माध्यमों, प्रौद्योगिकी एकीकरण और एक केंद्रीकृत डिजिटल पोर्टल की वकालत भी की है। आयोग की रिपोर्ट एमएसएमई क्षेत्र में संरचनात्मक विषमता पर गहराई से चर्चा करती है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 29 फीसदी का योगदान देता है, जो निर्यात का 40 फीसदी हिस्सा है, जबकि 60 फीसदी से अधिक कर्मचारियों को रोजगार देता है। रिपोर्ट के मुताबिक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद इस क्षेत्र की संरचना असंगत रूप से भारित है, जो पंजीकृत एमएसएमई का 97 फीसदी सूक्ष्म उद्यम हैं, जबकि 2.7 फीसदी छोटे हैं, और केवल 0.3 फीसदी मध्यम उद्यम हैं। यह रिपोर्ट मध्यम उद्यमों की पूरी क्षमता को अनलॉक करने के लिए समावेशी नीति डिजाइन और सहयोगी शासन की आवश्यकता को रेखांकित करती है।इस रिपोर्ट के मुताबिक हालांकि, मध्यम उद्यमों का यह 0.3 फीसदी एमएसएमई निर्यात में लगभग 40 फीसदी का योगदान देता है।

अमेरिका के साथ ट्रेड डील को लेकर बढ़ी बात, अगले सप्ताह वार्ता होने की उम्मीद

एजेंसी
नई दिल्ली। भारत और अमेरिका के बीच होने वाले प्रस्तावित व्यापार समझौते के अगले चरण की बातचीत के लिए अमेरिकी अधिकारियों की एक टीम जून के पहले सप्ताह में भारत का दौरा कर सकती है। अमेरिकी अधिकारियों की ये टीम भारत में वाणिज्य मंत्रालय के अधिकारियों के साथ बातचीत करेगी, ताकि 9 जुलाई के पहले अंतरिम व्यापार समझौते के प्रारूप पर परस्पर सहमति बन सके। इसके पहले भारत की ओर से मुख्य वार्ताकार और वाणिज्य मंत्रालय में विशेष सचिव राजेश अग्रवाल पिछले सप्ताह ही अपनी चार दिन की वाशिंगटन यात्रा से वापस लौटे हैं। अपने वाशिंगटन दौरे के दौरान राजेश अग्रवाल ने प्रस्तावित समझौते के प्रारूप पर अमेरिकी अधिकारियों से विस्तृत बातचीत की थी। अंतरिम व्यापार समझौते की बातचीत को दिशा और

गति प्रदान करने के लिए भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल भी पिछले सप्ताह वाशिंगटन के दौरे पर थे। पीयूष गोयल ने अपनी यात्रा के दौरान अमेरिका के वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक से मुलाकात करके भारत की ओर से समझौते के क्रम में रखे जाने वाले प्रस्तावों की जानकारी दी थी। भारत और अमेरिका ने प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते के पहले चरण के लिए इस साल सितंबर से अक्टूबर तक की समय सीमा तय की है। हालांकि भारतीय पक्ष की ओर से लगातार इस बात की कोशिश की जा रही है कि अमेरिका और भारत सितंबर-अक्टूबर की समय सीमा के पहले ही अंतरिम व्यापार समझौते पर सहमत हो जाएं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नई टैरिफ पॉलिसी के तहत अमेरिका ने इस साल 2 अप्रैल को दुनिया के कई देशों के साथ ही भारत पर भी रेसिप्रोकल टैरिफ का बोझ लाद दिया था। इस पॉलिसी के तहत भारतीय सामानों पर 26 प्रतिशत का रेसिप्रोकल टैरिफ लागू किया गया था। हालांकि, बाद में 9 अप्रैल को डोनाल्ड ट्रंप ने रेसिप्रोकल टैरिफ में 90 दिन की राहत देने का ऐलान किया था। इन 90 दिनों के दौरान तमाम देशों के सामानों पर 10 प्रतिशत का टैरिफ वसूला जा रहा है।

रुपया 35 पैसे मजबूत

एजेंसी
मुंबई। दुनिया की प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर में लगातार जारी गिरावट के बीच स्थानीय स्तर पर शेयर बाजार में आई जबरदस्त तेजी की बदौलत आज अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया 35 पैसे की तेजी के साथ 85.10 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया। वहीं, इसके पिछले कारोबार दिवस रुपया 85.45 रुपये प्रति डॉलर पर रहा था। कारोबार की शुरुआत में रुपया 40 पैसे की छलांग लगाकर 85.05 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और सत्र के दौरान आयातकों एवं बैंकरों की डॉलर बिकवाली से 84.78 रुपये प्रति डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वहीं, लिवाली के दबाव में यह 85.21 रुपये प्रति डॉलर के निचले स्तर पर भी रहा। अंत में पिछले दिवस के 85.45 रुपये प्रति डॉलर की तुलना में 35 पैसे की मजबूती के साथ 85.10 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गया।डॉलर में लगातार कमजोरी के चलते रुपया मजबूत हुआ डॉलर सूचकांक इस दौरान 98.93 तक गिर गया, जिससे उभरती बाजार मुद्राओं को सहारा मिला।

विश्लेषकों का मानना है कि इस सप्ताह अमेरिकी अर्थव्यवस्था से जुड़े प्रमुख आंकड़ों की घोषणा से डॉलर में अस्थिरता बढ़ सकती है। इनमें टिकाऊ वस्तुओं के ऑर्डर, फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक के मिनट्स, पहली तिमाही का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) आंकड़ा और कोर पीसीई मूल्य सूचकांक शामिल हैं, जिन्हें फेडरल रिजर्व द्वारा महंगाई के प्राथमिक संकेतक के रूप में देखा जाता है। जानकारों के अनुसार, इन आंकड़ों का असर डॉलर की दिशा और फेड की ब्याज दर नीति पर पड़ेगा।

केंद्रीय प्रशिक्षुता परिषद ने दो योजनाओं के तहत प्रशिक्षुओं का वजीफा बढ़ाया

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्रीय कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी की अध्यक्षता में केंद्रीय प्रशिक्षुता परिषद (सीएसी) ने दो योजनाओं के तहत प्रशिक्षुओं को देय न्यूनतम मासिक वजीफा 30 फीसदी तक बढ़ाने का फैसला किया है।

प्रस्तावित बढ़ोतरी की अधिसूचना जारी होने के बाद वर्तमान में यह राशि 5,000-9,000 रुपये है, जिसे बढ़ाकर 6,800-12,300 रुपये कर दिया जाएगा। कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में जयंत चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित केंद्रीय प्रशिक्षुता परिषद (सीएसी) की 38वीं बैठक में भारत के युवाओं के लिए प्रशिक्षुता को

अधिक फायदेमंद और आकांक्षापूर्ण बनाने के लिए एक ऐतिहासिक कदम में राष्ट्रीय प्रशिक्षुता संवर्धन योजना (एनएपीएस) और राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रशिक्षण योजना (एनएटीएस) के तहत प्रदान किए जाने वाले वजीफे में 30 फीसदी की वृद्धि की सिफारिश की गई। मंत्रालय के मुताबिक केंद्रीय प्रशिक्षुता परिषद की आयोजित इस बैठक में भारत के उभरते प्रशिक्षुता परिदृश्य की समीक्षा की गई, जिसमें परिणाम को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण सुधारों पर चर्चा की गई। इस सिफारिश में मौजूदा 5,000-9,000 रुपये के वजीफे को संशोधित कर 6,800-12,300 रुपये किया जाएगा, जिसका उद्देश्य ड्रॉपआउट दरों को कम करना और विभिन्न क्षेत्रों में अधिक उम्मीदवारों को आकर्षित करना है। इस अवसर पर जयंत चौधरी ने कहा, प्रशिक्षुता केवल कौशल प्रदान करने का तंत्र नहीं है, यह एक ऐसा पुल है जो शिक्षा, उद्योग और रोजगार को जोड़ता है, खासकर हमारे ग्रामीण युवाओं के लिए। एनएपीएस और एनएटीएस को मजबूत कानूनी ढांचे द्वारा समर्थित स्तंभों के रूप में देखते हुए, हम इसे अधिक समावेशी, उत्तरदायी और आकांक्षी बनाने के लिए सक्रिय रूप से सुधार कर रहे हैं।

केंद्रीय उपभोक्ता मामले के मंत्री 28 मई को डार्क पैटर्न पर हितधारकों के साथ करेंगे बैठक

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रहलाद जोशी डार्क पैटर्न पर हितधारकों से मिलेंगे। वह 28 मई को उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा, पारदर्शी तथा भरोसेमंद बाजार सुनिश्चित करने के लिए एक उच्च स्तरीय बैठक में डार्क पैटर्न के बारे में उपभोक्ताओं की चिंताओं को संबोधित करेंगे। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि नई दिल्?ली में आयोजित होने वाली इस बैठक का उद्देश्य डार्क पैटर्न से निपटने के लिए अधिक प्रभावी समाधान तलाशना भी है।

केंद्रीय उपभोक्ता मामले मंत्री उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा और पारदर्शी व भरोसेमंद बाज़ार सुनिश्चित करने के लिए इस उच्चस्तरीय लाभार्थी बैठक में डार्क पैटर्न के बारे में उपभोक्ताओं की चिंताओं को संबोधित करेंगे। इस बैठक का उद्देश्य इस मुद्दे से निपटने के लिए और अधिक प्रभावी समाधान तलाशना भी है। इस बैठक में खाद्य, यात्रा, सौंदर्य प्रसाधन, फार्मेसी, खुदरा, वस्त्र और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्रों में काम करने वाले सभी प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म भाग लेंगे। कुछ प्रमुख हितधारकों में अमेजन, फ्लिपकार्ट, ऐप्पल, बिगबास्केट, मीशो, मेटा, मेकमाईट्रिप, पेटीएम, ओला, रिलायंस रिटेल लिमिटेड, स्विगी, जोमैटो, यात्रा, उबर, टाटा, ईज़माईट्रिप, क्लियर

ट्रिप, इंडियामार्ट, इंडिगो एयरलाइंस, जिगो, जस्टडायल, मेडिका बाजार, नेटमेड्स, ओएनडीसी, थॉमस कुक और व्हाट्सएप शामिल हैं।

सर्राफा बाजार में महंगा हुआ सोना, चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने के भाव में तेजी का रुख नजर आ रहा है। सोना आज 450 रुपये से लेकर 490 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। भाव में तेजी आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 98,130 रुपये से लेकर 98,280 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,950 रुपये से लेकर 90,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में कोई बदलाव नहीं होने का कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में आज भी एक लाख रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 98,280 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 98,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,950 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 98,180 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,000 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

भारत ने ब्रिक्स में राष्ट्रीय, वैश्विक अर्थव्यवस्था में एमएसएमई की भूमिका पर दिया जोर

एजेंसी
नई दिल्ली। भारत ने ब्रासीलिया के इटामारती पैलेस में ब्राजील की अध्यक्षता में आयोजित नौवीं ब्रिक्स उद्योग मंत्रियों की बैठक में भाग लिया। इस दौरान एक संयुक्त घोषणा को अपनाया गया, जिसमें मुख्य विषय अधिक समावेशी और टिकाऊ शासन के लिए वैश्विक दक्षिण सहयोग को मजबूत करना था। साथ ही भारत ने ब्रिक्स में राष्ट्रीय, वैश्विक अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की भूमिका पर जोर दिया। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी बयान में बताया कि संयुक्त घोषणा के अनुरूप भारत ने राष्ट्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी जोर दिया गया। इसमें तेजी से हो रहे वैश्विक परिवर्तनों के बीच एक खुले, निष्पक्ष और लचीले वैश्विक वातावरण को बढ़ावा देने, बहुपक्षीय प्रणाली को मजबूत करने और आर्थिक और सामाजिक लचीलापन बढ़ाने की सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई। संयुक्त घोषणा के अनुरूप भारत ने राष्ट्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी बल दिया। इसके साथ ही भारत ने इस बात पर प्रकाश डाला कि 5.93 करोड़ पंजीकृत एमएसएमई 25 करोड़ से अधिक व्यक्तियों को रोजगार देते हैं। इस क्षेत्र ने वित्?त वर्ष 2023-24 में देश के कुल निर्यात में 45.73 फीसदी का योगदान दिया। भारत ने सभी ब्रिक्स देशों को नीतिगत अंतर्दृष्टि, नवाचारों और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से इस मंच में योगदान देने और इससे लाभ उठाने का निमंत्रण दिया।मंत्रालय के मुताबिक मंत्रियों ने ब्रिक्स देशों में औद्योगिक सहयोग को बढ़ाने और सतत एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता को जरूरी बताया। संयुक्त घोषणापत्र में सतत विकास के प्रमुख चालकों के रूप में उद्योग 4.0 के तहत नवाचार और डिजिटल प्रौद्योगिकियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया। भारत ने अपने हस्तक्षेप में भविष्य के लिए तैयार उद्योग के लिए अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट किया जो समावेशी, नवीन और डिजिटल रूप से सशक्त है जो चौथी औद्योगिक क्रांति के उद्देश्यों के साथ संरेखित है। इसके अलावा बैठक में इस बात पर ध्यान दिया गया कि भारत के डिजिटल इंडिया अभियान ने देश को दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल रूप से जुड़े लोकतंत्र में बदल दिया है। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 2014 में 251.59 मिलियन से बढ़कर मार्च 2024 तक 954.40 मिलियन हो गई है। भारत ने अपने संबोधन का समापन करते हुए ब्रिक्स सदस्यों से आह्वान किया कि वे आगे चलकर सभी सहकारी प्रयासों में सहयोग, सामंजस्य, समग्रता और सर्वसम्मति के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित हों। उल्लेखनीय है कि इस बैठक में ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका सहित सभी ब्रिक्स सदस्य देशों के उद्योग मंत्री और प्रतिनिधि मौजूद थे। साथ ही नए शामिल सदस्य मिस्र, इथियोपिया, ईरान, इंडोनेशिया, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात भी उपस्थित रहे। बैठक में अपनाए गए संयुक्त घोषणापत्र में तेजी से हो रहे वैश्विक बदलावों के बीच खुले, निष्पक्ष और लचीले वैश्विक माहौल को बढ़ावा देने, बहुपक्षीय प्रणाली को मजबूत करने और आर्थिक और सामाजिक लचीलापन बढ़ाने की सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि की गई।

सिंगापुर ओपन में सात्विक-चिराग करेंगे भारतीय चुनौती का नेतृत्व, सिंधु-प्रणय पर भी रहेंगी निगाहें

एजेंसी

नई दिल्ली। सिंगापुर ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट मंगलवार से शुरू होने जा रहा है, जिसमें भारत की स्टार जोड़ी सात्विकसैराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की बहुप्रतीक्षित वापसी देखने को मिलेगी। चोटों से जूझने के बाद अब यह जोड़ी पूरी तरह फिट है और मलेशिया की जोड़ी चूंग हॉन जियान और मुहम्मद हैकाल के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी।पूर्व वर्ल्ड नंबर-1 सात्विक और चिराग आखिरी बार ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप में खेले थे, लेकिन चिराग की पीठ की चोट के कारण दूसरे दौर से हट गए थे। इसके बाद सात्विक की तबीयत के चलते वे सुदीरमन कप से भी बाहर रहे। अब दोनों फिर से टॉप लेवल पर खेलने को तैयार हैं। 2023 विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता एच.एस. प्रणय, जो पिछले साल चिकनगुनिया से जूझ रहे थे, अब वापसी की राह पर हैं। वह डेनमार्क के रासमुस गेमके के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। पेरिस ओलंपिक सेमीफाइनल तक पहुंचने वाले लक्ष्य सेन के लिए यह टूर्नामेंट अहम होगा। इस साल उन्होंने चार बार पहले ही राउंड में हार झेली है। उनका पहला मुकाबला लिन चुन यी से होगा।

केकेआर कप्तान अजिंक्य रहाणे को भरोसा- अगले साल और मजबूत होकर वापसी करेंगे

नई दिल्ली। गत चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) का आईपीएल 2025 का सफर रविवार को दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ हार के साथ समाप्त हो गया। मैच और पूरे सीजन के प्रदर्शन पर ईमानदारी से प्रतिक्रिया देते हुए कप्तान अजिंक्य रहाणे ने कहा, इस सीजन में हमारे लिए उतार-चढ़ाव रहे। हमारे पास मौके थे, लेकिन एक यूनिट के तौर पर हम बेहतर नहीं खेले। टीम की तैयारी और सीजन भर के प्रदर्शन पर रहाणे ने कहा, एक कप्तान के तौर पर मैंने देखा कि तैयारी में सभी ने अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश की। जब आप एक सीजन जीतते हैं और अगले में खिताब बचाने उतरते हैं, तो यह आसान नहीं होता। सभी टीमों ने अच्छी तैयारी की थी और हमने भी पूरी कोशिश की। मैं बस इतना कह सकता हूं कि हम अगले साल और मजबूत होकर वापसी करेंगे। रहाणे ने गेंदबाजों के संघर्ष के बावजूद उनका समर्थन किया और कहा, हमारी गेंदबाजी मिलीजुली रही, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने अच्छा काम किया। पिचें बल्लेबाजों के लिए मददगार रहीं, इसलिए 200+ के स्कोर काफी देखने को मिले, लेकिन पूरे सीजन में हमारी गेंदबाजी यूनिट ने बेहतर प्रदर्शन किया।

प्लान के मुताबिक खेले तो वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करना पक्का : उपकप्तान हार्दिक सिंह

नई दिल्ली। एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024-25 (पुरुष) के विदेशी चरण की शुरुआत से पहले भारतीय पुरुष हॉकी टीम अंकतालिका में मजबूत तीसरे स्थान पर काबिज है। इस बीच टीम के उपकप्तान हार्दिक सिंह ने जोर देकर कहा है कि अगर टीम योजना के अनुसार खेले और ज़्यादा से ज़्यादा अंक बटोरे, तो भारत के पास एफआईएच हॉकी वर्ल्ड कप 2026 के लिए क्वालीफाई करने का बेहतरीन मौका है।हार्दिक ने कहा, हमने टीम के अंदर इस बात पर चर्चा की है कि अगर हम प्लान के मुताबिक चलें, हर मैच से पॉइंट हासिल करें–चाहे ड्रॉ हो या शूटआउट से पॉइंट मिलें, तो हमारे पास वर्ल्ड कप में जगह बनाने का रियलिस्टिक चांस है। उन्होंने आगे कहा, बेल्जियम (फिलहाल रैंक 2) और नीदरलैंड (जो भारत से एक स्थान पीछे हैं, रैंक 4) टूर्नामेंट के को-होस्ट होने के कारण वर्ल्ड कप के लिए ऑटोमैटिक क्वालिफाई कर चुके हैं। ऐसे में इंग्लैंड (शीर्ष पर), जर्मनी और स्पेन जैसे टीमें असली प्रतिद्वंदी होंगी। अर्जेंटीना के खिलाफ होने वाले मुकाबले भी बेहद अहम होंगे। यह हमारे लिए एक बड़ा चैलेंज है और अगर हम जल्दी क्वालिफाई कर लेते हैं, तो वर्ल्ड कप की तैयारी के लिए ज्यादा समय मिलेगा।

वेस्टइंडीज पर 17 रनों की जीत के साथ इंग्लैंड तीन मैचों की सीरीज में किया क्लीन स्वीप

चेम्सफर्ड। हीथर नाइट (नाबाद 66) के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड की महिला टीम ने तीसरे टी-20 मुकाबले में वेस्टइंडीज पर 17 रनों की जीत के साथ तीन मैचों की सीरीज 3-0 से अपने नाम कर ली है। आज यहां वेस्टइंडीज की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी इंग्लैंड ने निर्धारित 20 ओवरों में पांच विकेट पर 144 रनों का स्कोर खड़ा। हीथर नाइट ने 47 गेंदों में (नाबाद 66) रनों की पारी खेली। नेट सायवर ब्रंट ने (37) और एमी जोंस ने (22) रन बनाये। वेस्टइंडीज की ओर से हेली मैथ्यूज ने तीन विकेट लिये। जायडा जेम्स और जे क्लैक्सटन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज इंग्लैंड के गेंदबाजी आक्रमण के आगे टिक नहीं खेल सके। वेस्टइंडीज की टीम नियमित अंतराल पर विकेट गवांती रही।

कार्लो एंसेलोटी ने ब्राज़ील की पहली टीम का किया ऐलान, नेमार बाहर, कासेमीरो की वापसी

एजेंसी

रियो डी जनेरियो। ब्राज़ील के नए कोच कार्लो एंसेलोटी ने अपनी पहली 25 सदस्यीय टीम का ऐलान किया, जिसमें सबसे बड़ा नाम गायब रहा – नेमार। चोट से जूझ रहे नेमार हाल ही में सैंटोस क्लब में लौटे हैं, लेकिन एंसेलोटी ने बताया कि वो अभी राष्ट्रीय टीम में वापसी के लिए पूरी तरह फिट नहीं हैं। एंसेलोटी ने कहा, दुर्भाग्य से हमारे कई खिलाड़ी चोटिल हैं, जिनमें नेमार भी शामिल हैं। लेकिन हम उन पर भरोसा करते हैं। मैंने आज सुबह उनसे बात की और वह पूरी तरह सहमत हैं।

कासेमीरो की वापसी, अनुभव पर जोर

टीम में मिडफील्डर कासेमीरो की वापसी हुई है, जो पिछले लगभग डेढ़ साल से टीम से बाहर चल रहे थे। 2022 विश्व कप में टीम के कप्तान रहे कासेमीरो की वापसी को एंसेलोटी ने नेतृत्व और बलिदान की जरूरत से जोड़ा। कोच ने कहा,

राष्ट्रीय टीम को ऐसे खिलाड़ियों की जरूरत है जिनमें करिश्मा, टैलेंट और समर्पण हो – कासेमीरो उन खिलाड़ियों में से हैं। रियल मैड्रिड छोड़ने के बाद ब्राज़ील की कमान संभालने वाले एंसेलोटी ने अपने पुराने शिष्य विनीसियस जूनियर पर पूरा भरोसा जताया। उन्होंने कहा, मैं पूरी तरह से मानता हूं कि विनीसियस राष्ट्रीय टीम में भी अपना सर्वश्रेष्ठ रूप दिखाएंगे। फिर उन्होंने मजाक में कहा, जैसे मैड्रिड में... लेकिन इस साल वाला नहीं, पिछले साल वाला।

ब्राज़ील के कोच बने पहले विदेशी, एंसेलोटी ने मीडिया को किया प्रभावित

65 वर्षीय एंसेलोटी ब्राज़ील की राष्ट्रीय टीम के पहले पूर्णकालिक विदेशी कोच हैं। उन्होंने अपने प्रेस कॉन्फ्रेंस में करीब 200 मीडिया कर्मियों को अपने जवाबों से प्रभावित किया। उन्होंने कहा, ब्राज़ीलियाई समाज मुझसे 24 साल बाद वर्ल्ड कप जीत की उम्मीद कर रहा है – यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है।

ब्राज़ील की 25 सदस्यीय टीम इस प्रकार है:

गोलकीपरः एलिसन (लिवरपूल)

बेंटो (अल-नासर), ह्यूगो सूज़ा (कोरिंथियंस)।

डिफेंडरः एलेक्स सैंड्रो, डानीलो, लियो ओर्टिज़, वेज़ले (सभी फ्लेमिंगो), एलेक्ससैन्ड्रो (लिल),

लुकास बेराल्डो (पीएसजी), कार्लोस ऑगस्टो (इंटर मिलान), वैंडरसन (मोनाको)।

मिडफील्डरः एंड्रियास पेरेरा (फुलहम), एंड्री सैंटोस (स्ट्रासबर्ग),

ब्रूनो गिमाराइश (न्यूकासल), कासेमीरो (मैनचेस्टर यूनाइटेड)

एडरसन (अटलांटा), गेरसन।

फॉरवर्डः एंटनी (रियल बेटिस),

एस्तेवं (पाल्मेरास), गैब्रिएल मार्टिनेली (आर्सेनल), मथियस कुन्हा (वॉल्वरहैम्प्टन), रफिन्हा (बार्सिलोना), रिचार्लिसन (टॉटनहम), विनीसियस जूनियर (रियल मैड्रिड)।

टेनिस बॉल क्रिकेट को मिलेगा अंतरराष्ट्रीय मंच, रिद्धिमान साहा बोले- अब खिलाड़ियों को मिलेगा उनका हक

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज रिद्धिमान साहा ने कहा है कि पहली बार भारत में आयोजित होने जा रहे टेनिस क्रिकेट बॉल वर्ल्ड कप और एशिया कप जैसे टूर्नामेंट न केवल खिलाड़ियों को एक बड़ा मंच देंगे, बल्कि उन्हें पहचान और सम्मान भी दिलाएंगे। साहा हाल ही में सर्वोटेक स्पोर्ट्स के साथ बतौर मेंटोर जुड़े हैं और अब वह देशभर में इस खेल को नई दिशा देने में जुटे हैं।ड्रीम लीग ऑफ इंडिया (डीएलआई) के तहत आयोजित हो रहे ये टूर्नामेंट टेनिस बॉल से खेले जाने वाले पहले वैश्विक और महाद्वीपीय क्रिकेट टूर्नामेंट होंगे, जो इस अनौपचारिक मगर बेहद लोकप्रिय फॉर्मेट को मुख्यधारा में लाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। साहा ने कहा, मैंने भी अपने करियर की शुरुआत टेनिस बॉल क्रिकेट से की थी, और आज जब देशभर के युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का इतना बड़ा मंच मिल रहा है, तो यह गर्व की बात है।÷ उन्होंने आगे कहा कि अब इन खिलाड़ियों को वह पहचान मिलेगी जिसके वे हकदार हैं। लीग के रणनीतिकार चैतन्य नंदा ने बताया कि डीएलआई के प्रदर्शन के आधार पर ही खिलाड़ियों का चयन आईटीसीएफ (अंतरराष्ट्रीय टेनिस क्रिकेट महासंघ) के जरिए वर्ल्ड कप और एशिया कप के लिए किया जाएगा। इसके लिए पूरे देश में 1500 से अधिक प्रमाणित कोचों की निगरानी में खुले ट्रायल्स होंगे लीग जूनियर (13-18 वर्ष) और सीनियर (18+ वर्ष) दोनों वर्गों में आयोजित की जाएगी, जिसमें 6-6 फ्रेंचाइजी टीमें भाग लेंगी। 860-860 खिलाड़ियों को नीलामी के लिए शॉर्टलिस्ट किया जाएगा, जिसके बाद फ्रेंचाइजी टीमें अपने खिलाड़ी चुनेंगी। नीलामी में अनसोल्ड रहे खिलाड़ी इंटर-जोनल टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगे।

रोनाल्डो ने अल नास्र को छोड़ने के दिए संकेत, अंतिम मुकाबले के बाद सोशल मीडिया पोस्ट से अटकलें तेज़

एजेंसी

नई दिल्ली। सऊदी प्रो लीग के आखिरी मुकाबले में अल नास्र की ओर से गोल दागने वाले क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने मैच के बाद सोशल मीडिया पर ऐसा मैसेज पोस्ट किया जिससे उनके क्लब छोड़ने की अटकलें तेज़ हो गई हैं।

रोनाल्डो ने अपनी अल नास्र जर्सी में एक तस्वीर साझा करते हुए लिखा , यह चैप्टर खत्म हुआ। कहानी अभी बाकी है। सभी का आभार। गौरतलब है कि रोनाल्डो का अल नास्र के साथ अनुबंध जून में समाप्त हो रहा है। इस सीज़न में उन्होंने 25 गोल दागे और सऊदी प्रो लीग के टॉप स्कोरर रहे, लेकिन इसके बावजूद अल नास्र टीम एएफसी चैंपियंस लीग के लिए क्वालिफाई नहीं कर सकी।

अंतिम मुकाबले में 99वां गोल, टीम को मिली हार

अल फतेह के खिलाफ खेले गए अंतिम लीग मुकाबले में रोनाल्डो ने एक गोल दागा, जो उनके क्लब करियर का 801वां और अल नास्र के लिए 99वां गोल था। हालांकि, अल नास्र को इस रोमांचक मुकाबले में 3-2 से हार का सामना करना पड़ा।

ब्राज़ीलियन क्लब से मिला ऑफर?

कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार, रोनाल्डो को एक ब्राज़ीलियन क्लब से आकर्षक प्रस्ताव मिला है, जिसमें उन्हें आगामी फीफा क्लब वर्ल्ड कप में खेलने का मौका मिल सकता है। यह टूर्नामेंट 14 जून से 13 जुलाई तक अमेरिका में आयोजित होना है। ब्राज़ील की ओर से बोटाफोगो, फ्लूमिनेंस, फ्लैमेंगो और पामेइरस जैसे बड़े क्लब इसमें हिस्सा लेंगे।

क्या अब अगला कदम क्लब वर्ल्ड कप?

अब देखना दिलचस्प होगा कि क्या रोनाल्डो क्लब वर्ल्ड कप में खेलने के लिए ब्राज़ील की ओर रुख करेंगे या फिर उनके करियर की कहानी में कोई और बड़ा मोड़ आने वाला है। फिलहाल उन्होंने संकेत दे दिया है - कहानी अभी जारी है...

आईपीएल 2025: जोश हेजलवुड बने आरसीबी के जसप्रीत बुमराह

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के लिए जोश हेजलवुड उसी तरह अहम बन चुके हैं जैसे जसप्रीत बुमराह मुंबई इंडियंस और टीम इंडिया के लिए हैं। अपनी सटीक गेंदबाजी से हेजलवुड ने आरसीबी की गेंदबाजी इकाई को मजबूती दी है और अब लखनऊ सुपर जाएंट्स (एलएसजी) के खिलाफ अहम मुकाबले में उनसे बड़ी उम्मीदें होंगी। ऑस्ट्रेलियाई पेसर हेजलवुड ने इस सीजन पावरप्ले में 7 विकेट और डेथ ओवर्स (आखिरी 4 ओवर) में 6 विकेट चटकाए हैं। उनका इकॉनमी रेट क्रमशः 7.22 और 9.04 रहा है, जो इस फेज में किसी भी गेंदबाज के लिए शानदार माना जाता है। खास बात ये है कि हेजलवुड ने पावरप्ले में अपनी टीम के कुल रन का सिर्फ 26.86 प्रतिशत ही खर्च किया, जबकि वह हर मैच में कम से कम दो ओवर इस फेज में जरूर डालते हैं। इकाना स्टेडियम में जब आरसीबी का सामना एलएसजी से होगा, तो हेजलवुड की वापसी टीम के लिए राहत लेकर आएगी। अहमदाबाद में गुजरात टाइटंस के खिलाफ जबरदस्त बल्लेबाज़ी करने वाली एलएसजी की टीम को रोकने के लिए आरसीबी को अपने इस स्टार तेज़ गेंदबाज़ से

शुरुआती विकेट की दरकार होगी। सीज़न के सस्पेंड होने से पहले हेजलवुड ने पावरप्ले में सबसे ज़्यादा 6 विकेट अपने पहले ही ओवर में चटकाए थे।सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 42 रन की हार के बाद इंग्लिश बल्लेबाज फिल सॉल्ट ने माना कि आरसीबी जीत के करीब थी। उन्होंने कहा, हमने लक्ष्य का पीछा करने में कई अच्छी चीजें कीं। ज़्यादातर समय मार्जिन बहुत बारीक थे। लेकिन आज गलती की कोई गुंजाइश नहीं थी। आरसीबी के लिए ये मुकाबला प्लेऑफ की तैयारी और टॉप-2 में पहुंचने की उम्मीद को ज़िंदा रखने का मौका है। इसके लिए टीम को मंगलवार को हर मोर्चे पर सटीक रणनीति के साथ उतरना होगा और हेजलवुड की भूमिका एक बार फिर से निर्णायक होगी।

नॉर्वे शतरंज 2025 : कार्लसन ने उद्घाटन मुकाबले में गुकेश को हराया

एजेंसी

नई दिल्ली।नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट 2025 की धमाकेदार शुरुआत हो चुकी है। पहले ही दिन पूर्व विश्व चैंपियन मैग्नस कार्लसन ने मौजूदा विश्व चैंपियन डी. गुकेश को मात देकर बड़ा संदेश दे दिया। यह मुकाबला नॉर्वे के स्टावेंगर में खेला गया। खास बात यह रही कि यह गुकेश और कार्लसन के बीच पहला क्लासिकल मुकाबला था, जब से गुकेश ने सिंगापुर में विश्व खिताब जीता है। वहीं, एक अन्य रोमांचक मुकाबले में भारत के अर्जुन एरिगैसी ने चीन के वे यी को आर्मागेडन में हराया। क्लासिकल मुकाबला ड्रॉ रहने के बाद टाईब्रेक में अर्जुन ने बाजी मारी। महिला वर्ग में भी भारतीयों के बीच कड़ा मुकाबला

देखने को मिला, जहां कोनेरु हम्पी ने आर. वैशाली को हराते हुए अभियान की शानदार शुरुआत की।

पहले दौर के बाद अंक स्थितिः

ओपन वर्ग में मैग्नस कार्लसन और हिकारू नाकामुरा 3-3 अंकों के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर हैं। अर्जुन एरिगैसी के 1.5 अंक हैं, जबकि वे यी 1 अंक के साथ चौथे स्थान पर हैं। फबियानो करूआना और डी. गुकेश को अभी खाता खोलना बाकी है। महिला वर्ग में कोनेरु हम्पी 3 अंकों के साथ पहले स्थान पर हैं।

अन्ना मुझिचुक और ली टिंगजी के 1.5-1.5 अंक हैं। जू वेनजुन और सारा खादेम 1-1 अंक के साथ बराबरी पर हैं, जबकि आर. वैषाली को अभी पहला अंक हासिल करना है। आगे के मुकाबलों में युवा और अनुभवी खिलाड़ियों के बीच जबरदस्त टक्कर देखने को मिलने की उम्मीद है।

आर पी भटनागर इलाहाबाद क्रिकेट के स्वर्णिम युग के गुमनाम शिल्पकार

एजेंसी

प्रयागराज। आर.पी. भटनागर का नाम इलाहाबाद की क्रिकेट विरासत में गहराई से जुड़ा हुआ है। वे एक सच्चे खेल प्रेमी हैं और आज 84 वर्ष की आयु में भी उसी ऊर्जा और उत्साह के साथ जीवन जीते हैं, जैसा कि उनके क्रिकेट के दिनों में हुआ करता था। वे उस बीते दौर से ताल्लुक रखते हैं, जिसकी पीढ़ी अब लगभग समाप्त हो चुकी है। इलाहाबाद क्रिकेट के शुरुआती दिनों की उनकी यादें और अनुभव आज भी प्रेरणादायक हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। उनका क्रिकेट सफर 1959-60 में के.पी इंटर कॉलेज की क्रिकेट टीम के कप्तान के रूप में शुरू हुआ। इसके बाद 1960-61 में वे सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज की टीम के कप्तान बने। इसके पश्चात 1961-62 और 1962-63 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की टीम का प्रतिनिधित्व किया। 23 जुलाई 1963 को उन्होंने ए.जी.यू.पी. (लेखा महानियंत्रक, उत्तर प्रदेश) में नौकरी जॉइन की और वहां की क्रिकेट टीम के लिए खेलते हुए कप्तानी भी की। वर्ष 1964-65 में वे इलाहाबाद जिला क्रिकेट टीम के कप्तान बने और उसी वर्ष उन्होंने उत्तर प्रदेश रणजी ट्रॉफी टीम का प्रतिनिधित्व भी किया। अपने खेल जीवन के बाद उन्होंने चयनकर्ता के रूप में भी क्रिकेट में योगदान दिया और 1998 से 2003 तक उत्तर प्रदेश रणजी ट्रॉफी टीम के चयनकर्ता रहे। उनका योगदान सिर्फ खेल तक सीमित नहीं रहा, उन्होंने क्रिकेट के संगठन और प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आईपीएल 2025: पंजाब ने मुंबई को 7 विकेट से हराकर क्वालिफायर-1 में बनाई जगह

एजेंसी

जयपुर। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में खेल रही पंजाब किंग्स ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ जोरदार जीत दर्ज करते हुए आईपीएल 2025 के प्लेऑफ में टॉप-2 में जगह पक्की कर ली है। जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में खेले गए इस अहम मुकाबले में पंजाब ने मुंबई को 7 विकेट से मात दी और पहले क्वालिफायर में प्रवेश कर लिया।टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी मुंबई इंडियंस ने तेज शुरुआत की। रोहित शर्मा (24 रन) और रायन रिकल्टन (27 रन) ने पावरप्ले में रन बटोरे, लेकिन बड़ी पारी नहीं खेल सके। इसके बाद सूर्यकुमार यादव (57 रन) ने एक बार फिर अपनी शानदार फॉर्म जारी रखते हुए टीम को संभाला। कप्तान हार्दिक पांड्या ने 26 और नमन धीर ने 20 रन का योगदान दिया। आखिरी ओवर में

अर्शदीप सिंह ने महज 3 रन देकर 2 विकेट झटके और मुंबई को 200 रन तक पहुंचने से रोक दिया। मुंबई ने निर्धारित 20 ओवर में 185/8 का स्कोर खड़ा किया। पंजाब की ओर से अर्शदीप सिंह, मार्को यानसेन और विजयकुमार व्यशाक को दो-दो सफलता मिली। जबकि एक विकेट हरप्रीत बरार के खाते में गया। 186 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी पंजाब की शुरुआत थोड़ी धीमी रही। प्रभसिमरन सिंह (13 रन) सस्ते में आउट हो गए, लेकिन इसके बाद प्रियांश आर्या (62 रन) और जॉश इंग्लिस (73 रन) ने मिलकर मैच का रुख पलट दिया।

दोनों ने न केवल मुंबई के घातक गेंदबाजों को निशाना बनाया, बल्कि बड़े-बड़े शॉट्स खेलते हुए रन गति को लगातार ऊंचा बनाए रखा। उनकी साझेदारी ने मैच को एकतरफा बना दिया।

अंत में कप्तान श्रेयस अय्यर ने संयमित अंदाज में टीम को लक्ष्य तक पहुंचाया और विजयी छक्का लगाकर मैच खत्म किया। पंजाब ने लक्ष्य को 19 ओवर में ही हासिल कर लिया। मुंबई के लिए मिशेल सेंटनर ने दो और जसप्रीम बुमराह ने एक विकेट चटकाए।

फ्रिट्ज हुये उलटफेर का शिकार, सितसिपास, बडोसा अगले दौर में

एजेंसी

पेरिस। फ्रेंच ओपन 2025 के दूसरे दिन जर्मनी के डेनियल अल्टमायर ने उलटफेर करते हुए चौथी वरीयता प्राप्त अमेरिका के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी टेलर फ्रिट्ज को हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। वही स्टेफानोस सितसिपास और पाउला बडोसा ने अगले दौर में जगह बना ली हैं। आज यहां रोलांड गैरोस के क्ले कोर्ट पर खेले गये मुकाबले में जर्मनी के डेनियल अल्टमायर चौथी वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज को 7-5, 3-6, 6-3, 6-1 से हराकर टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। डेनियल अल्टमायर ने आक्रामक और रणनीतिक खेल का प्रदर्शन करते हुए फ्रिट्ज की लय को बाधित कर निर्णायक जीत दर्ज की। अब अल्टमायर का अगले दौर में चेक गणराज्य के विट कोप्रिवा से मुकाबला होगा।

तेजस्विनी के स्वर्णिम निशाने से भारत ने जीता सुहल जूनियर शूटिंग विश्व कप का ताज

एजेंसी

नई दिल्ली। हरियाणा की 20 वर्षीय निशानेबाज तेजस्विनी ने अपने शानदार प्रदर्शन से भारत को अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) जूनियर विश्व कप 2025 में शीर्ष स्थान दिला दिया है। प्रतियोगिता के अंतिम दिन महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में तेजस्विनी ने स्वर्ण पदक जीतकर भारत को चीन जैसे शूटिंग पावरहाउस पर बढ़त दिलाई। तेजस्विनी का यह पहला व्यक्तिगत विश्व कप पदक है और भारत के लिए यह प्रतियोगिता का तीसरा स्वर्ण और कुल 11वां पदक रहा। भारत ने चार रजत और चार कांस्य पदक भी अर्जित किए। हालांकि चीन ने भी तीन स्वर्ण पदक जीते, लेकिन पदकों की कुल संख्या में भारत आगे रहा। पहले दिन क्वालिफिकेशन में तेजस्विनी 24वें स्थान पर थीं, परंतु दूसरे दिन की रैपिड-फायर श्रृंखला में 293 अंकों की बेहतरीन शूटिंग से उनका कुल स्कोर 575 हो गया, जिससे वह चौथे स्थान पर पहुंचकर फाइनल में जगह बनाने वाली एकमात्र भारतीय बनीं। फाइनल मुकाबले में दस रैपिड-फायर श्रृंखलाओं में तेजस्विनी ने 31 अंक अर्जित किए और व्यक्तिगत तटस्थ एथलीट (एआईएन) अलीना नेस्तसियारोविच (29 अंक) को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता। हंगरी की मिरियम जाको ने कांस्य पदक प्राप्त किया। फाइनल की शुरुआत से ही तेजस्विनी का प्रदर्शन दमदार रहा।

पहले दो राउंड में उन्होंने लगातार चार-चार अंक हासिल किए और क्वालिफिकेशन टॉपर चीन की झाओ ताओताओ को कड़ी टक्कर दी। पांचवीं श्रृंखला में झाओ की चूक ने उन्हें पीछे धकेल दिया और तेजस्विनी ने बढ़त कायम रखते हुए मुकाबला अपने नाम किया।

‘डबल जलेबी’ से ओलंपिक तकः हॉकी खिलाड़ी अंगद बीर सिंह की प्रेरक यात्रा

एजेंसी

नई दिल्ली। हर खिलाड़ी के करियर में एक ऐसा पल होता है, जब वह खुद को साबित करता है, कुछ अलग करके, कुछ ऐसा जो दर्शकों और कोच दोनों को चौंका देता है। हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) में कलिंगा लांसर की ओर से खेलने वाले 22 वर्षीय अंगद बीर सिंह के लिए वह डिफाइनिंग मोमेंट था. उनका सिग्नेचर मूव ‘डबल जलेबी’, जिसने उन्हें रातों-रात सुर्खियों में ला दिया।

‘डबल जलेबी’: एक वायरल मूव, मेहनत की मिसाल

तमिलनाडु ड्रैगन्स के खिलाफ एक हाई-प्रेशर शूटआउट में अंगद ने गोलकीपर डेविड हार्ट को चकमा देते हुए जो गोल दागा, वह सिर्फ एक शॉट नहीं था, वह उनके जुनून, अभ्यास और आत्मविश्वास का प्रतीक था। सोशल मीडिया पर इस मूव ने धूम मचा दी, लाखों लाइक्स और हजारों शेयर के साथ अंगद एक इंटरनेट सनसनी बन गए।अंगद कहते हैं, मैंने इसे सालों तक अभ्यास में तराशा है। एचआईएल कैंप में खासतौर पर इस पर ध्यान दिया क्योंकि मुझे पता था कि शूटआउट में ऐसे शॉट्स निर्णायक हो सकते हैं। जब लोगों को ये पसंद आया, तो लगा मेहनत बेकार नहीं गई। अब मैं इसे और बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा हूं।

रणनीति, अभ्यास और आत्मविश्वास का मेल

‘डबल जलेबी’ सिर्फ एक ट्रिक नहीं, बल्कि एक रणनीतिक हथियार है, जहां तकनीक, टाइमिंग और साहस का संगम होता है। यही कारण है कि यह मूव सिर्फ दर्शकों का ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कोचों का ध्यान भी खींच लाया। इसके चलते अंगद

को एफआईएच प्रो लीग में भारतीय सीनियर टीम के लिए खेलने का मौका मिला। कलिंगा लांसर के कोच वेलेंटिन आल्टनबर्ग ने अंगद की प्रशंसा करते हुए कहा, अंगद की तेजी, आत्मविश्वास और मैच के दबाव में सही निर्णय लेने की क्षमता अद्वितीय है। ‘डबल जलेबी’ सिर्फ एक स्टाइलिश मूव नहीं, बल्कि उनके खेल में गहराई और समझ का प्रमाण है। अपने हॉकी सफर पर बात करते हुए अंगद ने साझा किया कि बचपन से मेरा सपना था कि मैं भारत की जर्सी पहनूं। मैंने जूनियर लेवल पर खेला, राज्य का प्रतिनिधित्व किया, एचआईएल में अनुभव लिया और फिर भारत के लिए डेब्यू किया। अब मेरा अगला लक्ष्य है ओलंपिक गोल्ड। वह मानते हैं कि जूनियर से सीनियर स्तर पर संक्रमण चुनौतीपूर्ण था, लेकिन उन्होंने हरमनप्रीत सिंह और हार्दिक सिंह जैसे खिलाड़ियों से बहुत कुछ सीखा है। उन्होंने बताया कि ÷सीनियर हॉकी में रणनीति की अहमियत बढ़ जाती है। हर मैच एक शतरंज की तरह होता है, जहां हर मूव सोच-समझकर खेलना होता है। लेकिन यहीं असली मजा भी है।÷ अंगद ने कहा कि अब जब वो भारतीय सीनियर टीम में हैं, तो उनकी निगाहें वर्ल्ड कप 2026 और फिर ओलंपिक 2028 पर टिकी है। उनका कहना है कि हर दिन मैं उसी सपने को जीता हूं। हर अभ्यास, हर मैच, हर मूव उसी एक लक्ष्य की ओर है, भारत के लिए ओलंपिक गोल्ड जीतना।

आंखें हैं अनमोल, इन्हें दें खास केयर

आंखें बहुत अनमोल होती है। आंखों से हम प्राकृतिक नजारों का मज़ा लेते हैं। इसलिए इनकी देखभाल करना भी बहुत जरूरी है। अगर हम इनकी अच्छे से केयर करें तो काफी हद तक आंखों की परेशानियों से निजात पाई जा सकती है। अच्छा खान-पान,विटामिन-ए युक्त आहार और कुछ अन्य बातों का ध्यान रखकर हम अपनी आंखों की सुंदरता बरकरार रख सकते हैं। आज हम आपको ऐसे टिप्स बताते हैं जिसकी मदद से आप अपनी आंखों की अच्छे से देखभाल कर सकते हैं।

1. **आंखों की सफाई**

आंखों को स्वस्थ रखने के लिए इनकी सफाई रखना बहुत जरूरी है। कई बार आंखों में जलन, खुजली, पानी आना, आंखों का लाल होना जैसी समस्या भी आ सकती है। इसके लिए आप आंखों को दिन में 3-4 बार ठंडे पानी से अच्छीं तरह से धोएं।

2. पौष्टिक भोजन अपने आहार में विटामिन -ए , प्रोटीन वाले भोजन शामिल करें जैसे दूध, पनीर, मक्खन,अंडे,फल शामिल करें।

3. खाली पेट पानी पीएं

सुबह उठकर पानी पीने से शरीर में से विषैले तत्व बाहर निकल जाते है। दिन में 8-9 गिलास पानी-पीना आंखों के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

4. अच्छी नींद डाक्टरों के अनुसार दिन में 8 घंटे की नींद लेना बहुत जरूरी है। इससे आंखों को आराम मिलता है और काले घेरे भी कम हो जाते है।

5. कंप्यूटर से उचित दूरी

कंप्यूटर पर काम करते वक्त स्क्रीन से दूरी बनाएं रखें। लगातार आंखे गडाकर न बैठे बीच-बीच में इन्हे थोडा आराम भी दें। कंप्यूटर पर काम करते समय अपनी कुर्सी को कंप्यूटर की ऊंचाई के हिसाब से रखें।

6. आंखों का चेकअप

अगर आपको देखने में परेशानी हो रही है या सिर में दर्द होता है तो आपनी आंखों का चेकअप जरूर करवाएं। खासकर डायबिटीज के रोगियों को समय-समय पर आंखों का चेकअप जरूर करवाना चाहिए।

7. अच्छी क्वालिटी का मेकअप

आंखों पर हमेशा बढिया क्वालिटी का ही मेकअप यूज करें। काजल और शैडो का कम से कम इस्तेमाल करें। रात को सोने से पहले आंखों का मेकअप जरूर हटाएं।

8. चश्में का करें इस्तेमाल

आंखों में थकान होने पर गुलाब जल में रूई भिगोकर आंखों पर रखने से आंखों को राहत मिलती है। धूप में घर से बाहर जाते समय सूरज की तेज किरणो से बचने के लिए आंखो पर चश्मे जरूर लगाएं।

चेहरे को बेदाग बनाने के लिए आसान और घरेलू नुस्खे

बेदाग चेहरा हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है लेकिन कई बार धूल-मिट्टी की वजह से चेहरे की चमक गायब हो जाती हैं। दरअसल, धूल-मिट्टी हमारे चेहरे के रोम छिद्रों में फंस जाती है जो बाद में ब्लैकहेडस के रूप में हमारे सामने आते हैं। भद्दे दिखाई देने वाले इन ब्लैकहेडस से ज्यादातर परेशानी टीनएजर लड़के-लड़कियों को होती है। इससे छुटकारा पाने के लिए वे महंगे ब्यूटी प्रॉडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं। इन प्रॉडक्ट्स में कैमिकल्स काफी मात्रा में होते हैं जो त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं इसलिए बेहतर होगा अगर इसका उपचार घरेलू नुस्खों से किया जाए। इससे न केवल ब्लैकहैड्स दूर होंगे बल्कि स्किन भी ग्लोइंग दिखेगी।

-बेकिंग सोडा चेहरे से ब्लैकहेड्स दूर करने का एक कारगार तरीका है। यह रोम छिद्रों में जमी गंदगी को बाहर कर चेहरे को पूरी तरह से साफ करता है। -दालचीनी और हल्दी को नींबू के रस में मिलाकर चेहरे पर लगाने से भी ब्लैकहेड्स दूर किए जा सकते हैं। -ओट मील और दही के मिश्रण को चेहरे पर लगाने से जिद्दी ब्लैकहैड्स भी दूर हो जाते हैं।

- नींबू का रस त्वचा की टैनिंग और दाग-धब्बों को हटाने में बेहद असरदार है। इससे ब्लैकहैड्स भी आसानी से निकल जाते हैं। -ग्रीन टी पीने और इसका पैक चेहरे पर लगाने से ब्लैकहैड्स पूरी तरह से साफ हो जाते हैं। -शहद ड्राई स्कि?न को नमी तो देता ही है, इसी के साथ वह ब्लैकहैड्स को खत्म करके पोर्स में कसावट भी लाता है, जिससे चेहरा ग्लोइंग नजर आता है।

गर्मियों में मेकअप करने के लिए अपनाएं ये 6 टिप्स

गर्मियों के मौसम में हमें अपनी त्वचा का खास ध्यान रखना पड़ता है। इस मौसम में हमें अपनी त्वचा के हिसाब से ही मैच करता हुआ मेकअप करना होता है ताकि हमारा मेकअप ज्यादा समय तक टिका रहें और खराब न हो। ऐसे मौसम में हमे अपनी स्किन को सॉफ्ट, लाइट और शाइनी रखने के लिए वाटरप्रूफ और लाइट मेकअप का ही इस्तेमाल करना चाहिए। ज्यादा गर्मी में लड़कियां ग्लैमरस लुक पाने के लिए सन प्रोटैक्शन मेकअप व नैचुरल लुक का मेकअप ही पसंद करती हैं। यह मेकअप हमारे चेहरे पर पिंपल्स और डार्क सर्कल्स को होने से बचातें हैं। आज हम आपको गर्मियों में मेकअप करने के लिए आसान से टिप्स बताएगें। तो आइए जानते हैं...

- अगर आपका रंग सांवला है तो आप मेकअप में डीप यलो या रिच गोल्डन टोन फाउंडेशन का इस्तेमाल करें।

- फेयर कॉम्प्लेक्शन वालों को नैचुरल लुक पाने के लिए टिंटेड मॉइश्चराइजर का ही प्रयोग करना चाहिए।

- गर्मियों के मौसम में कम से कम मेकअप करें और बालों की क्लीन और अच्छी लुक पाने के लिए पीछे की ओर ही रखें। - अगर आपके पास आंखों का मेकअप करने के लिए समय कम है तो ब्राउन आईशैडो का डार्क शेड ही लगाएं और ब्रश की सहायता से अपने आईलिड पर काफी सारा मस्कारा लगाएं। इसी तरह से आप आंखों में काजल लगा लें।

- अगर आप गर्मियों के मौसम में किसी पार्टी में जा रही है तो लाइट मेकअप करें। लाइट मेकअप मे काजल, ब्लश ऑन और न्यूड लिप्स आपको हॉट लुक देंते हैं।

- सिंपल लुक के लिए आप अपने चेहरे पर स्किन टोन से मैच करता हुआ फाउंडेशन लगाएं औप बाद में इसे ठीक करने के लिए थोड़ा सा पाउडर लगाएं। आप अपनी चिक्स पर पीच शेड का ब्लशर और होठों पर पीच या पिंक शेड की लिपस्टिक ही लगाएं। - कॉलेज जाने वाली लड़कियां आईशैडो का इस्तेमाल न करें। वह आंखों पर पतला सा आईलाइनर और मस्कारा लगाएं। यह आपकी आंखों की धूप में सुरक्षा करता है।

सुंदरता बढ़ाए हर्बल बाथ

आज हमारी लाइफ इतनी ज्यादा भाग-दौड़ वाली एवं अव्यवस्थित होती जा रही है कि त्वचा की ताजगी एवं चेहरे की खूबसूरती कहीं खोने लगी है। ऐसे में यदि आप हर्बल बाथ अर्थात शाही स्नान करें तो आप को अद्भुत तरो-ताजगी तो महसूस होगी ही, साथ ही बेमिसाल खूबसूरती भी मिलेगी।

क्लियोपेट्रा बॉडी पॉलिशिंग

इतिहास की सब से खूबसूरत महिलाओं में शुमार मिस्त्र की महारानी क्लियोपेट्रा हमेशा खूबसूरत बने रहने के लिए दूध से स्नान किया करती थी। हालांकि यहां क्लियोपेट्रो बॉडी मसाज का अर्थ बॉडी पॉलीशिंग से है, जिस में दूध का भी इस्तेमाल किया जाता है। इस में अनेक प्राकृतिक एवं हर्बल तत्वों को मिश्रित कर मलमल के कपड़े की एक पोटली तैयार की जाती है, फिर उसे गुनगुने गाढ़े दूध में डिप कर के बॉडी मसाज दी जाती है। इस प्रकार की मसाज से बॉडी की डैड स्किन निकल जाती है, टैनिंग रिमूव हो जाती है तथा त्वचा में **कोमलता एवं निखार आता है।**

रॉयल थाई मसाज रॉयल थाई मसाज तेलों के बगैर होने वाला ड्राई मसाज है। इस मसाज में हथेली, कुहनी और पैर से दाब लगाते हैं। रॉयल थाई मसाज में हर्बल चीजों की पोटली से मालिश की जाती है। यदि किसी को तेल से एलर्जी हो तो वह भी इस ड्राई मसाज का लाभ उठा सकता है।

हर्बल मिल्क बाथ बॉडी मसाज कराने के बाद मिल्क बाथ लेना भी जरूरी है। यह बाथ भी शारीरिक थकान, दर्द एवं टैनिंग तो रिमूव करेगा ही, साथ ही पूरे शरीर की त्वचा भी निखर जाएगी। यह ठंडक का भी एहसास कराता है।

4 लीटर दूध में चुटकी भर पिसी कच्ची हल्दी, 2 छोटे चम्मच मुलैठी पाऊडर, थोड़ा-सा अमलतास, आधा छोटा चम्मच सल्फर,आधा चम्मच सरेवा, थोड़ी गुलाब की पंखुडियां, 2 चम्मच गुलाब जल एवं 1 चम्मच लाल चंदन, इन सब को दूध में डाल कर तब तक उबालें, जब तक कि दूध दो-अढ़ाई लीटर न रह जाए। अब इस मिश्रण को लोटे में डाल कर फ्रैश गुलाब की पंखुडियां मिला कर बादाम ऑयल शरीर पर लगाने के बाद धार बनाती हुई डालती जाएं और दूसरे हाथ से मसाज भी देती जाएं।

रवीना टंडन की बेटी को नहीं पहचान पाए संजय दत्त, पूछा- कौन

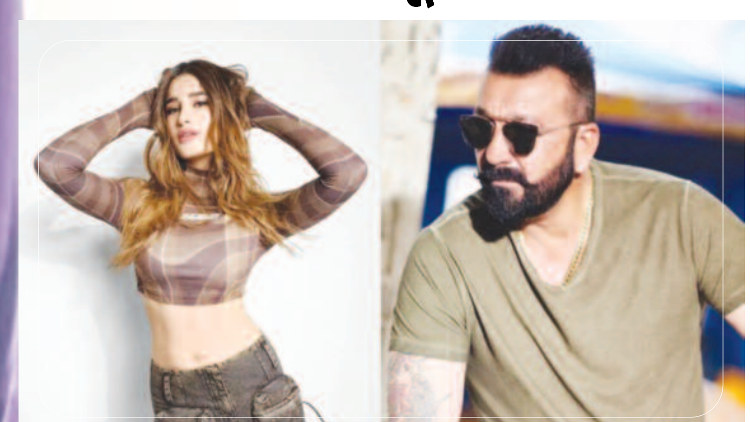

पिछले साल से ही बॉलीवुड की फेमस एक्ट्रेस रवीना टंडन की बेटी राशा लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गई है. इस साल की शुरुआत में एक्ट्रेस की डेब्यू फिल्म रिलीज हुई, हालांकि फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर कमाल तो नहीं किया, लेकिन राशा की फैन फॉलोइंग जरूर बढ़ गई. काफी कम वक्त में राशा इंडस्ट्री का जाना माना नाम बन गई हैं. लेकिन, हाल ही में संजय दत्त उन्हें पहचान नहीं पाए हैं.संजय दत्त ने रवीना टंडन के साथ कई फिल्मों में काम किया है, दोनों ने साथ में आखिरी फिल्म घुड़चढ़ी की थी. हालांकि, राशा का नाम न पहचान पाने की वजह से एक्टर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा वायरल हो रहा है. दरअसल, हाल ही में संजय दत्तअपनी पत्नी मान्यता के साथ एक रेस्टोरेंट से निकलते स्पॉट किए गए. इस दौरान उनको कैमरे में कैद करने के लिए पैपराजी वहां आ गए.

घर जाने की दी थी सलाह

हालांकि, बारिश के मौसम में इस तरह से उन्हें देखकर एक्टर ने उन्हें घर जाने को कहा. ऐसे में उन्होंने बताया कि वो राशा थडानी का इंतजार कर रहे हैं. इस पर एक्टर ने हैरान करने वाला रिएक्शन दिया. उन्होंने पूछा कौन राशा, तब पैपराजी ने बताया कि रवीना टंडन की बेटी. दरअसल, कार में बैठते हुए एक्टर ने पैपराजी से कहा, जा ना रे घर जाओ, बारिश हो रही है. इस पर फोटोग्राफर ने बताया कि वो कपल के ही लिए खड़े थे.

दो बार पूछ लिया था नाम

बाद में उन्होंने बताया कि अभी वो एक और सेलिब्रिटी का इंतजार कर रहे हैं, फोटोग्राफर ने कहा कि नई लड़की का इंतजार कर रहे हैं. इस पर एख्टर ने सवाल किया कौन, तो उन्होंने बताया राशा, एक्टर ने नाम सुनने के बाद दोबारा से पूछा, कौन. फिर लोगों ने बताया कि राशा, रवीना टंडन की बेटी , इस पर एक्टर ने कहा कि हां, जाओ उसकी फोटो ले लो. जाते-जाते एक्टर ने उनसे खाने का पूछा और फिर कार में बैठ गए.

सुहाना रो रही है, आर्यन डरा हुआ हैज्जब आग-बबूला हुए शाहरुख खान, बोले- किसी को बख्शूंगा नहीं

शाहरुख खान की गिनती बॉलीवुड के सबसे कामयाब एक्टर्स में से एक के अलावा एक अच्छे पिता के रूप में भी होती है. शाहरुख और गौरी खान ने अपने तीनों ही बच्चों को अच्छी परवरिश दी है और तीनों ही बच्चों के साथ अभिनेता का बेहद मजबूत बॉन्ड है. जब ड्रग्स केस में आर्यन खान का नाम आया था तब शाहरुख उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे. वहीं सालों पहले एक IPL मैच में जब उनकी बेटी सुहाना के साथ दुर्व्यवहार किया गया था तब भी शाहरुख ने बेटी के लिए लड़ाई कर ली थी. वहीं 2007 में जब शाहरुख के एक बयान के बाद उनके घर पर पत्थर फेंके गए, उनके घर के बाहर हंगामा किया गया था और उनके बच्चे रोने लगे थे तब शाहरुख ने कहा था कि मैं होता तो किसी को छोड़ता नहीं.

साल 2007 में शाहरुख खान और सैफ अली खान ने आइफा अवॉर्ड्स की होस्टिंग की थी. तब शाहरुख ने वर्तमान सपा के दिग्गज और दिवंगत नेता अमर सिंह पर विवादित टिप्पणी की थी. शाहरुख ने कहा था कि उनकी आंखों में दरिंदगी नजर आती है. शाहरुख को ये बयान महंगा पड़ गया था. भारी संख्या में अमर सिंह के समर्थक शाहरुख के घर के बाहर प्रदर्शन करने चले गए थे.

'सुहाना रो रही है, आर्यन डरा हुआ है'

प्रदर्शनकारियों ने अभिनेता के घर पर पत्थर भी फेंके थे और उनके खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की थी. तब शाहरुख और गौरी दोनों ही घर पर नहीं थे. जबकि सुहाना घर में रो रही थीं. वहीं आर्यन खान डरे हुए थे. शाहरुख को तब किसी ने कॉल करके जानकारी दी. शाहरुख किसी फिल्म की शूटिंग कर रहे थे. वो तुरंत शूटिंग छोड़कर अपने घर पहुंचे. हालांकि तब तक अमर सिंह के समर्थकों पर पुलिस कंट्रोल पा चुकी थी.

शाहरुख ने कहा था- किसी को बख्शूंगा नहीं

इस घटना के बाद शाहरुख खान ने मिड डे को दिए इंटरव्यू में कहा था, मैं शूट में बिजी था और उसे कैंसिल करके घर लौटना पड़ा. आर्यन डर में था और सुहाना रो रही थी. लोग मेरे घर के बाहर चिल्ला रहे थे, हंगामा कर रहे थे. मैं अपनी फैमिली को लेकर बहुत प्रोटेक्टिव हूं. अगर मैं पुलिस के आने से पहले आ जाता तो उन लगों को बख्शा नहीं होता.

सलमान खान के 5 चेले, बॉलीवुड में धमाकेदार एंट्री के बाद भी 3 का करियर ले रहा आखिरी सांसें

सलमान खान बॉलीवुड के सबसे बड़े सुपरस्टार माने जाते हैं. जो भी लोग फिल्मों में काम कर रहे हैं, उनका सपना होता है कि एक न एक बार छोटे से रोल में ही सलमान के साथ काम करने का मौका जरूर मिले. जहां एक तरफ कई लोग उनके साथ काम करने का सपना देखते हैं, तो वहीं कुछ ऐसे भी कलाकार है, जो सलमान के न सिर्फ करीब हैं बल्कि कुछ को सलमान ने ही लॉन्च किया है.आज हम आपको 5 ऐसे एक्टर्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके लिए अगर हम कहें कि सलमान और उन एक्टर्स के बीच गुरु-चेले का रिश्ता है, तो ऐसा कहना गलत नहीं होगा. 5 में से 3 एक्टर्स ऐसे भी हैं, धमाकेदार एंट्री के बाद भी जिनकी नैया डूबती नजर आ रही है.

वरुण धवन

शुरुआत करते हैं वरुण धवन से, जिनके साथ सलमान की काफी अच्छी बॉन्डिंग है. साल 2017 में जब वरुण ने सलमान की फिल्म 'जुड़वा' के सीक्वल में काम किया, तो सलमान ने उस फिल्म में कैमियो किया था. पिछले साल वरुण की 'बेबी जॉन' के नाम से एक फिल्म आई थी. सलमान ने उस फिल्म में भी कैमियो किया था. खास बात ये थी कि उसके लिए भाईजान ने फीस भी नहीं ली थी.

आयुष शर्मा

दूसरा नाम सलमान खान के जीजा आयुष शर्मा का भी है. आयुष ने सलमान की छोटी बहन अर्पिता से साल 2014 में शादी की थी. आयुष को भी सलमान ने ही फिल्म 'लवयात्री' से लॉन्च किया था. सलनान की फिल्म से डेब्यू करने के बाद भी उनका करियर कुछ खास नहीं चल पाया और वो अब तक खुद को इंडस्ट्री में स्थापित नहीं कर पाए हैं.

जहीर इकबाल

इस लिस्ट में एक नाम जहीर इकबाल भी है, जो सलमान के दोस्त इकबाल रतनसी के बेटे हैं. बचपन से ही जहीर सलमान के क्लोज रहे हैं. उन्हें भी सलमान ने ही लॉन्च किया था. उन्होंने साल 2019 में 'नोटबुक' के नाम से बॉलीवुड में एंट्री की थी, जिसे सलमान ने प्रोड्यूस किया था. आयुष की तरह सलमान का करियर भी आखिरी सांसें ले रहा है.

सूरज पंचोली

लिस्ट में एक नाम सलमान के दोस्त और एक्टर आदित्य पंचोली के बेटे सूरज पंचोली का है. सूरज हाल ही में 'केसरी वीर' नाम की एक फिल्म लेकर आए हैं, जो बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा पा रही है और फ्लॉप की ओर बढ़ रही है. सूरज की डेब्यू फिल्म 'हीरो' को भी सलमान ने ही प्रोड्यूस किया था.

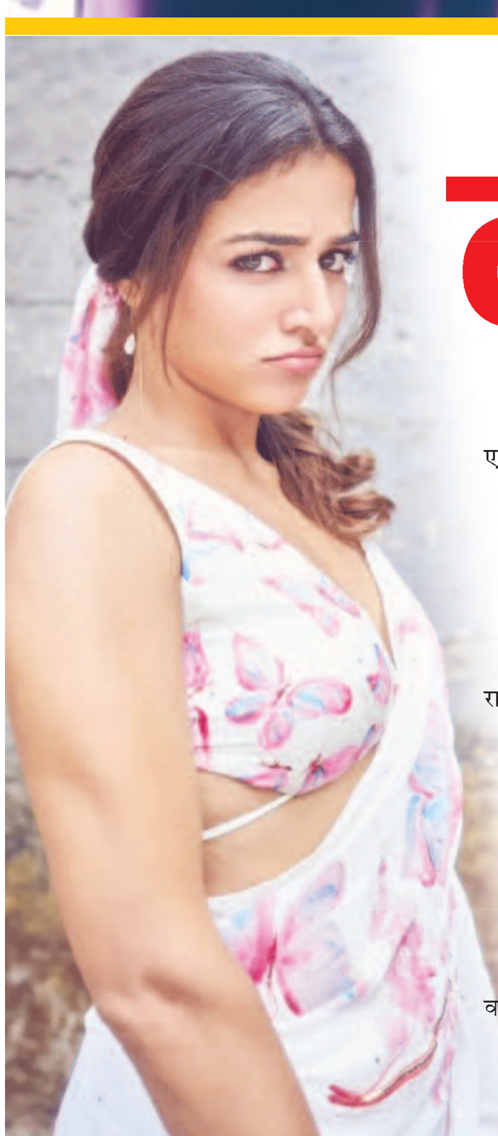

6 साल पहले एक्टिंग छोड़ने वाली थीं

वामिका गब्बी

लंदन ट्रिप के लालच में रणवीर सिंह की फिल्म के लिए कर दी हां

एक्ट्रेस वामिका गब्बी इन दिनों अपनी हालिया रिलीज़ फिल्म 'भूल चूक माफ' की वजह से सुर्खियों में हैं. फिल्म बॉक्स ऑफिस पर इसी हफ्ते आई है और ठीक-ठाक बिज़नेस भी कर रही है. इसमें उनके साथ राजकुमार राव लीड रोल में नज़र आ रहे हैं. फिल्म की रिलीज के बाद से लगातार वामिका इंटरव्यूज़ दे रही हैं. अब उन्होंने एक लेटेस्ट इंटरव्यू में बताया है कि साल 2019 में एक दौर ऐसा आया था, जब वो एक्टिंग की दुनिया को छोड़ने का मन बना चुकी थीं. हालांकि फिर कुछ ऐसा हुआ कि उन्होंने इरादा बदल लिया.

राज कुमार राव और निर्देशक करण शर्मा के साथ वामिका गब्बी ने सिद्धार्थ कन्नन को इंटरव्यू दिया है. इसमें सभी ने खूब बातें की. इस दौरान जब वामिका से सवाल हुआ कि क्या कभी उन्हें लगा कि अब बस? इस पर वामिका ने जवाब दिया, 2019 में मैं कुछ फिल्में कर रहा थी और मुझे मजा नहीं आ रहा था. मैं कुछ सीख नहीं रही थी. मैं जो कर रही थी उस वक्त उसमें में बहुत अच्छी भी नहीं थी. एक्टिंग को मैं हल्के में लेती थी.

वामिका ने कहा कि 2019 के बाद उन्हें पता चला कि एक्टिंग क्या होती है. उन्होंने कहा, कितना बड़ा समंदर है ये. इसमें तो सीखने को भी बहुत कुछ है. हर किरदार एक नया शख्स है, जिसे आपको समझना होता है. हमें अपने पार्टनर-दोस्तों को समझने में उम्र लग जाती हैं और आपको कुछ वक्त मिलता है किरदार को समझने में. तब मुझे ये बहुत मजेदार लगने लगा, जब मुझे इस क्राफ्ट की गहराई का पता लगा.

जब एक्टिंग छोड़ने वाली थीं वामिका

वामिका ने कहा कि 2019 में मैं ये सब छोड़ना चाहती थी और कुछ और करना चाहती थी. क्योंकि मुझे महसूस हो रहा था कि मैं ये सब करके खुश नही हूं. उन्होंने कहा, मेरे पिता हमेशा कहते हैं कि वही काम करना जिसमें खुशी मिले. अगर नहीं मिल रहा तो मत करना. उस वक्त मैं खुश नहीं थी, मुझे लगा कि बस. उस वक्त कपिल देव की फिल्म 83 ऑफर हुई मुझे. तो वो मैंने हां कर दी, उससे पहले मैंने कुछ भी, छोटे पार्ट्स के लिए हां नहीं कर रही थी.

लंदन ट्रिप का लालच

वामिका ने कहा कि मुझे लगा कि ठीक है. लंदन के तीन-चार ट्रिप हैं. मैं कभी लंदन गई नहीं हूं, मजा आ जाएगा. और वहां जाकर क्या पता मुझे कुछ ऐसा पता चल जाए कि हां मुझे जिंदगी में ये करना है. इसलिए मैंने उस फिल्म के लिए हां कर दी. उन्होंने कहा, उसी दौरान जब मैंने सोचा कि करना नहीं है. तो अलग अलग चीज़ें होनी शुरू हो गईं. क्योंकि मैं बहत रिलैक्स हो गई थी. मुझे समझ आया कि लाइफ में मकसद होना जरूरी है, लेकिन आपकी लाइफ में इस वक्त जो है उसके साथ जुड़े रहकर, और कबूल कर के जीना उससे भी ज्यादा जरूरी है. इसी तरह आप सही फैसले ले सकते हैं. अगर स्ट्रेस में होंगे तो सही फैसले नहीं लेंगे.